

ગુજરાત વિદ્યાપીઠ ગ્રંથાલય

[ગુજગતી કંઢ્રીરાઝિટ વિભાગ ને]

અનુક્રમાંક ૭૮૩૨ વાર્ષિક

પુસ્તકનું નામ રૈબેન ંડુનિ

વિષય ૫૩૪:૪૪૭

श्री जैन स्तुति.

मुधारो करी लखनार खंभात संप्रदायना
मुनिश्री छगनलालजी महाराज.
मु. खंभात.

छपावी प्रसिद्ध करनार,
त्रीभोवनदास रुगनाथदास शाह.
आकाशेठना कुवानी पोळ-अमदावाद.

(आवृत्ति ६ हो.)
सत्यविजय प्रिन्टिंग प्रेसमां-सांकलचंद
हरिलाळे छाप्पुं-अमदावाद.

संवत् १९७४-सने १९१८-प्रत २०००
किम्मत. ०-८-०

૭૩૨

આ પુસ્તકમાં અનુપૂર્વી, છંદસંગ્રહ, સજ્જાયાસંગ્રહ,
સ્તોત્રસંગ્રહ, પ્રદેશી રાજાના પ્રશ્નોત્તર, મૂરિકં-
તાનું કેર દર્શક ચરિત્ર અધ્યયનસંગ્રહ,
તથા નિત્યનિયમાદિ પ્રકરણનો
સમાવેશ થાય છે.

સર્વ હક પ્રસિદ્ધ કર્તાએ સ્વાધિન રાખ્યા છે.

પ્રસ્તાવના.



સર્વે સુદ્ધ જૈન ધર્માભીલાષીઓને સવિન-
ય નીંવેદન કરવાનું કે, આ પુસ્તકનો ગુજરાતી
તેમજ દેવનાગરી લિપીમાં પાંચ આવૃત્તિ છપાઈ
બહાર પડેલ છે, અને તે દરેક જૈનબંધુને અવશ્ય
ઉપયોગી અને વાંચવા લાયક છે.

અમે દરેક આવૃત્તિમાં સુધારો વધારો
કરતાજ આવ્યા છીએ. પરન્તુ આ આવૃત્તિમાં
વાંચકવર્ગની સુગમતા સારુ, છંદ સંગ્રહાદિક
પાંચ વિભાગ પાઢવામાં આવ્યા છે. તેમજ અ-
નુક્રમણિકા પણ કરેલી છે, જેથી કોઈ પણ છંદ
કે સજ્ઞાય વિગેરે અનુક્રમણિકામાં જોવાથી
તરતજ દરેક વિષય સહેલાઈથી મળજાશે.

સંસ્કૃતમાં ભક્તિામર-સ્તોત્ર, અન્ને કિંકર્પૂર

स्तोत्र भावार्थ सहित तेमज दशवैकालीकना
 चार अध्ययन, नित्य निदमादि प्रकरण, तेमज
 आ छट्टी आवृत्तिमां प्रदेशी राजानां प्रश्नोत्तर,
 सूरिकंतानु केर दर्शक चरित्र, राणीनो कपट-
 रूपी विलाप, नवीन दाखल करेल छे, तेथी
 पुस्तकनुं कद २२४ पृष्ठनुं थयुं छे, अने पुंठुं
 पाकुं सुशोभीत, उत्तम कागळ, सुंदर छपाइ
 साथे तैयार करवामां, हालना बारीक बखतमां
 कागळ बिगेरे तमाम चीजनो भाव एकदम बंधी
 जवाथी, अमोने ज्यादे खर्च लागेल छे जेथी
 पुस्तकनी किमत आठ आना राखेल छे. पर-
 मात्मानो स्तुति करवानी कया पुरुषने इच्छा
 नही होय ? आवा अमुल्य रत्ननी अमे बंधारे
 प्रशंसा करवा मागता नथी, अमे आशा राखीए
 छीए के वांचक महाशय त्हेनी कदर समजशे.

अनुक्रमाणिका.

| नंबर. | विषय. | पृष्ठ. |
|-------|---------------------------|--------|
| १ | अनुपूर्वी | २ |
| | छंद संग्रह—प्रकरण १ लं. | |
| २ | सिद्ध प्रभुनो छंद | १२ |
| ३ | पार्श्वनाथनो छंद | १४ |
| ४ | पार्श्वनाथनो छंद | २१ |
| ५ | शांतिनाथनो छंद | २३ |
| ६ | गौत्तम स्वामिनो छंद | २७ |
| ७ | सोळ सतिनो छंद | २९ |
| ८ | चिंतामणि पार्श्वनाथनो छंद | ३२ |
| ९ | महाविर स्वामिनो छंद. | ३८ |
| १० | पांसठीया यंत्रनो छंद | ३९ |
| ११ | नवकारनो छंद | १ |

| | |
|----------------------------|----|
| १२ वीरजीन छंद | ४३ |
| १३ पार्श्वनाथनो छंद | ४५ |
| १४ शांतिनाथनो छंद | ४७ |
| १५ श्री महाविर छंद | ४८ |
| १६ चिंतामणि पार्श्व०नो छंद | ४९ |
| १७ पार्श्वनाथनो छंद | ५३ |
| १८ चोवीस तिर्थकरनुं स्तवन | ५४ |
| १९ तिर्थकरनुं स्तवन | ५७ |
| २० चोवीस तिर्थकरनुं स्तवन | ५९ |
| २१ नवकारनो छंद | ६१ |
| २२ शांतिनाथनो छंद | ६६ |
| २३ चार शरणा | ७१ |
| २४ ज्वर (ताब) नो छंद | ७३ |
| २५ श्री महाविर छंद | ७७ |
| २६ चौद स्वप्न । | ८१ |
| २७ महाविर जीने छंद | ८२ |

| | | |
|----|--------------------------------|-----|
| २८ | शांतिनाथनो छंद | ८५ |
| | सज्ज्ञाय संग्रह-प्रकरण बीजुं. | |
| २९ | दिवाळीनुं स्तवन. | ८९ |
| ३० | श्री विरनुं हालरीयुं. | ९२ |
| ३१ | श्री जीवराशीनी सज्ञाय. | ९८ |
| ३२ | महाविरनुं चोढालीयुं. | १०४ |
| ३३ | लघु साधु वंदना. | ११७ |
| ३४ | म्होटी साधु वंदना. | ११९ |
| ३५ | दया सुखनी वेलडी. | १३५ |
| | स्तोत्र संग्रह-प्रकरण त्रीजुं. | |
| ३६ | भक्तामर स्तोत्र | १३८ |
| ३७ | किंकरपुर स्तोत्र भावार्थ सहीत. | १५१ |
| ३८ | प्रदेशी राजाना प्रश्नोत्तर. | १६४ |
| ३९ | सुरिकंतानुं केर दर्शक चरित्र. | १७५ |
| ४० | राणीनो कपटरूपी विलाप. | १८३ |
| | अध्ययन संग्रह-प्रकरण चौथुं. | |

- ४१ श्री दश वैकालिकनुं १थी ४ अध्ययन १८५
 ४२ श्री महावीर स्तुति (पुछीसुणं) १९४
 ४३ प्रस्ताविक गाथाओ. २००
 ४४ पंच परमेष्ठी वंदणा. २०३
 ४५ श्री चोवीश तीर्थकरनी स्तुति. २०७
 ४६ श्री चोविश तिर्थकर देवना नाम २०९
 ४७ दररोज धारवाना १४ नियम २१०
 ४८ श्रावकना व्रण मनोर्थ. २१३

भीमसी माणेक विगेरेना छापेलां पुस्तको
 नीचेना शीरनामे मळशे.

जैन बुकसेलर.

त्रीभोवनदास रुगनाथदास शाह.

२५-९-१८ } आकाशेठनां कुवानी पोळ.
 बुधवार. } अमदावाद.

आनुपूर्व्वि.

ज्यां १ छे त्यां नमो अरिहंताणं कहेवुं.

ज्यां २ छे त्यां नमो सिद्धाणं कहेवुं.

ज्यां ३ छे त्यां नमो आयरियाणं कहेवुं.

ज्यां ४ छे त्यां नमो उवगायाणं कहेवुं.

ज्यां ५ छे त्यां नमोलोए सज्जसाहुणं कहेवुं.

चोपाइ तथा दोहरा.

आनुपूर्व्वि गणज्यो जोय, छमासी तपनुं
फल होय; संदेह नव आणो लगार, नीर्मल
मने जपो नवकार ॥ १ ॥ शुद्ध वस्त्रे धरी
वीवेक, दीन दीन प्रत्ये गणवी एक; एम
आनुपूर्व्वि जे गणे, ते पांचसे सागरना पापने
हणे ॥ २ ॥ अशुभ कर्म के हरणकुं, मंत्र ब-
ढो नवकार ॥ वाणी द्वादश अंगमें; देख
लीयो तत्व सार ॥ ३ ॥

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| ४ | ४ | २ | २ | ४ | ४ |
| २ | ४ | ४ | ४ | ४ | २ |
| २ | २ | ४ | ४ | २ | ४ |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ |
| ३ | ३ | २ | २ | ४ | ४ |
| ३ | ४ | ३ | ४ | ३ | २ |
| ४ | २ | ५ | ३ | २ | ३ |

| | | | | | |
|---|----|---|---|---|---|
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ३ | ३. | ३ | ३ | ३ | ३ |
| ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| ३ | ३. | ३ | ३ | ३ | ३ |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ୦ | ୦ | ୦ | ୦ | ୦ | ୦ |
| ୧ | ୧ | ୧ | ୧ | ୧ | ୧ |
| ୨ | ୨ | ୨ | ୨ | ୨ | ୨ |
| ୩ | ୩ | ୩ | ୩ | ୩ | ୩ |
| ୪ | ୪ | ୪ | ୪ | ୪ | ୪ |
| ୫ | ୫ | ୫ | ୫ | ୫ | ୫ |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ୦ | ୦ | ୦ | ୦ | ୦ | ୦ |
| ୧ | ୧ | ୧ | ୧ | ୧ | ୧ |
| ୨ | ୨ | ୨ | ୨ | ୨ | ୨ |
| ୩ | ୩ | ୩ | ୩ | ୩ | ୩ |
| ୪ | ୪ | ୪ | ୪ | ୪ | ୪ |
| ୫ | ୫ | ୫ | ୫ | ୫ | ୫ |

[illegible]

| | | | | | |
|----|----|----|-----|-----|-----|
| ୧ | ୨ | ୩ | ୪ | ୫ | ୬ |
| ୭ | ୮ | ୯ | ୧୦ | ୧୧ | ୧୨ |
| ୧୩ | ୧୪ | ୧୫ | ୧୬ | ୧୭ | ୧୮ |
| ୧୯ | ୨୦ | ୨୧ | ୨୨ | ୨୩ | ୨୪ |
| ୨୫ | ୨୬ | ୨୭ | ୨୮ | ୨୯ | ୩୦ |
| ୩୧ | ୩୨ | ୩୩ | ୩୪ | ୩୫ | ୩୬ |
| ୩୭ | ୩୮ | ୩୯ | ୪୦ | ୪୧ | ୪୨ |
| ୪୩ | ୪୪ | ୪୫ | ୪୬ | ୪୭ | ୪୮ |
| ୪୯ | ୫୦ | ୫୧ | ୫୨ | ୫୩ | ୫୪ |
| ୫୫ | ୫୬ | ୫୭ | ୫୮ | ୫୯ | ୬୦ |
| ୬୧ | ୬୨ | ୬୩ | ୬୪ | ୬୫ | ୬୬ |
| ୬୭ | ୬୮ | ୬୯ | ୭୦ | ୭୧ | ୭୨ |
| ୭୩ | ୭୪ | ୭୫ | ୭୬ | ୭୭ | ୭୮ |
| ୭୯ | ୮୦ | ୮୧ | ୮୨ | ୮୩ | ୮୪ |
| ୮୫ | ୮୬ | ୮୭ | ୮୮ | ୮୯ | ୯୦ |
| ୯୧ | ୯୨ | ୯୩ | ୯୪ | ୯୫ | ୯୬ |
| ୯୭ | ୯୮ | ୯୯ | ୧୦୦ | ୧୦୧ | ୧୦୨ |

[illegible]

[illegible]

छंद संग्रह.

ॐ असिआउसाय नमः

प्रथम सिद्ध परमात्मानि स्तुति.

(हरीगीत छंद.)

तुमे तरण तारण दुःख निवारण भविक
जीव आराधनं, श्री नाभीनंदन जगत वंदन
नमो सिद्ध निरंजनं ॥ १ ॥ जगत भूषण वि-
गत दुषण प्रवण प्राण निरुपकं, ध्यान रूप
अनोप उपम नमो० ॥ २ ॥ गगन मंडळ
मुक्ति पदवी सर्व उर्द्ध निवासनं, ज्ञान ज्यो-
ति अनंत राजे नमो० ॥ ३ ॥ अज्ञान नींद्रा
विगत वेदन दलित मोहनीरायुषं, नाम गोत्र

निरंतरायं नमो० ॥ ४ ॥ विकट क्रोधा
 मान योधा माया लोभ विसर्जनं, राग द्वेष
 विमर्द अंकुर नमो० ॥ ५ ॥ विमल केवल
 ज्ञान लोचन ध्यान शुक्ल समीरितं, योगी-
 ना तिगम्य रूपं नमो० ॥ ६ ॥ योग ने
 समोसरण मुद्रा परी पल्य कससनं, सर्व दीसे
 तेज रूपं नमो० ॥ ७ ॥ जगत जीनके दासं
 दासी तास आस निरासनं, चंद्रपे परमानंद
 रूपं नमो० ॥ ८ ॥ स्व समय समाकित द्रष्टी-
 जिनकी सोए योगी अयोगीकं, देखतामां
 लीन होवे नमो० ॥ ९ ॥ तिर्थ सिद्धा अ-
 तिर्थ सिद्धा भेद पंच दशादिकं, सर्व कर्म
 विमुक्त चैतन नमो० ॥ १० ॥ चंद्र सूर्य दीप
 मणीकी ज्योति येन उलंघितं, ते ज्योतिथी
 अपरम ज्योति नमो० ॥ ११ ॥ एकमांहि

अनेक राजे अनेकमांही एकीकं, एक अनेक-
 की नांही संख्या नमो० ॥ १२ ॥ अजर
 अमर अलक्ष अनंतर निराकार निरंजनं, प-
 रिब्रह्म ज्ञान अनंत दर्शन नमो० ॥ १३ ॥
 अतुल सुखकी लहेरमें प्रभु लीन रहे निरं-
 तरं, धर्म ध्यानथी सिद्ध दर्शन नमो० ॥ १४ ॥
 ध्यान धुप मनः पुष्प पंचेद्रीय हुताशनं, क्षमा
 जाप संतोष पुजा पुजो देव निरंजनं० ॥ १५ ॥
 तुम्हे मुक्ति दाता कर्म घाता दीन जाणी दया
 करो, सिद्धारथ नंदन जगत वंदन, महावीर
 जीनेश्वरं ॥ १६ ॥ इति ॥

श्री पार्श्वनाथ स्वामीनो छंद.

[तोटक वृत्तनी देशीमां]

जय जय जगन्नाथक पार्श्वजिनं, प्रणता

खिल मानव देवगणं ॥ जीन शासन मंडन
 स्वांमी जयो, तुम दरीशन देखी आनंद भयो
 ॥ १ ॥ अश्वसेन कुलांबर भानुनिभं नव
 हस्त शरीर हरित प्रतिभं, धरणेंद्र सुसेवित
 पाद युगं, भर भासुर कांती सदा सुभगं
 ॥ २ ॥ निज रूप विनिर्जित रंभ पति, व-
 दनो श्रुती, शारद शोमतति ॥ नयनांबुजं
 दीप्त विशाळतरा, तिलकुसुम सन्निभ नासा
 प्रवरा ॥ ३ ॥ रसनामृत कंद समान सदा,
 दशनावलि अनार कलि सुखदा ॥ अधरा
 रुण विद्रुम रंग घनं, जय पुरुसादाणी पार्श्व-
 जिनं ॥ ४ ॥ अतिचरु मुकुट मस्तक दीपे,
 काने कुंडळ रवीशशि जीपे ॥ तुज महिमा
 महिमंडळ गाजे, नित पंच शब्द बाजा बाजे
 ॥ ५ ॥ सुरकिन्नर विद्याधर आवे, नर नारी

तोरा गुण गावे ॥ तुज सेवे चोसठ इंद्र सदा,
 तुज नामे नावे कष्ट कदा ॥ ६ ॥ जे सेवे
 तुजने भ्राव घणे, नव निधी थाय घर तेह
 तणे ॥ अडवडीआ तुं आधार कळो सम-
 रथ साहिव में आज लहो ॥ ७ ॥ दुखि-
 याने सुखदायक तुं दाखे, अशरणने शरणे
 तुं राखे ॥ तुज नामे संकट वीकट टळे, वी-
 छडीयां व्हालां आवी मळे ॥ ८ ॥ नटविट लंपट
 दुरे नासे, तुज नामे चोर चरड त्रासे ॥ रण
 राउल जय तुज नाम थकी, सगळे आगण
 तुज सेव थकी ॥ ९ ॥ यक्ष राक्षस किन्नर
 सवी उरगा, करी केसरि दावानळ विहगा ॥
 वधबंधन भय सगळा जावे, जे एक मने तु-
 जने ध्यावे ॥ १० ॥ भुत प्रेत पिशाच छली
 न शके, जगदीश दूवा भिद्य जाप थके ॥

महोटा जोटींग रहे दुरे, दैत्यादिकना तुं मद
 चुरे ॥ ११ ॥ डायणि सायणि जाय हटकी,
 भगवंत थाय तुज भजन थकी ॥ कपटी तुज
 नाम लियां कंपे, दुरजन मुखंथी जीजी जंपे
 ॥ १२ ॥ मानी मच्छराळा मुह मोडे, ते पण
 आगळथी करजोडे ॥ दुरं मुख दुष्टादिक
 तुंहि दमे, तुज नामे म्होटा मलेच्छ नमे ॥
 १३ ॥ तुज नामे माने नृप सबळा, तुज जश
 उज्जळ जेम चंद्रकळा ॥ तुज नामे पामे रुद्धि
 घणी, जय जय जगदीश्वर त्रिजगधणी ॥ १४ ॥
 चिंतामणी काम सवी पामे, हयगय रथ पा-
 यक तुज नामे ॥ जनपद ठकुराइ तुं आपे,
 दुर्जन जननां दारिद्र कापे ॥ १५ ॥ निर्ध-
 नने तुं धनवंत करे, तूठयो कोठार भंडार
 भरे ॥ घर पुत्र कलत्र पणिवार घणो, ते सह

महिमा तुज नाम तणो ॥ १६ ॥ मणी मा-
 णेक मोंती रत्न जडयां, सोवन भुषण बहु
 सुघड घड्यां ॥ बळी पहेरण नवरंग वेष
 घणां, तुम नामे नवि रहे कांड मणा ॥ १७ ॥
 बैरी विरुआ नवि ताकि शके, बळी चोर
 जुगल मनथी चमके ॥ छळ छिद्र कदा के-
 हनो न लगे, जीनराज सदा तुज ज्योति
 जगे ॥ १८ ॥ ठग ठाकुर सवि थर हर
 कंपे, पाखंडी पण को नवि फरके ॥ लुंटारा-
 दिक सहु नासी जाये, मारग तुज जपतां
 जय थाये ॥ १९ ॥ जड मुख जे मति हिन
 बळी अज्ञान तिमिर तस जाय टळी ॥ तुज
 समरणथी डाह्या थाए, पंडित पद पामी पू-
 जाए ॥ २० ॥ खस खांसी खयन पीडा
 नासे, दुरबळ मुख दीनप्रणुं त्रासे ॥ गड

मुंबड कुष्ट जिके सबळा, तुज जापे रोग समे
 सघळा ॥ २१ ॥ गहिला गुंगा बहिराय
 जिके, तुज ध्याने गत दुःख थाय तिके ॥
 तनु कांति कळा सुविशेष वधे; तुज समरण
 शुं नवनिधि सधे ॥ २२ ॥ करि केसरी
 अहिरण बंध सया, जळ जलण जळोदर अष्ट
 भया ॥ रांगण पमुहा सवी जाय टंळी, तुज
 नामे पामे रंगरळी ॥ २३ ॥ ॐ -ह्रीं अर्ह श्री
 पार्श्वनमो, नमिउण जपंता दुष्ट दमो ॥ चिं-
 तामणी मंत्र जिके ध्याये, तिणघर दिन दिन
 दौलत थाये ॥ २४ ॥ त्रीकरण शुद्धे जे
 आराधे, तस जस कीर्ति जगमां वाधे ॥ वळी
 कामीत काम सवे साधे, समीहीत चिंतामणि
 तुज लाधे ॥ २५ ॥ मद मच्छर मनथी दूर
 तजे, भगवंत भलीपरे जेह भजे ॥ तस घर

कमळा कीलोल करे, बळि राज्य रमणि बहु
 लीलवरे ॥ २६ ॥ भय वारक.तारक तुं
 त्राता, सज्जन मन गति मतिनो दाता ॥
 मात तात सहोदर तुं स्वामी, शीव दायक
 नायक हित कामी ॥ २७ ॥ करूणाकर ठा-
 कुर तुं म्हारो, निशिवासर नाम जपु तहारो ॥
 सेवक शुं परम कृपा करज्यो, बालेशर वं-
 छित फळ देज्यो ॥ २८ ॥ जीनराज सदा
 तुं जयकारी, तुज सुर्ति अति मोहनगारी ॥
 मुगत मेहेल मांहि तुंही बीराजे, त्रिभुवन ठकु-
 राइ तुज छाजे ॥ २९ ॥ इम भाव भल्ले
 जीनवर गायो; वामा सुत देखी बहु सुख
 पायो ॥ रवि शशि मुनिसंवच्छर रंगे, जय
 देव सुरमा सुख संगे ॥ ३० ॥ जय पुरुसा-
 दाणी पार्श्व प्रभो, सकळार्थ समिहित देहि

विभो ॥ बुध हर्ष रुची विजयाय मुदा, तव
लब्धी रुचि सुख थाय सदा ॥ ३१ ॥

कळश (वसंततिलका वृत्तमः)

इत्थं स्तुतः सकळ कामित सिद्धिदाता,
यक्षाधिराज नत पार्श्वप्रभोधिराज ॥ स्वस्ति
श्री हर्ष रुचि पंकज सुप्रसादात, शिष्येण
लब्ध रुचीने तीमुदा प्रसन्नः ॥ १ ॥

अथ श्री पार्श्वनाथ स्वामीनो छंद.

आपण घर बेठा लील करो, निज पुत्र
कलत्र शुं प्रेम धरो ॥ तुमे देश देशांतर कांड
दोढो, नित्यपास जपो श्री जीन रुढो ॥ १ ॥
मनवंछित सघळां काज सरे, शीर उपर

छत्र चामर धरे, कलमल आगळ .वाळे
 घोडो ॥ नित्य० ॥ २ ॥ भूतं प्रेत पिशाच
 वर्ळी, सायणि ने डायणी जाय टळी ॥ छळ
 छिद्र न कोइ लागे जुडो ॥ नित्य० ॥ ३ ॥
 एकांतर ताव सियोदाह, औषध विण जाय
 क्षण मांह ॥ नवि दुःखे माथुं पग गुडो ॥
 नित्य० ॥ ४ ॥ कंठमाळ गड गुंबड सबळा,
 तस उदर रोग टळे सघळा ॥ पीडा न करे
 फिन गळ फोडो ॥ नित्य० ॥ ५ ॥ जागतो
 तिर्थकर पास बहु, एम जाणे सघळो जगत
 सहु ॥ ततक्षण अशुभ कर्म तोडो ॥ नित्य०
 ॥ ६ ॥ पास वाणारशिपुरी नगरी, तिहां
 उदयो जिनवर उदय करी ॥ समय सुंदर
 कहे करजोडो ॥ नित्य० ॥ ७ ॥

अथ. श्री शांतिनाथ स्वामीनी छंद.

शारद मांय नमुं शिरनामी, हुं-गुण
 गाउं त्रिभुवन के स्वामी ॥ शांति शांति
 जपे सब कोइ, ते घेर शांति सदा सुख होइ
 ॥ १ ॥ शांति जपी जे कीजे काम, सोही
 काम होवे अभिराम ॥ शांति जपी परदेश
 सीधावे, ते कुशळ कमळा लेइ आवे ॥ २ ॥
 गर्भ थकी प्रभु मारि नीवारी, शांतिजी नाम
 दियो हितकारी ॥ जे नर शांती तणा गुण
 गावे, ऋद्धि अर्चिती ते नर पावे ॥ ३ ॥
 जे नरकुं प्रभु शांति सहाइ, ते नरकुं क्या
 आरती नाही ॥ जो कछु बंछे सोही पुरे,
 दुःख दारिद्र मिथ्या मति चुरे ॥ ४ ॥ अ-
 लख निरंजन ज्योत प्रकाश, घट घट अं-

तर के प्रभु वासी ॥ स्वामी स्वरूप कह्युं नवि
 जाय, कहेतां मुज मन अचरीज थाय ॥ ५ ॥
 डार दीये सबही हथियारा, जीत्या मोह
 तणा दळ सारा ॥ नारी तजी शिवशुं रंग
 राचो, राज तज्यो पण साहिब साचो ॥ ६ ॥
 महा बळवंत कहीजे देवा, कायर कुंथु एक
 हणेवा ॥ रुद्धि सबळ प्रभु पास लहीजे,
 भिक्षा आहारी नाम कहीजे ॥ ७ ॥ निदक
 पुजककुं सम भायक, पण सेवककुं हे सुख-
 दायक ॥ तजी परिग्रह हुवा जगनायक, नाम
 अतिथि सर्वे सिद्धि लायक ॥ ८ ॥ शत्रु
 मित्र सम चित्त गणीजे, नाम देव अरिहंत
 भणीजे ॥ सकळ जीव हितवंत कहीजे, सेव-
 क जाणी माहापद दीजे ॥ ९ ॥ सायर
 जेसा होत गंभिर, दुष्ण एक न माहे श-

सीसा, मैरु अर्चळ जिम अंतरें जामी, पण न
 रहे प्रभु एकण ठामी ॥ १० ॥ लोक कहे
 जिनजी सब देखे, पण सुपनांतर कबहु न
 पेखे ॥ रीस विना बाबाश परीसा, सेना जीती
 ते जगदीशा ॥ ११ ॥ मान विना जग आण
 मनाइ, माया विना शिव शुं लय लाइ, लोभ
 विना गुण राशि ग्रहिजे, भिक्षु भावे त्रिगडो
 सेविजे ॥ १२ ॥ निर्ग्रथपणे शिर छत्र
 धरावे, नाम यति पण चमर ढळावे ॥ अभ-
 यदान दाता मुख कारण, आगळ चक्र चाले
 अरिदारण ॥ १३ ॥ श्री जिनराज दयाळ
 भणीजे, कर्म सर्वेको मूळ खणीजे ॥
 चउविह संघह तिरथ थापे, लच्छी घणी
 देखे नवि, आपे ॥ १४ ॥ विनयवंत भमवंत
 कहावे, नांही कीसीकुं शीक्ष नमावे ॥ अ-

कंचनको बीरुद धरावे, पण सोवन पद पं-
 कज ठावे ॥ १५ ॥ राग नाहि पण सेवक
 तारे; द्वेष नही निगुणा संग वारे ॥ तजी
 आरंभ निज आत्म ध्यावे, शिव रमणीको
 साथ चलावे ॥ १६ ॥ तेरो महिमा अद्भुत
 कहीए, तेरा गुणको पार न लहिए ॥ तुं
 प्रभु समरथ साहेब मेरा, हुं मन मोहन से-
 वक तेरा ॥ १७ ॥ तुंरे त्रिलोक तणो प्रति-
 पाळ; हुंरे अनाथ ने तुंरे दयाळ ॥ तुं शर-
 णागत राखत धीरा, तुं प्रभु तारक छे वड
 बीरा ॥ १८ ॥ तुंही समो वड भागज पायो,
 तो मेरो काज चढयोरे सवायो ॥ करजोडी
 प्रभु वीनवुं तमशुं, करो कृपा जिनवरजी अ-
 मशुं ॥ १९ ॥ जनम मरणना भय निवारो,
 भव सागरथी पार उतारो ॥ श्री हत्थीणा-

पुर मंडळ सोहे, त्यां श्री शांति सदा मन
मोहे ॥ २० ॥ पद्म सागर गुरुराय पसाया,
श्री गुण सागर कहे मन माया ॥ जे नर
नारी एक चिंत गावे, ते मनवांछित निश्च
पावे ॥ २१ ॥ इति ॥

अथ श्री गौतम स्वामीनो वृद्ध.

वीरजिणेश्वर केरो शिष्य, गौतम नाम
जपो निशदिश ॥ जो कीजे गौतमनुं ध्यान,
तो घर विलशे नवे निधान ॥ १ ॥ गौतम
नामे गिरिवर चडे, मनवांछित हेला संपडे,
गौतम नामे नावे रोग, गौतम नामे सर्व
संजोग ॥ २ ॥ जे बैरी बीरुआ वंकडा,
तस नामे नावे हुंकडा ॥ भूत प्रेत नवि मंडे

प्राण, ते गौतमना करुं बरवाण ॥ ३ ॥ गौ-
 तम नामे निर्मळकाय, गौतम नामे बाधे
 आय ॥ गौतम जिनशासन शरणगार, गौतम
 नामे जय जयकार ॥ ४ ॥ शाळ दाळ सु-
 रहा घृत गोळ, मनवंछित कापड तंबोळ ॥
 घर सु धरणी निर्मळ चित्त, गौतम नामे पुत्र
 विनीत ॥ ५ ॥ गौतम उग्यो अविचळ भाण,
 गौतम नाम जपो जग जाण ॥ म्होटा मंदिर
 मेरु समान, गौतम नामे मफळ बीहाण ॥
 ६ ॥ घर मयंगळ घोडानी जोड, वारु पहींचे
 वंछित कोड ॥ महियळ माने म्होटाराय, जो
 झुठे गौतमना पाय ॥ ७ ॥ गौतम प्रणम्या
 पातीक टळे, उत्तम नरनी संगत मळे ॥ गौ-
 तम नामे निर्मळ ज्ञान, गौतम नामे बाधे
 वान ॥ ८ ॥ पुन्यवंत अवधारो सहु, गुरु

गौतमना गुण छे बहु ॥ कहे लावण्य समय
करंजोड, गौतम तूठे संपति कोड ॥ ९ ॥

अथ श्री सोळ सतीनो छंद.

आदिनाथ आदे जिनवर बंदी, सफळ
मनोरथ कीजिए ॥ प्रभाते उठी मंगळिक
कामे, सोळ सतिना नाम लीजिए ॥ १ ॥
बाळकुमारी जगहितकारी, ब्राह्मी भरतनी
बेनडीए ॥ घट घट व्यापक अक्षर रूपे, सोळ
सतिमां जे बडीए ॥ २ ॥ बाहु बळ भगिनी
सतीय शिरोमणी, सुंदरी नाम ऋषभ सुताए ॥
अंक स्वरूपी - त्रिभुवन मांहे, जेह अनोपम
गुण जुताए ॥ ३ ॥ चंदनबाळा बाळपणेथी,

शीयळवंती शुद्ध श्राविकाए ॥ अडदना बा-
 कुळा वीर प्रतिलाभ्या, केवळ लही व्रत
 भाविकाए ॥ ४ ॥ उग्रसेन धुया धारिणी
 नंदनी, राजेमती नेम बल्लभा ए ॥ जोवन
 वेशे कामने जीत्या, संजम लइ देव दुल्लभाए
 ॥ ५ ॥ पंच भरतारी पांडव नारी, द्रुपद
 तन्नया वखाणीए ॥ एकसो आठे चोर पुराणा
 शीयळ महिमा तस जाणीये ए ॥ ६ ॥ दशरथ
 नृपनी नारी नीरुपम, कौशल्या कुळ चंद्रि-
 काए शीयळ सलूणी राम जनेता, पुन्य
 तणी प्रनाळीकाए ॥ ७ ॥ कोसंबिक ठामे
 संतानिक नामे, राज्य करे रंग राजीयो ए ॥
 तस घर धरणी मृगावती सती, सुर भुवने
 जश गाजीयो ए ॥ ८ ॥ सुळशा साची
 शीयळ न काची, राची नही विषया रसेए ॥

मुखडुं जोतां पाप पलाए, नाम लेतां मन
 उल्लसे ए ॥ ९ ॥ राम रघुवंशी तेहनी का-
 मिनी, जनकसूता सीतासतीए ॥ जग सह
 जाणे धीज करंता, अनळ शीतळ थयो शी-
 यळर्था ए ॥ १० ॥ सुरनर वंदित शीयळ
 अखंडित शीवा शिव पद गामनीए ॥ जे-
 हने नामे निर्मळ थइए, बलीहारी 'तस' ना-
 मनी ए ॥ ११ ॥ काचे तांतणे चालणी
 बांधी, कुप थकी जळ काढीयुं ए ॥ कलंक-
 उतारवा सतीय सूरभद्रा, चंपा बार उघाडीयुं
 ए ॥ १२ ॥ हस्तीनागपुरे पांडु रायनी,
 कुंता नामे कामीनीए ॥ पांडव माता दसे
 दसारनी, बहेन पतीवृता पद्मनीए ॥ १३ ॥
 शीळवती नामे शीळव्रत घारीणी, श्रीवीधे
 तहेने वंदीये ए ॥ नाम जपंता पातक जाए,

દરીસળે દુરીત નીકંદી એ ॥ ૧૪ ॥ નીષ-
 ધાનંગરી નઢહ નરીંદની, દમયંતી તસ ગે-
 હીની એ ॥ સંકટ પડતાં શીયઢજ રાખ્યું,
 ત્રીભુવન કીર્તી જેહની એ ॥ ૧૫ ॥ અનંગ
 અંજીતા જગ જન પુજીતા, પુફચુઢા ને પ્ર-
 ભાવતી એ ॥ વીશ્વ વીરૂયાતા કામીત દાતા,
 સોઢમી સંતી પદમાવતી એ ॥ ૧૬ ॥ વીરે
 ભાંચી શાસ્ત્રે સારૂ; ઉદય રતન ભાસ્ત્રે મુદા
 એ ॥ વ્હાણુ વાતાં જે નર ભણશે, તે લેશે
 સુખ સંપદા એ ॥ ૧૭ ॥ ઇતિ ॥

અથ શ્રી ચિંતામણી પાર્શ્વનાથનો છંદ.
 (દોહા.)

કલ્પવેલ ચીંતામણી, કામધેનુ ગુણ સ્વાણ ॥

अलख अगोचर अगम गती, चीदा-
 नंद भगवान ॥ १ ॥ परम ज्योती पर-
 मात्मा, नीराकार कीरतारु, नीर्भय रूप
 ज्योतीसरूप, पुरण ब्रह्म अपार ॥ २ ॥ अ-
 बीनाशी साहीब धणी, चींतामणी श्री पास ॥
 अरज करुं कर जोड के, पुरो वंछीत
 आश ॥ ३ ॥ मन चींतीत आशा फळे,
 सकल सीद्धवे काम ॥ चींतामणीको जाप
 जप, चींता हरे ए नाम ॥ ४ ॥ तुम सम मे-
 रेको नही, चींतामणी भगवान ॥ चेतनकी
 एह बीनती, दीजे अनुभव ज्ञान ॥ ५ ॥

(चोपाइ.)

प्राणत देवलोकथी आये, जन्म वणा-
 रशी नगरी पाये ॥ अश्वसेन कुळ मंडन

स्वामी, त्रीहु जगके प्रभु अंतरजामी ॥ ६ ॥
 वामा देवी माताके जाये, लंछन नाग फणी
 मणी पणि ॥ शुभ काया नव हाथ वखाणो,
 नील वरण तनु नीर्मळ जाणो ॥ ७ ॥ मा-
 नव जक्ष सेवे प्रभु पाय, पद्मावती देवी सु-
 खदाय ॥ इंद्र चंद्र पारस गुण गावे, कल्प-
 वृक्ष चींतामणी पावे ॥ ८ ॥ नीत समरो
 चींतामणी स्वामी, आशा पुरे अंतरजामी ॥
 धन धन पार्श्व पुरीसादाणी, तुम सम
 जगमे को नही नाणी ॥ ९ ॥ तुमारो नाम
 सदा सुखकारी, सुख उपजे दुःख जाय वी-
 सारी ॥ चेतनको मन तुमारे पास, मन वं-
 छीत पुरो प्रभु आश ॥ १० ॥

(दं ६)

ॐ भगवंत चींताणी, पार्श्व प्रभु जी-
 नराय ॥ नमो नमो हूँ नामसें, रोग शोग
 मीट जाय ॥ ११ ॥ वीत पीत दुरे टले,
 कफ नही आवे पाश ॥ चींताणीके नामसें
 मीटे श्वास ओर स्वास ॥ १२ ॥ प्रथम दु-
 सरो तीसरो, ताव चोथीयो जाय ॥ शुळ व-
 होतेर दूरे रहे, दादर खाज न रहाय ॥ १३ ॥
 वीस्फोटक गड गुबडां. कोठ अठारे दुर ॥
 नेत्र रोग सब परीहरे, कंठमाळ चक्रचुर ॥
 १४ ॥ चींतामणीके जापसें रोग शोग मीट
 जाय, चेतन पार्श्व नामको, समरो मन चीत
 लाय ॥ १५ ॥

(चे. इ.)

मन शुद्धे समं भगवान्, भय भंजन
 चिंतामणी ध्यान ॥ स्तुत प्रेत भय जावे दुर,
 जाप जपे सुख संपत्ति पूर ॥ १६ ॥ डाकण
 शाकण व्यंतर देव, भय नहीं लागे पारस
 सेव ॥ जलचर थलचर उरपर जीव, इनको
 भय नही समरो पीव ॥ १७ ॥ बाघ सिंह-
 को भय नहीं होय, सर्प गोह आवे नहि
 कोय ॥ वाट घाटमे रक्षा करे, चिंतामणी
 चिंता सब हरे ॥ १८ ॥ टोणां टामण जादु
 करे, तुमारो नाम लेतां सब डरे ॥ ठग फां-
 सीगर तस्कर होय, द्वेषी दुश्मन नावे
 कोय ॥ १९ ॥ भय सब भागे तमारे नाम,
 मन वंछित पुरो सब काम ॥ भय नीवारण
 पुरे आश, चेतन जप चिंतामणी पास ॥ २० ॥

(३७)

(दोहा.)

चिंतामणीके नामसें, सकल सीद्धवे
काम ॥ राज ऋद्धी रमणी मळे, सुख सं-
पत्ती बहु दाम ॥ २१ ॥ हय गव रथ पायक
मळे, लक्ष्मीको नही पारं ॥ पुत्र कलत्र मं-
गल सदा, पावे शीव दरबार ॥ २२ ॥ चे-
तन चींता हरणको, जाप जपे तिन काल ॥
कर आंबिल षट मासको, उपजे मंगल
माल ॥ २३ ॥ पारस नाम प्रभावथी, बाधे
बल बहु ज्ञान ॥ मनवांछित सुख उपजे; नित
समरो भगवान ॥ २४ ॥ संवत अठारा उ-
परे, साडत्रिशको परिमाण ॥ पोष शुक्ल
दिन पंचमी, वार शनिश्चर जाण ॥ २५ ॥
भणे गुणे जो भावशुं, सुणे सदा चित लाय ॥

चेतन संपत्ति बहु मळे, समरो मन वच
काय ॥ २६ ॥

अथ श्री महावार स्वामीनो छंदः.

श्री सिद्धारथ कुळ शणगार, त्रिशळा
देवी सुत जग आधार ॥ शोभे सुंदर सोवन
वान, शरण तमारुं श्री वर्द्धमान ॥ १ ॥
तुम नामे लहिये संपदा, तुम नामे मन वं-
छीत मुदा ॥ तुम नामे लहीये सनमान, शरण०
॥ २ ॥ दुर्जन दुष्ट वैरी वीकराळ, तुम नामे
नासे ततकाळ ॥ तुम नामे दीन दीन क-
ल्याण, शरण० ॥ ३ ॥ तुम नामे नावे आ-
पदा, भूत प्रेत व्यंतर नही कदा ॥ रोग शोग
चींता नवी जाण, शरण० ॥ ४ ॥ ग्रहादीक

પીડા નવી કરે, નામ તમારું જે અનુસરે ॥

ધર્મસીંહ ધુની ભાવ પ્રધાન, શરણ૦ ॥

૫ ॥ इति ॥

अथ श्री पांसठीया यंत्रनो छंद.

| | | | | |
|----|----|----|----|----|
| ૨૨ | ૩ | ૯ | ૧૫ | ૧૬ |
| ૧૪ | ૨૦ | ૨૧ | ૨ | ૮ |
| ૧ | ૭ | ૧૩ | ૧૯ | ૨૫ |
| ૧૮ | ૨૪ | ૫ | ૬ | ૧૨ |
| ૧૦ | ૧૧ | ૧૭ | ૨૩ | ૪ |

શ્રી નેમીશ્વર સંભવં શામ, સુવીધી ધર્મ
શાંતિ અમીરામ્ ॥ અનંત સુવ્રત નમીનાથ

सुजाण, श्री जीनवर मुज करो कल्याण
 ॥ १ ॥ अजीतनाथ चंद्र प्रभु धीर, आदीश्वर
 सुपार्श्व मंभीर ॥ वीमलनाथ वीमल जग ,
 जाण, श्री जीनवर० ॥ २ ॥ मल्लीनाथ जीन
 मंगल रूप, पचवीस घनुष सुंदर स्वरूप ॥
 श्री अरनाथ नमु वर्द्धमान, श्री जीनवर० ॥
 ३ ॥ सुमती पद्म प्रभु अवतंस, वासु पुज्य
 शीतल श्रेयांस ॥ कुंथुपार्श्व अभीनंदन भाण,
 श्री जीनवर. ॥ ४ ॥ इणीपरे जीनवर सं-
 भारीये, दुःख दारीद्र वीघ्र नीवारिये ॥ प-
 चीसे पांसठ परमाण, श्री जीनवर० ॥ ५ ॥
 इम भणतां दुःख नावे कदा, जो निज पासे
 राखो सदा ॥ घरीये पंचतणुं मन ध्यान,
 श्री जिनवर० ॥ ६ ॥ श्री जिनवर नामे वं-
 छित मळे, मनवांछित सहु आशा फळे ॥ ध-

र्मसिंह मुनि नाम निधान, श्री जिनवर०
॥ ७ ॥ इति० ॥

अथ श्री नवकारनो छंद.

सुख कारण भवियण, समरो नितं
नवकार ॥ जिनशासन आगम, चौद पुरवनो
सार ॥ १ ॥ ए मंत्रनो महीमा, कहेता न
लहुं पार ॥ सुरतरु जिम चितित, वंछित फल
दातार ॥ २ ॥ सुरदानव मानव, सेवा करे
करजोड, भुविमंडल विचरे, तारे भवीयण
कोड ॥ ३ ॥ सुरछंदे विलसे अतिशय जास
अनंत ॥ पद पहेले नमीये, अरिगंजन अरि-
हंत ॥ ४ ॥ जे पनरे भेदे, सिद्ध थया भग-
वंत ॥ पंचमि गति पहोत्या, अष्ट कुरम करी

अंत ॥ ५ ॥ कळ अकळ स्वरूपी, पंचानंतक-
 देह ॥ जिनवर पाय प्रणमं, बीजे पद वळी
 एह ॥ ६ ॥ गच्छभार धुरंधर, सुंदर शशि-
 हर शोभ ॥ करे सारण वारण, गूण छत्रीशे
 थोभ ॥ ७ ॥ श्रुत जाण शीरोमणि, सागर
 जिम गंभीर ॥ त्रिजे पद नमीये, आचारज
 गुण धीर ॥ ८ ॥ तुतधर गुण आंगर, सुत्र
 भणावे सार ॥ तप विधि संयोगे, भांखे
 अर्थ विचार ॥ ९ ॥ मुनीवर गुण जुत्ता,
 कहिये ते उबझाय ॥ पद चोथे नमीये, अह-
 निश तेहना पाय ॥ १० ॥ पंचाश्रव ठाळे,
 पाळे पंचाचार ॥ तपसी गुणधारी, वारे
 विषय विकार ॥ ११ ॥ त्रस थावर पीयर,
 लोक मांही जे साध ॥ त्रिविधे ते प्रणमं, पर-
 मारथ जिणे लाध ॥ १२ ॥ अरि करि हरि

सायणि, डायणि भूत वैताळ ॥ सवि पाप
 पणासे, वाधे मंगळ माळ ॥ १३ ॥ इण स-
 मर्या संकट, दूर टळे तत्काळ ॥ इम जंपे जिन
 प्रभ, सुरि शिष्य रसाळ ॥ १४ ॥ इति ॥

अथ श्री वीरजीन छंद.

श्री सीद्धारथ कुळ दीपकचंद, त्रीशळा
 देवी राणीनो नंद ॥ ॥ कोमळ कंचन वरण-
 शरीर, मनवंछीत पूरण महावीर ॥ १ ॥
 कृपानाथ करी करुणा घणी, मुज सामु
 जुओ शासन धणी ॥ त्रीभुवननाथ आयो अ-
 वर्तीर, मन० ॥ २ ॥ अनंत वळी तप दुकर
 कीया, सवी कर्मकुं दावानळ दीया ॥ स्वम
 दम सम धीमानने धीर, मन० ॥ ३ ॥ चु-

मालीशे चेला किया, एकज दिनमे महा-
 व्रत दीया ॥ गौतम सरीखा हुआ वजीर,
 मन० ॥ ४ ॥ समवसरणमां सुण्यो अधीकार,
 अमृत वाणीरूप दीदार ॥ दीठे हरखे हैडु
 हीर, मन० ॥ ५ ॥ एक पळ धरे जो प्र-
 भुजीनुं ध्यान. पग पग प्रगटे पुण्य नीधान ॥
 वचन मीठां जीम मीसरी खीर, मन० ॥
 ६ ॥ चेन पामे चींता चकचुर, देखी दु-
 स्मन नासे दूर ॥ दीन दीन बाधे संपत्ती
 शीर, मन० ॥ ७ ॥ तुम नामे भव सायर
 तरे, तुम नामे सवी कारज सरे ॥ ऋधी
 वृद्धी पामे हीर चीर, मन० ॥ ८ ॥ चींता-
 मणी जीम जीनवर जाप, क्रोड भवोना कापे
 पाप ॥ रोग शोग नासे पर पीड, मन०
 ॥ ९ ॥ वैशाख शुद्धि दशम दिन जाण, प्र-

भुजी पाम्या केवळ नाणें ॥ सागर जैसा
 होत गंभीर, मन० ॥ १० ॥ संवत अठार.
 तेत्रीशमें ताम, मेडत नगर किष्वांगुण ग्राम,
 षट्कायाना प्रभुजी पीर, मन० ॥ ११ ॥
 प्रभु पावापुरीमां मुगती गया, ऋषि रामचंद्र
 कहे करज्यो मया ॥ पहाँचाढो मुज भव.नळ
 तीर, मन० ॥ ११ ॥ इति ॥

पार्श्वनाथनो छंद (त्रोटक वृत्तमः)

प्रणमामी सदा प्रभु प्राश्वजीनं, जिन ना-
 यक दायक सुखधनं ॥ धनचारु मनोहर देह-
 धरं, धरणीपति नित्य सुसेव करं ॥ १ ॥ क-
 रुणारस संजित भव्यफणी, फणी सप्त सुशो-
 भित मौलिमणि ॥ मणिकंचन रूप त्रिकोट

घटं, घटिता सुर किन्नर पार्श्वतटं ॥ २ ॥
 तटिनी पती घोष गंभीर स्वरं, शरणां गत
 विश्व अशोषनरं ॥ नरनारी नमस्कृत नित्य
 मुदा, पदमावति गावती गीत सदा ॥ ३ ॥
 सततेंद्रिय गोप यथा कमठं, कमठासुर वारुण
 मुक्तहठं ॥ हठहेलितकर्म कृतांत बलं,
 बलधाम दरंदल पंकजलं ॥ ४ ॥ जल जद्वय
 पत्र प्रभानयनं, नयनं दित भव्यतरी शमनं,
 यनमथ मही रुह बन्धिसमं, समता गुण रत्न-
 मयं परमं ॥ ५ ॥ परभार्थ विचार सदा
 कुशलं, कुशलं कुरु मे जिन नाथ अलं ॥ अ-
 लिनी नलिनी नल नील तनं, तनुता प्रभु
 पार्श्वजिनं शुधनं ॥ ६ ॥

(कळश द्रुतविलंबित्तम.)

सुधन धान्य व किरुणापरं, परमसिद्धि
करं दददा धरं ॥ अरतरं अश्वसेन कुळोद
भवं, भवभ्राता प्रभु पार्श्वजिनंशिवं ॥७॥ इति.

शांतिनाथनो छंद.

सदा शांतीजी आश पुरो हमारी, करुं
वीनती अंग उच्छाह धारी, दयावंतनुं दुःख-
दारिद्र्य हारी, कृपावंत तुं करत कलोलकारी
॥ १ ॥ महावीपुल मतीवंत ए जीनराया,
खट्काय राखे सदा छत्रछाया, महामोह
मिथ्यातना मान मोडी, जीन मुक्ति पोहत्या
कर्मकंठ तोडी ॥ २ ॥ भडभुत वैताल भय

जाय दोडी, जग मांहे तुम सम नहीं कोइ
जोडी, सदा सिद्ध दाता नमं कुटील छोडी,
तुम नामे कल्याण के नि कोडी ॥ ३ ॥
तुम नामे सुर अचुर भय दुर नासे, धनधान
धोरी घर अधिक वासे; गज केसरी अनळ
दळ भय न होय ॥ अतीसे करी एहवी रीत
जाय ॥ ४ ॥ गुण ग्यान करता किम पार
लहीए, रसना करी एक लव लेश कहीए;
महा विमळ नाण चरित्र दंशी, भणे संत
गोविंद मुनीज संसी ॥ इति शांतीजीन
स्तवन ॥

महावीर छंद.

चोवीसमा महावीर, शुरवीर महाधीर,

वाणी मिठी खांड खीर सिद्धारथ नंदहे, ना-
 गिणीसि नारी जाणी, घटमां वैराग आणी
 योग लियो जग भाण, टाळया मोहकंदहे,
 चौद हजार संत तार दिया भगवंत, कर्मको
 कियो अंत, पाम्या सुख कंदहे ॥ कहे कवि
 चंद्रभाण, सुणो हो विवेकवान, महावीर
 कीया ध्यान.उपजे आणंदहे ॥

चिंतामणी छंद.

सुगुरु चिंतामणी देव सदा मुज स-
 कळ मनोरथ पुरमदा ॥ कमळागर दुर न
 होय कदा ॥ जपता प्रभु पार्श्व नाम यदा ॥
 १ ॥ जळ अनळ मतंगज भय जावे ॥ अरि
 चोर निकट पण नहीं आवे ॥ सिंह सर्प

रोग न सतावे ॥ धन्य धन्य प्रभु पार्श्व
 जीन ध्यावे ॥ २ ॥ मछ कछ मगर जळ
 मांही भमै ॥ वडवानल नीर अथाह गमै ॥
 प्रहवण बैठा नर पार पमै ॥ नित्य प्रभु पा-
 र्श्व जीनंद नमै ॥ ३ ॥ विकराळ दावानळ
 विश्व दहै ॥ ग्रह वस्ती धन ग्रास आकाश
 ग्रहै ॥ तुम नाम लिया उपशांति लहै ॥ वन
 नीर सरोवर जेम वहै ॥ ४ ॥ झरतो म-
 द लोल कलोल करे ॥ भ्रमरा गुंजावर भर
 रोस भरै ॥ करि दुष्ट भयंकर दुरि करै, श्री-
 पार्श्वनाथजीके समरै ॥ ५ ॥ छाना छळ
 छिद्र विनाय छलै ॥ यश वाश सुणी मन
 मांही जलै ॥ ते पिशुन्य पडे नित्य पाय
 तलै ॥ जपतां प्रभू वैरी जाय टीलै ॥ ६ ॥
 धन देखी निशाचर कोढ़ धसै ॥ मुझ मंदिर

पैशक देन सुखै ॥ अति उच्छव तास आ-
 वास अखै ॥ परमेश्वर पार्श्व जास पखै ॥७॥
 असराळ विदाहरण हाथ हटै, गललोल जीहां
 गज कुंभ घटै ॥ मृगराज महा-भय भ्रांति
 मिटै ॥ रसना जीन नायक जेह रटै ॥
 ८ ॥ फरतो चीहुं फेर फुंफारु फणि ॥ धरणेंद्र
 धसैं धर रीस धणी ॥ भय त्रास न व्यापे
 तेह तणी ॥ धरतां चीत पार्श्वनाथ धणी
 ॥ ९ ॥ कफ कुष्ठ जलोदर रोग कृसैं ॥ गड
 गुंवड देह अनेक ग्रसैं ॥ विन वेषज व्याधि
 सब विनसैं; वामा सुत पार्श्व जे स्तवसैं ॥
 १० ॥ धरणिंद्र धराधिप सूर ध्यायो ॥ प्रभु
 पार्श्व २ करपायो ॥ छबी रूप अनोपम जुग
 छायो ॥ जननी धन्य वामा सुत जायो
 ११ ॥ करतां जीन जाप संताप कटैं, दुख

दारिद्र दोहग सोहघटै ॥ हठ छोडी जीहां
 रिपु जोर हठैं ॥ पदमावती पार्श्व जीहां प्रगटैं
 ॥ १२ ॥ ॐ नमो पार्श्वनाथाय ॥ धरणिद्र
 पदमावती सहिताय विषहर कुल्यंग मंग-
 लाय ॥ ॐ -हौं श्रीं चिंतामणी पार्श्वनाथाय ॥
 ॥ मम मनोरथ पुरय स्वाहाः) मंत्राक्षर गाथा
 गुढ पढयो ॥ चिंतामणी जाणे हाथ चढयो
 बळी मान महातम तेज बढयो ॥ श्री पार्श्व-
 जीन स्तवन जेण पढयो ॥ १३ ॥ तिर्थपती
 पार्श्वनाथ तिलो ॥ भणतां जस वास निवास
 फळो ॥ मणी मंत्र सकोमळ होय मिलो ॥
 अमचि प्रभु पार्श्वआश फळो ॥ १४ ॥ लुंका
 गच्छ नायक लाभ लीए ॥ हित क्षेम करण
 गुरुनाम हीये ॥ दीन २ गछनायक सुख दीये
 ॥ किरति प्रभु पार्श्व सुख कीये, ॥ १५ ॥

पार्श्वनाथनो छंद.

प्रणमु पास जिणंद, दरसण द्विदे आ-
 णंद ॥ नगरी वणारसी ठाय, तीहां अश्वसेन
 राय ॥ १ ॥ वामा तस पटराणी, रूपे रंभा-
 समाणि; तसधर पास उपन, लाध्या चउद
 सुपन ॥ २.॥ पोसवदि दसमीसार, जनम्या
 पार्श्व कुमार ॥ छपन कुमारिका आवे, स्तुति
 करी गुण गावे ॥ ३ ॥ सर्वे सुरपती रंगे,
 लइ गया मेरुने संगे; इंद्र सर्वे तिहां मीली-
 या, जनम मोच्छव करी वळीया ॥ ४ ॥
 मुक्या माताजीनी पास, चिरंजीवो इम भा-
 प्य; ताते मोच्छव किधो, पार्श्व कुमार नाम
 दिधो ॥ ५ ॥ जोवन वय जंव जाणी, जोडे
 प्रभावंति राणी, परणाव्या जीनराय, सेवे

सुरनर पाय ॥ ६ ॥ भोगतणा फळ लेही,
 दान समच्छरी देही; त्रणसें नरवर साथे ॥
 संजम लीधो जगनाथे ॥ ७ ॥ तप संजम
 करमे वामी, जीनवर केवळ पामी ॥ पोत्या
 मुक्ति मोझार, जपता जयजयकार ॥ ८ ॥
 एकसो वरसनुं आय नवकर शोभे काय ॥
 त्रेवीशमा जीनराय, नामे नव निध थाय ॥
 ९ ॥ पार्श्व उपसर्ग चुरे, मन वंछीत सुख
 पुरे; सफळ फळे तस आस, जे जाणसे प्रभु
 पास ॥ १० ॥ स्तवन सिद्ध सुखकारी भ-
 णशे जे नरनारी; भोज भणे करजोडी, पामे
 कल्याणनी कोडी ॥ ११ ॥ इति संपुर्ण. ॥

चोविस तिर्थकरनुं स्तवन.

श्री रीखव अजीत संभव स्वामी, अ-

भीबंदनजी अंतरजामी, रागद्वेष दो क्षय क-
 रणा, बंदु सोळे जीन सोवन वरणा ॥ १ ॥
 सुमतीजीने सुपासो, प्रभु मुगत गया मैटया
 गर्भा वासो, दूर कीया जन्म मरणा, बंदू०
 ॥ २ ॥ शीतळ श्रेयांस जीनदोइ, प्रभुजी
 चौदे राज रहा जोइ, विमळ समत निर्मळ
 वरणा, बंदु० ॥ ३ ॥ अनंत नाथजी अ-
 नंतज्ञानी, जासु मनरीतो वात नहीं छांनी,
 धर्मजीको ध्यान रुदे धरणा, बंदु० ॥ ४ ॥
 शांतिनाथजी शाताकारी, कुंथु नाथजीरी
 जाउं हुं बलहारी, अरनाथ आतम उधरणा
 बंदु० ॥ ५ ॥ महिमा घणी मलीनाथ तणी,
 महावीरजी हूवा सासनना धणी; में झा-
 ल्यां जारां चरणा, बंदु० ॥ ६ ॥ प्रभूरे
 शरिर संपदा सुंदर सोहे, नीरखता नयन

तुरत मोहे, चतुरांरा तो चीत हरणा, वंदु०
 ॥ ७ ॥ प्रभुजीनी दीप दीप रही देही, जा-
 ने सुरनर नीरख रह्या केइ, आंख्या तो हु-
 इ जावे अमी झरणा, वंदु० ॥ ८ ॥ प्रभु
 जीरो मस्तक ले पग नखतांही, जीनरो श-
 रीर बखाण्यो सुत्रमांही, चारुही संग लेवे
 शरणां, वंदु० ॥ ९ ॥ तीन लोकरो रूप प्र-
 भूजी पायो, बीजो मावडीए बेटो एसो नहीं
 जायो, चोसठ इंद्र भेटे चरणां, वंदु० ॥ १० ॥
 एक समुचे अरज सुणजो सोळे, रुषी राय-
 चंदजी आयो आपरे ओळे, मारी आवा
 गमण दुःख दुर करणां, वंदु० ॥ ११ ॥ सं-
 वत अठारसैं त्रीसे वरसे, कीयो नागोर
 चोमासो भाव सरसे, जारो भजन कीया
 भवसागर तरणां, वंदु सोळे जीन सोवन व-
 रणां ॥ १२ ॥

तीर्थकरनुं स्तवन.

प्रह उठी प्रभाते वहुं, पदम प्रभूखीना
पायरे प्राणी; वासुपुज्यजी मारां मनमां व-
सीया, मारे कमी न रही कांयरे प्राणी, उ-
पजे आनंद आठे जीन जपंतां ॥ १ ॥ ए
दोए जीनवर. अवल वीराजे, हिंगुळ वरणां.
लालरे प्राणी; तीर्थ थापीने कर्मने कापी,
प्रभु पाप कीया प्रेमालरे प्राणी उपजे० ॥
२ ॥ शुभ भावना ए मनमारे भाव्ये, तो
आठ कर्म जाये तुटरे प्राणी; सुख संपदाने
लील विलासो, भर्या भंडार अखुटरे प्राणी,
उपजे० ॥ ३ ॥ चंद्र प्रभुजीने सुविधी जीने-
श्वर, ए दोये वर्ण सफेदरे प्राणी; मोतीयां
सरीखी जारी देहीज दीपे, गुज देखतां अ-

धिक उमेदरे प्राणी उपजे० ॥ ४ ॥ मुनी-
 सुवृत्तजी ने नेम जीणेश्वर, ए दोय शाम
 वर्ण शरीरें प्राणी; इंद्रथकी पण अधिका दीपे,
 दीठे हरखे हैडानो हीररे प्राणी ॥ उपजे०
 ॥ ५ ॥ मल्लीनाथ ने पार्श्व प्रभूजी, जाणे
 नीलाते मोरनीं पांखरे प्राणी; नीरखता तो
 नयन न ध्रापे, अमीय ठरे दोय आंखरे प्राणी॥
 उपजे० ॥ ६ ॥ रूप अनोपम अवल बीराजे,
 जाणे हीरा जडीया हेमरे प्राणी, सुरजथी
 जेम सवाया दीपे ॥ केणीमां आवे केमरे प्राणी॥
 उपजे० ॥ ७ ॥ शीवनगरी माही साहीब
 बेठा, हुं नवी जाणुं दुररे प्राणी; मुज मन-
 डामां वसीया बालेसर, हुं समरुं उगमते सू-
 ररे प्राणी, उपजे० ॥ ८ ॥ ए आठे अरि-
 हंतने आगे, हुं तो. अरज करुं करजोडरे

प्राणी, रुषी रायचंदजी कहे मारा मनना,
 पुरो सघळा कोडरे प्राणी. उपजे० ॥ ९ ॥
 संवत अठारने वर्ष छत्रीशे, नगोर शेहेर
 चौमासरे प्राणी, प्रसाद पुज्य जेमलजी केरे,
 मारे हैडे ते हरख उल्लासरे. प्राणी. उपजे
 आनंद आठे जीन० ॥ १० ॥

चोवीस तिर्थकरनुं स्तवन,

रुषभ अजीत संभव अभीनंदन ॥ नी-
 रंजन निराकार, सुमती पद्म सुपार्श्व चंदा
 प्रभू, भेट्या विषय विकारो, श्रीजीन मुजने
 पार उतारो. प्रभु हुं चाकर चरणारो ॥ श्री
 जीन० ॥ सुविधी सीतळ श्रेयांस वासु पुज्य
 मुक्ति तणा दातारो, वीरळ अनंत धर्मनाथ

शांती जीन, साताकारी संसारो, श्री जीन०
 कुंथुं अरनाथ मल्ली मुनी सुव्रत, पाम्या भव-
 जळ पारो, नमी नेमनाथ पार्श्व महावीरजी
 सासनना सीरदारो ॥ श्री जीन० ॥ अगी-
 आर गणधर विशे वीहर मान, सर्व साधु
 अणगारो, अनंती चोवीशीने नित्य २ वंदु कर
 गया खेवो पारो ॥ श्री जीन० ॥ अधम
 उधारण वीरुद्ध सुणी प्रभु, शरण लीयो च-
 रणारो; अधम उधारण परमपदा षद, अ-
 जर अमर अवीकारो ॥ श्री जीन० ॥ राग
 द्वेष कर्म बीज जे बळीया, बाळी कीधां सर्वे
 छारो, केवल ज्ञान ने केवळ दरशन, नीज गुण
 लीनो लारो ॥ श्री जीन० ॥ दान शीयळ
 तप भावना भावो, दया धर्म तत्व सारो,
 रुषी लालचंदजी एणीपेर विनवे, प्रभू मारो

करोने नीस्तारो ॥ श्री जीन मुजने पार
उतारो ॥ इति चोवीस तिर्थंकरनुं स्तवन ॥

श्री नवकारनो छंद प्रारंभ.

(दोहा.)

वंचित पुरे विध परे, श्री जिनशासन
सार ॥ निश्चे श्री नवकार नित, जपतां जय
जयकार ॥ १ ॥ अडसठ अक्षर अधिक फळ,
नवपद नवे निधान ॥ वीतराग स्वयं मुख
वदे, पंचपरमेष्टि प्रधान ॥ २ ॥ एकज अक्षर
एकज चित्ते, समर्या संपति थाय ॥ संचित
सागर सातनां, पातिक दुर पळाय ॥ ३ ॥
सकळ मंत्र शिर मुकुट मणी, सदगुरु भाषित
सार ॥ सो भवियां मन शुद्धशुं, नित जपीए
नवकार ॥ ४ ॥

(હંદ હાટકી.)

નવકાર થકી શ્રીપાઝ નરેસર, પામ્યો
 રાજ્ય પ્રસિદ્ધ ॥ સમશાન વિષે શિવ નામ
 કુમરને, સોવન પુરિસો સિદ્ધ ॥ નવ લાખ
 જપંતાં નરક નિવારે, પામે ભવનો પાર ॥ સો
 મદિયાં મંત્રે; ચોરુસે ચિત્તે, નિત જપીણ
 નવકાર ॥ ૧ ॥ બાંધી વડશાગ્વા શિંકે વેસી,
 હેટલ કુંડ દુતાશ ॥ તરકરને મંત્ર સમર્પ્યો
 શ્રાવકે, ઝડયો તે આકાશ ॥ વિધિ રીત
 જપ્યો વિષધર વિષ ટાલે, ઢાલે અમૃત ધાર ॥
 ॥ સો ० ॥ ૨ ॥ બીજોરાં કારણ રાય મહા-
 વલ્લ, બ્યંતર દુષ્ટ વિરોધ ॥ જેણે નવકારે
 હત્યા ટાલી, પામ્યો જક્ષ પ્રતિબોધ ॥ નવ-
 લાખ જપંતાં થાયે જિનવર, દશો છે અધિ-
 કાર ॥ સો ० ॥ ૩ ॥ પલ્લીપતિ શીરુઓ

मूनिवर पासे, महामंत्र मन शुद्ध ॥ परभव ते
 राजसिंह पृथ्वीपति, पाभ्यो परिगळ ऋद्ध ॥
 ॥ ए मंत्र थकी अमरापुर पहोंच्यो,
 चारुदत्त सूविचार ॥ सो० ॥ ४ ॥ संन्या-
 सी काशी तप साधंतो, पंचाग्नि परजाळ ॥
 दीठो श्री पास कुमारे पद्मंग, अधवळतो ते
 टाळ ॥ संभळाव्यो श्री नवकारस्वयं मुख,
 इंद्रभुवन अवतार ॥ सो० ॥ ५ ॥ मन शुद्धे
 जपतां मयणासुंदरी, पामी प्रीय संयोग ॥
 इण ध्याने कष्ट टळ्युं उंबरनुं. रक्तपित्तनो
 रोग ॥ निश्चेशुं जपतां नवनिधि थाये, धर्म-
 तणो आधार ॥ सो० ॥ ६ ॥ घटमांही
 कृष्ण मूजंगम घाल्यो, धरणी करवा धात ॥
 परमेष्टि प्रभावे, हार फुलनो वसुधामांही
 विख्योत ॥ कमळावतिमे पिंगळ कीधो,

पापतणो परिहार ॥ सो० ॥ ७ ॥ गयणां-
 गण जाति राखी ग्रहीने, पाडी बाण प्रहार ॥
 पद पंच सुणंतां पांडुपति घर, ते थइ
 कुंता नार ॥ ए मंत्र अमुलक महिमा मंदीर,
 भवदूःख भंजणहार ॥ सो० ॥ ८ ॥ कंबळ
 ने संबळ कादव काढ्यां, शकट पांचशे
 मान ॥ दीधे नवकार गया देवलोके, विलसे
 अमर विमान ॥ ए मंत्र थकी संपति वसूधां
 तळे विलशे जैन विहार ॥ सो० ॥ ९ ॥
 आगे चोवीशी हुइ अनंती, होशे वार अ-
 नंत ॥ नवकार तणी कोइ आदि न जाणे
 इम भांखे अरिहंत ॥ पूरव दिशि चारे आ-
 दि प्रपंचे, समर्या संपति सार ॥ सो० ॥
 १० ॥ परमेष्टि सुर पद ते पण पामे, जे कृत
 कर्म कठोर ॥ पुंडरगिरि ऊपर परतस्व पे-

ख्यो, मणिधर ने एक मोर ॥ सहगुरुने सं-
 नमुख विधि समरंतां, सफल जनम संसार ॥
 सो० ॥ ११ ॥ शूर्लीकारो पण तस्कर की-
 थो, लोहखरो परसिद्ध । तिहां शेठे नव-
 कार मुणाव्यो, पाम्यो अमरनी ऋद्ध ॥ शे-
 ठने घर आवी विघ्न निवांयां, मूरे करी
 मनोहार ॥ सो० ॥ १२ ॥ पंच परमेष्टि
 ज्ञानज पंचह, पंच दान चारित्र ॥ पंच
 सज्ज्ञाय महाव्रत पंचह, पंच सुमति समकि-
 त ॥ पंच प्रमादह विषय तजो पंच, पाळो
 पंचाचार ॥ सो० ॥ १३ ॥

(कळश छप्पय.)

नित जपीए नवकार, सार संपति सु-
 खदायक ॥ शुद्ध मंत्र.ए शाश्वतो, इम जपे

श्री जगनायक ॥ श्री अरिहंत सुसिद्ध, शुद्ध
 आचार्य भणीजे ॥ श्री उवझाय मुसाधु, पंच
 परमेष्टि श्रुणीजे ॥ नवकार सार संसार छे,
 कुशललाभ वाचक कहे ॥ एक चित्ते आरा-
 धतां, विविध ऋधि वंछित लहे ॥ १४ ॥ इति.

अथ श्री शांतिनाथनो छंद.

नगर हत्थिणापुर अति रे भलो, जिहां
 जनम्या तिर्यंकर त्रिमुवन तिलो ॥ राय प-
 रुष्यो जैन खरो, श्री शांति जिनेश्वर शांति
 करो ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ सर्वारथसिद्ध
 थकीरे चर्ची, तव देश नगरमां शांति हवी
 शांतिजी नाम दियो सखरो, श्री शांति०
 ॥ २ ॥ विश्वसेन पिता अचिरा रे माया, जेणे
 चौद सुपन महोत्तं रे माया ॥ जनम्या ती-

र्थकर अमिय झरो, श्री शांति० ॥ ३ ॥ छ-
 पन कुमारिका उल्लास घणो, जेणे जनम
 महोच्छव कर्यो कुमर तणो ॥ ज्येसठ इंद्र
 आवी कळंश भरो, श्री शांति० ॥ ४ ॥ भ-
 णावी व्होतेर कळा, जेणे सहस्र चोसठ प-
 रणी महीला ॥ छखंड सांध्या एणीय परो,
 श्री शांति० ॥ ५ ॥ सहस्र पंचोत्तेर वरस
 कढ्यां. चक्रवर्तिपणे घर वास रढ्यां ॥ पळे
 मिटाइ दियो सधळो झगडो, श्री शांति०
 ॥ ६ ॥ एक सहस्र पुरुष साथे शिक्षा, श्री जि-
 नवरजीए लीधी दिक्षा ॥ पळे सुर नर आवी
 पाय पडो, श्री शांति० ॥ ७ ॥ एक मास
 लगे छदमस्थ रढ्या, शुदि पोश नोमे दिन
 केवळ लढ्या ॥ भरणी नक्षत्र प्रभात खरो,
 श्री शांति० ॥ ८ ॥ प्रभुए मोहजाळ सवि

कापी, चतुर्विध संघ तीरथ थापी ॥ चोथो
 दूसम सूसम आरो, श्री शांति० ॥ ९ ॥ द्वा-
 शठ सहस मुनिराज थया, बळी सहस न-
 व्यासी हुइ आजियां ॥ प्रभु तारोने बळी
 आप तरो, श्री शांति० ॥ १० ॥ दोस लाख
 नेवु सहस श्रावक गुणी, त्रण लाख त्याशी
 राहस श्राविका सुणी ॥ और चतुर्विध संघ
 खरो, श्री शांति० ॥ ११ ॥ चार हजार
 उहिनाणि जति, बळी त्रणशे हुवा विपुलमति
 ॥ नेवु गणधरनो पाप हरो, श्री शांति० ॥
 ॥ १२ ॥ चार हजार त्रणशे रे कथा, मुनि
 केवळ लहीने मुगति गया ॥ छ हजार मुनि-
 वैक्रेय धारो, श्री शांति० ॥ १३ ॥ चोत्रीशे
 वादी भारी, बळी आठशे चौद पूरवधारी
 ॥ आठ करमशुं जाइ लडो, श्री शांति० ॥

॥ १४ ॥ नवपदवी मोटी रे कही, जेणे एकण
 • भवमां • छए लही ॥ एसो भरियो पुण्य
 घडो, श्री शांति० ॥ १५ ॥ ५५ पा लाख
 कुमर सांध्यणे, वळि अथलाख वरस रखा
 राज्यपणे ॥ एक लाख वरसनो सर्व धडो,
 श्री शांति० ॥ १६ ॥ चाळीश धनुष उंची रे
 देही, वळि हेमवरणी उपमारे कही ॥ दीठे
 दील दरियाव ठरो; श्री शांति० ॥ १७ ॥
 जो नाम धरावो श्रावक यति, तो अनाचार
 सेवो रे मती ॥ परभवथी सेंती कांड डरो,
 श्री शांति० ॥ १८ ॥ त्रिविध त्रिविधे जीव
 मति रे रणो, ए उपदेश छे जिनराज तणो
 ॥ मार्ग बताव्यो शुद्ध खरो, श्री शांति०
 ॥ १९ ॥ आ जीव रायनी रंक थयो, वळि
 नरक निगोदमां बहु रे रणो ॥ रडवडीयो जेम

गेडि दडो, श्री शांति० ॥ २० ॥ चार ग-
 तिनां रे दुःख कहां, जिवे अनंति अनंति
 वार लह्यां ॥ पची रह्यो जेम तेल वडो श्री
 शांति० ॥ २१ ॥ श्रद्धा सहित तुमे तप
 तपो, भव्य जीवो सौ तुमे जाप जपो ॥ मार्ग
 मळ्यो छे निपट खरो, श्री शांति० ॥ २२ ॥
 संभारो एक मास तणो, सम्मेत शिखर सिद्ध
 ठाम भणो ॥ नवशें मुनिशुं मुगति वरो,
 श्री शांति० ॥ २३ ॥ मृग लंछन सेंति ध्या-
 न रह्या, श्री शांति जिनेश्वर मुगति गया ॥
 पछे मेट दियो सवि जन्म मरो; श्री शांति०
 ॥ २४ ॥ तुम नाम लिया सवि काज सरे,
 तुम नामे मुगति महेल मळे ॥ तुम नामे
 शुभ भंडार भरो, श्री शांति० ॥ २५ ॥ ऋषि
 जेमलजीए एह विनति कही, प्रभु तोरा गु-

णनो पार नही ॥ मुज भव भवनां दुःख दूर
हरो, श्री शांति० ॥ २६ ॥ इति. ॥

अथ श्री चार शरणां प्रारंभ.

प्रह उठीने समरिग्रे, हो भवियण मं-
गळिक शरणां चार ॥ आपदा मटी संपदां
हुवे, हो भवियण दोलतनां दातार ॥ हृद-
यमां राखीए, हो भवियण मंगळिक शरणां
चार ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ अरिहंत सिद्धं
साधु तणां, हो० केवळी भाषित धर्म ॥ ए
शरणां नित ध्यावतां, हो० त्रुटे आठे कर्म ॥
ह० ॥ हो० ॥ २ ॥ वाटे घाटे चालतां, हो०
रात दिवस मोझार ॥ गाम. नगर पुर विच-
रतां हो० विघ्न निवारण हार ॥ ह० ॥
हो० ॥ ३ ॥ ए चारे सुखकारियां, हो० ए

चारे जगसार ॥ ए चारे उत्तम कक्षां हो०,
 ए चारे हितकार ॥ ह० ॥ हो० ॥४॥ डायण
 सायण भूतडां, हो० सिंह चित्राने शुर ॥
 बैरी दुश्मन चोरटा, हो० रहे ते सघळा दुर
 ॥ ह० ॥ हो० ॥ ५ ॥ राखो शरणांनी आ-
 सता, हो० नेडो नही आवे रोग ॥ आणंद
 वर्त्ते इण नामथी, हो० बहाला तणी संयोग
 ॥ ह० ॥ हो० ॥ ६ ॥ मुखशाता वर्त्ते घणी,
 हो० जे ध्यावे नर नार ॥ परभव जातां
 इण जीवने, हो० एह तणो आंधार ह० ॥
 हो ॥ ७ ॥ मन चिंतित मनोरथ फळे, हो०
 वर्त्ते कोड कल्याण ॥ शुद्धे मने ध्यावतां
 हो० निश्चै पद निरवाण ॥ ह० ॥ हो० ॥
 ॥ ८ ॥ इण सरिखो शरणो नही, हो० इण
 सरीखो नही नाम, इण सरीखो मित्र नही,

हो० गाम नगर पुर ठाम ॥ ह० ॥ हो० ॥
 ॥ ९ ॥ दान शियळ तप भावना, हो० जगमे
 तत्व सार ॥ करो आराधो भावंशुं, हो०
 पामो मोक्ष दुवार ॥ ह० ॥ हो० ॥ १० ॥
 जोड किधी छे जुगतिशुं, हो० पाली शेखा
 काळ ॥ रुषि चोथमलजी इम भणे हो० सुं-
 णजो बाळ गोपाल ॥ ह० ॥ हो० ॥ ११ ॥ इति ॥

अथ श्री ज्वर (ताव) नो छंद.
 (दोहा)

नमो आनंदपुर नगर, अजयपाल रा-
 जन ॥ माता अजया जनमियो, ज्वर तुं कृपा
 निधान ॥ १ ॥ सातरुप शक्ति हुआ, कर-
 वा खेल जंगत ॥ नाम धरावे जूजुवा, पसर्यो
 तुं इत्त उत्त ॥ २ ॥ एकांतरो बेयांतरो, त्र-

इयो चोथो ताम, शीत उष्ण विषम ज्वरो,
ए साते तुज नाम ॥ ३ ॥

॥ छंद ॥

ए साते तुज नाम सुरंगा, जपतां पुरे
कौडि उमंगा ॥ तें नाम्या जे जालिम जंगा,
जगमां व्यापी तुज जस गंगा ॥ ४ ॥ तुज
आगे भुपति सब रंका, त्रिभुवनमां वाजे तुज
ढंका ॥ माने नहि तुं केहनी शंका, तुठयो आपे
सोवन टंका ॥ ५ ॥ साधक सिद्ध तणा मद
मोडे, असुर सुरा तुज आगळ दोडे ॥ दुष्ट
धीठनां कंधर तोडे, नमी चाले तेहने तुं छोडे
॥ ६ ॥ आवंतो थरहर कंपावे, डाह्याने जिम
तिम बहेकावे ॥ पहिलो तुं केडमांथी आवे;
सात शिरख पण शीत न जावे ॥ ७ ॥

'हीं हीं' हुं हुंकार करावे, पांसळियां हाडां
 ककडावे ॥ उनाळे पण अमलं जगावे, तापे
 पहिरणमां मूतरावे ॥ ८ ॥ आशो कार्तीक
 मां तुज जोरो; हठयो न माने धांगो दोरो
 ॥ देश विदेश पडावे सोरो, करे सबळ तुं
 तातो तोरो ॥ ९ ॥ तुं हाथीनां हाडां भंजे,
 पापीने ताडे करपंजे, भक्ति वत्सल भावे
 जो रंजे, तो शेवकने कोय न गंजे ॥ १० ॥
 फोडक तोडक डमरु डाकं, सुरपति सरिखा
 माने हाकं ॥ धमके धुंसड धांसड धाकं, च-
 ढतो चाले चंचल चाकं ॥ ११ ॥ पिशुन पछा-
 डण नही को तोथी, 'तुज जस बोल्या
 जाय न कोथी ॥ शी अणखील करो ए
 थोथी, महेर करी अळगां रहो मोथी ॥ १२ ॥

भक्त थकी एवढी कां खेडो, अवल अ-
 मिना छांटा रेडो ॥ लाखा भक्तानो ए
 निवेडो, माहाराज मूको मुज केडो ॥ १३ ॥
 लाजवशोभां अजया राणी, गुरु आण मानो
 गुणखाणी ॥ घरे सीधावो करुणा आणी,
 कहुछुं नाके लींटी ताणी ॥ १४ ॥ मंत्र स-
 हित ए छंद जे पढशे, तेहने ताव कदी नव
 वढशे ॥ कांति कळा देही नीरोगं, लेहेशे
 लक्ष्मी लीला भोगं ॥ १५ ॥

॥ कलश छप्पय ॥

ॐ नमो धरि आदि, बीज गुरु नाम
 वदीजे ॥ आनंदपुर अवनीश, अजयपाळ
 राखीजे ॥ अजया जात अठार वांचिये
 साते वेदा ॥ जपतां एहिज जाप, भक्तशुं न

करे मैटा ॥ उतरे चढियो अंग, पळमें तुज
वयणे मुदा ॥ कहे कांति रोग नावे कदा,
सार मंत्र गणिये सदा ॥ १६० ॥ इति ज्वर-
छंद समाप्तम् ॥

ए छंद सात वार, चौद वार, अथवा
एकवीस वार सांभळे अथवा भणे, तो ताव
जतो रहे ॥

अथ श्री महावीर स्वामीनो छंद.

सेवो वीरने चित्तमां नित्य धारो, अरि
क्रोधने मन्नथी दुर वारो ॥ संतोषवृत्ति धरो
चित्तमांदि, राग द्वेषथी दुर थाओ उच्छाहि
॥ १ ॥ पडया मोहना पासमां जेह प्राणी,
शुद्ध तत्त्वनी वात तेणे न जाणी ॥ मनु ज-
न्म पापी वृथा कां गमो छो, जिनमार्ग छंडो

भूला कां भमो छो ॥ २ ॥ अलोभी अमानी
 निरागी तजो छो, सलोभी समानी सरागी
 भजो छो ॥ हरि हरादि अन्यथी शुं रमो छो,
 नदी गंग मूकी गळीमां पडो छो ॥ ३ ॥
 केइ देव हाथे झसि चक्रधारा, केइ देव
 धाले गळे रुढमाला ॥ केइ देव उत्संगे राखे
 छे वामा, केइ देव साथे रमे वृंद 'रामा ॥४॥
 केइ देव जपे लेह जपमाळा, केइ मांसभक्षी
 महा वीकराळा ॥ केइ योगीणी भोगिणी भो-
 ग रागे, केइ रुद्राणी छागनो होम मागे ॥५॥
 ईशा देव देवीतणी आश राखे, तदा दु-
 क्तिनां सुखने केम चाखे ॥ जदा लोभना
 थोकनो पार नाव्यो, तदा मधनो बिंदुओ मन्न
 भाव्यो ॥ ६ ॥ जेह देवलां आपणी आश
 राखे, तेह पींडने मन्न शुं लेइ चाखे ॥ दी-

न. हीननी, भीड ते केम भांजे, फुटयो ढोल होए
 कहो केम वाजे ॥ ७ ॥ अरे मूढ भ्राता भजो
 मोक्ष दाता, अलोभी प्रभुने भजो विंध्यख्या-
 ता ॥ रत्न चिंतामणि सारिखो एह साचो,
 कलंकी काचना पींड शुं मृत राचो ॥ ८ ॥
 मंदबुद्धि शुं जेह प्राणी कहे छे, सवि धर्म ए-
 कत्व भूलो भमे छे ॥ किहां सर्षवाने किहां
 मेरुधीरं, किहां कायराने किहां शुरवीरं ॥
 ॥ ९ ॥ किहां स्वर्णथाळं किहां कुंभखंडं,
 किहां कोद्रवाने किहां खीरमंडं ॥ किहां खीर
 सिंधु किहां क्षारनीरं, किहां कामधेनु कि-
 हां छागखीरं ॥ १० ॥ किहां सत्यवाचा
 किहां कूडवाणी, किहां रंकनारी किहां राय-
 राणी ॥ किहां नारकीने किहां देव भोगी,
 किहां इंद्रदेही किहां कुष्ठरोगी ॥ ११ ॥ कि-

हां कर्मघाती किहां कर्मधारी, नमो वीरस्वामी
 भजो अन्य वारी ॥ जिसी सेजमां स्वप्नथी
 राज्य पाभी, राचे मंदबुद्धि धरी जेह स्वामी
 ॥ १२ ॥ अथिर सुख संसारमां मन्न राचे,
 ते जना मूढमां श्रेष्ठ शुं इष्ट छाजे ॥ तजो
 मोह माया हरो दंभ रोशी, सजो पुष्प पोषी
 भजो ते अरोशी ॥ १३ ॥ गति चार संसार
 असार पामी, आव्यो आश धारी प्रभु पाय
 स्वामी ॥ तुहीं तुहीं तुहीं प्रभु परम रागी,
 भवफेरनी शृंखला मोह भागी ॥ १४ ॥
 मानीये वीरजी अरज छे एक मोरी, दीजे
 दासकुं सेवना चरण तोरी ॥ पुण्य उदय
 हुवो गुरु आज मेरो, विवेके लह्यो में प्रभु
 दर्श तेरो ॥ १५ ॥ इति समाप्तम् ॥

॥ अथ श्री वीरजिनना चउद

स्वप्ननुं स्तवन. ॥

रायरे सिद्धारथ घेर पंटराणी, नामे
 त्रिशला सुलक्षणीए ॥ राजभुवन मांहे पलंगे
 पोढंतां, चउद सुपन राणींए लह्यांए ॥ १ ॥
 पहेले रे • सुपने गयवर दीठो, बीजे वृषभ
 सोहामणोए ॥ त्रीजे सिंह सुलक्षणो दीठो,
 चोथे लक्ष्मी देवताए ॥ २ ॥ पांचमे पंच
 वरणी फुलनी माळा, छठे चंद्र अमिय झ-
 र्यो ए ॥ सातमे सुरज आठमे ध्वजा, नवमे
 कळश अमिय भर्योए ॥ ३ ॥ पद्म सरो-
 वर दशमे दीठो, खीरसमुद्र दीठो अगीयारमे
 ए ॥ देव धिमान ते बारमुं दीठुं, रणजण
 घंटा वाजतां ए ॥ ४ ॥ रतूननो राशि ते तेरमे

दीठो, अग्नीशिखा दीठी चउदमे ए ॥ चउद
 सुपन लही राणीजी जाग्यां, राय समोवड
 पोहोतल्लं ए ॥ ५ ॥ सुणोरे स्वामी में तों
 सुहणलां लाध्यां, पाछली रात रळीयामणी
 ए ॥ रायरे सिद्धारथ पंडित तेडया, कहोरे
 पंडित फळ एहनां ए ॥ ६ ॥ अम कुळमंडण
 तुम कुळ दीवो, धनरे महावीर स्वामी अव-
 तर्या ए ॥ जे नर गावे ते सुख पावे, आनंद
 रंग वधामणां ए ॥ ७ ॥ इति समाप्तम् ॥

अथ श्री महावीरजिन छंद.

(त्रिभंगी छंद.)

जिनशासन स्वामी, अंतरजामी, शिव-
 गति गामी सुखकारी ॥ जगमें जसवंता, श्री

भगवंता, सुगुण अनंता उपगारी ॥ सिद्धा-
 रथ कुल आया, जगत सुहाया शुभपल जा-
 या गुणधारी ॥ धन त्रिशला नंदन, कुलध्वज
 स्थंदन, जिन चरणनकी बलिहारी ॥ १ ॥
 आसन कंपाया, सुरपति आया, शीश नमा-
 या, शुभ भावे ॥ वैक्रियकी पासे, मेली उ-
 लासे, ले जिन तासैं, गिरि आवे ॥ तिहां
 प्रभुजीनो, महोच्छव कीनो, फिर मुक दीनो
 ज्यां महत्तारी ॥ धन त्रिशला० ॥ २ ॥ युग
 वंदणा करके, निद्रा हरके, स्तवन उचरके,
 घर जावे ॥ भइ रवि, उगाइ, भूधव तांइ, दा-
 सी वधाइ, दरसावे ॥ नृप महोच्छव कीनो,
 दानज दीनो, हर्षत हियो, नीहारी ॥ धन०
 ॥ ३ ॥ योवन वय मांही, नारी व्याही, अ-
 वसर पाही, जोग ग्रहे ॥ तपस्या तन तावे,

सम दम भावे, ध्यान सुध्यावे, कष्ट सहे ॥
 प्रभु क्षमासागर, ज्ञान उजागर, गुण रत्नागर,
 अथ बारी ॥ धन० ॥ ४ ॥ शुद्ध संथम पाळे,
 दूषण टाळे ॥ शिवमग चाले, जग त्राता ॥
 क्रोध मान ने माया, लोभ हठाया, मोह भ-
 गाया, अरि धाता ॥ शूकळ मन ध्याया; कर्म
 खपाया ॥ केवळ पाया, जिणवारी ॥ धन०
 ॥५॥ सुणि नाथ बडाइ, मन अकडाइ, आया
 चलाइ, प्रभु पासे ॥ विस्मय अति पाया,
 चित्त लजाया, गर्व गमाया, बीमासे ॥ प्रभु
 भर्म मीटाया जिन मग आया, संजम ठाया,
 तिण सारी ॥ धन० ॥ ६ ॥ परथम इंद्रभू-
 ति, पूरवधर श्रुति, त्रिपादि संयुति, फरमाया
 ॥ गणधर पद लीना, परम प्रवीना, सम दम
 भीना, तन ताया ॥ चुम्पाळीसे लारा, गण-

धर इग्यारा, भये अणगारा, व्रतधारी ॥
 ॥ धन० ॥ ७ ॥ चार तीरथ थाप्यां, पाप
 उथाप्यां, सुव्रत आप्यां, नर नारी ॥ केइ
 स्वर्ग सिधाया, केइ शिव पाया, श्री जिन-
 राया, हितकारी ॥ शैलेशी भावे, प्रभु शिव
 पावे, जगमें नावे, अविकारी ॥ धन० ॥ ८ ॥
 प्रभु अलख निरंजन, भवदुःख भंजन,
 भविजन रंजन, किरपाळा ॥ जे शुद्ध मनऱ्यावे,
 दुःख पुलावे, सुख उपावे, प्रतीपाळा ॥ कहे
 ऋषि तिलोका, नारंतर धोका, देजो शिव
 थोका, भव पारी ॥ धन० ॥ ९ ॥ इति ॥

अथ श्री शांतिनाथ स्वामीनो छंद.

शांतीनाथको कीजे जाप, क्रोड भवोनां
 कापे पाप ॥ शांतीनाथजी ग्होटा देव, सुरनर

સારે જેહની સેવ ॥ ૧ ॥ દુઃસ્વદારીદ્ર જાવે
 દુર, સુખ સપંતી હોવે ધરપુર ॥ ટગ ફાંસી-
 ગર જાવે ધાગ, વઢ્ઢતી હોવે શીતલ આગ
 ॥ ૨ ॥ રાજલોકમા કીર્તિ ઘણી, શાંતી જી-
 નેશ્વર માથે ધણી ॥ જો ધ્યાવે પ્રભુજીનું ધ્યા-
 ન, રાજા દેવે અધીકું માન ॥ ૩ ॥ ગઢગુંવડ
 પોટા મીટ જાય, દેખી દુશ્મન લાગે પાય ॥
 સઘળો માગ્યો મનનો ભર્મ, પામ્યો સમકીત
 કાટયાં કર્મ ॥ ૪ ॥ સુણો પ્રભુ મોરી અર-
 દાશ, હું સેવક તમે પુરો આશ ॥ મુજમન
 ચિંતીતં કારજ કરો, ચીંતા આરતિ વીઘ્ન
 જ હરો ॥ ૫ ॥ મેટો મ્હારાં આલ, જંજાલ, પ્ર-
 ભુ મુજને તું નયણ નીંહાલ ॥ આપની કીર્તિ
 ઠામો ઠામ, સુધારો પ્રભુ મ્હારાં કામ ॥ ૬ ॥
 જો નિત્ય નિત્ય પ્રભુજીને રટે, મોતી બંધા

फूला कटे ॥ चेप लावण दोनुं जळ जाय, वि-
 ण ओषध कट जावे छांय ॥ ७ ॥ शांतिना-
 थना नामथी थाय, आंखे तुटं पळळ कट
 जाय ॥ कमळो पीळो जळ जळ झरे, शांती
 जीनेश्वर शाता करे ॥ ८ ॥ गरमी व्याधी
 मीटावे रोग, सयण मित्रनों मळे संयोग ॥
 एहवा देव न दीसे ओर, नही चाले दुश्मन
 को जोर ॥ ९ ॥ लुंटारा सब जावे नास,
 दुर्जन फीटी होवे दास ॥ शांतीनाथनी की-
 र्ति घणी, कृपा करो तुमे त्रीभुवनधणी ॥ १० ॥
 अरज करुंलुं जोडी हाथ, आपशुं नही कोइ
 छानी वात ॥ देखी रह्या छो पोते आप,
 काटो प्रभुजी म्हारां पाप ॥ ११ ॥ मुज मन
 चींतित करिये काज, राखो प्रभुजी म्हारी
 लाज ॥ तुम सम जन मांही. नही कोय, तुम

भजवार्थी शाता होय ॥ १२ ॥ तुम पास
 चले नही मरकी रोग, ताव तेजरो नांखे
 तोड ॥ मारी मीठाइ कीधी प्रभु संत, तुज
 गुणनो नही आवे अंत ॥ १३ ॥ तुमने सम-
 रे साधु सती, तुमने समरे जोगी जती ॥
 काटो संकट राखो मान, अवीचळ पदनुं
 आपो स्थान ॥ १४ ॥ संवत प्रहार चोराणुं
 जाण, देश माळवो अधिक दखाण ॥ शेहेर
 जावरा चैतर मास, हुं प्रभु तुम चरणांकोदास
 ॥ १५ ॥ रुषि रुगनाथजी कीधो छंद, काटो
 प्रभुजी म्हारा फंद ॥ हुं जोउं प्रभुजीनी
 वाट, मुज आरती चिंता सवीकाट ॥ १६ ॥

॥ छंद प्रकरण समाप्त ॥

अथ श्री दीवाळीनुं स्तवन.

पुग्गव दीशे हुइ पावापुरी ॥ थन धान्य
 रुद्धी स्मृद्धि शुं भरी ॥ हस्तीपाळ नामे तीहां
 भुपाळी ॥ वीर मुगते वीराज्या दीन दीवा-
 ली ॥ १ ॥ गौतमे गुरुनी सेवा कीधी मन-
 मानी ॥ एक रातमे हुवा केवळज्ञानी ॥ जीके
 चौद राज्य रक्षा भाळी ॥ वीर० ॥ २ ॥ अठारे
 राय हुवा भगता ॥ दोय दोय पोसा कीधर
 लगता ॥ जीके वीर सामु रक्षा भाळी
 ॥ वीर० ॥ ३ ॥ प्रभुए दोय दीनरो संथारो कीधो
 ॥ सोळ पहोर लगे उपदेश दीधो ॥ प्रभु
 मुगती गया कर्मने गाळी ॥ वीर० ॥ ४ ॥ प्रभुए
 त्रीशे वर्षे संयम लीधो ॥ नीज आत्म का-
 रज सीद्ध कीधो ॥ वरस बेंताळीश दीक्षा

पाळी ॥वीर०॥५॥ प्रभुने सातसैं चूला चौदसैं
 चेली, ज्याने मुगती महेलमां दीया मेली
 ॥ जेणे कर्मना बीज दीयां बाळी ॥वीर०॥६॥
 प्रभुने एक राणीने हुइ एक बैठी, ॥ जी के
 मुगती गया दुःख दीयां मेठी, जमाइ हुओ
 ज्यारो जमाळी ॥वीर०॥७॥ प्रभुने एक बहेनने
 एकज भाइ ॥ जी के स्वर्गे गया समकीत
 पाई ॥ श्रावकनां वृत शुद्धपाळी ॥वीर०॥८॥
 रुपभदत्तने देवानंदा माता ॥ नयणे नीरखतां
 हुइशाता ॥ दोनुं मुगती गया कर्मने गाळी ॥
 वीर० ॥ ९ ॥ सीद्धारथ राजाने त्रीशला
 राणी ॥ जेणे संथारो कीधो समता आणी
 अच्युय देवलोक टांको दीयो झाळी ॥
 वीर०॥१०॥ जैणी राते वीरे० मुगती पामी ॥
 केवळ पाम्या गौतम स्वामी ॥ ज्यारो जा-

पजपो नवकार वाळी ॥ वीर० ॥११॥ सुधर्मा
 स्वामी हुवा 'पाट धणी ॥ ज्यारी कीर्ती म-
 हीमा जोर घणी ॥ दयामारग दीयो अज-
 वाळी ॥ वीर० ॥१२॥ ज्यारी पाटे हुवा जंबु
 वैरागी ॥ राते परण्या प्रभाते आठे त्यागी,
 सोळ वर्षामे काटी कर्म जाळी ॥ वीर० ॥१३॥
 आठे भामनी वैरागे भीनी ॥ प्रभाते पीयू
 साथे दीक्षा लीनी ॥ अवीहड प्रीत सघळी
 पाळी ॥ वीर० ॥१४॥ प्रभवो पण राजानो बेटो
 ॥ जीके जंबु कुमर शुं हुवोरे भेटो ॥ पांचसें
 शुं वैराग पाभ्यो ततकाळी ॥ वीर० ॥१५॥
 वीशजीन समेत शीखर सीध्या ॥ अष्टापद
 गीरनार दोय सीध्या ॥ वासुपुज्य सीध्या
 चंपा चाली ॥ वीर० ॥१६॥ मंहावीर चोमासो
 कीयो पावापुरी ॥ कारतक वदी अमावाशे

मुगती वरी ॥ भणतां सुणतां मंगळ माळी
 ॥वीर०॥१७॥ दीन दीवाळीनो पायो टाणो॥
 तो झात्री भोजन असनादिक नही खाणो ॥
 ज्यारो जाप जपो शीयळ पाळी ॥वीर०॥१८॥
 गुरुचेलानी जोडी सूरज शशी ॥ रुषी राय-
 चंद कहे मारे मनडे वशी ॥ में जुगती शुं
 जोड जोडी टंकशाळी ॥ वीर० ॥१९॥ पुज्य
 जेमलजी रहा पासो ॥ शेहेर नागोरमें कीयो
 चोमासो ॥ संवत अठार वर्ष पीस्ताळी ॥
 वीर० ॥ २० ॥ इति ॥

॥ अथ श्री महावीर स्वामीनुं
 हालभियुं ॥

माता त्रिशला झुलावे पुत्र पालणे, गावे
 हालो हालो हालरवानां गांतरे ॥ सोना

रूपाने वळी रत्ने जडियुं पालणुं, रेषम दोरी
 छुघरी वागे छुम छुम रीतरे ॥ हालो, हालो
 हालो हालो रे म्हारा वीरने ॥ १ ॥ जिनजी
 पास प्रभुथी वरस अढीसें अंतरे, होशे चो-
 विशमो तीर्थकर जित परिणाम ॥ केशी-
 स्वामी मुखथी एया वाणी सांभळी, साची.
 साची हुइ.ते म्हारे अमृत वाणरे ॥ हा० ॥
 ॥२॥ चोंदे स्वप्ने हांवे चक्री के जिनराज,
 वीत्या बारे चक्री नहीं हवे चक्रीराज, जि-
 नजी पास प्रभुना श्री केशी गणधर ॥ तेहने
 वचने जाण्या चोवीशमा जिनराज, म्हारी
 कुखे आव्या त्रण भुवन शिरताज, म्हारी
 कुखे आव्या तरण तारण जिहाज ॥ हुं तो
 पुण्य पनोती इंद्राणी थइ आज रे ॥ हा० ॥
 ॥ ३ ॥ मुजने डोहळा उपन्या बेसुं गज अंबा-

डीर, सिंहासनपर बेसुं चामर छत्र धराय ॥
 सहु लक्षण मुजने नंदन तहारा तेजनां, ते
 दिन संभारुं ने आनंद अंग न मय्य रे ॥ हा०
 ॥४॥ कग तळ पगतळ लक्षण एक हजारने
 आठ छे, नेहथी निश्चय जाण्या जिनवर श्री
 जगदीश ॥ नंदन जमणी जंघे लंछन सिंह
 वीराजतो, में तो पेहेले सुपने दीठो वीशवा-
 वीशरे ॥ हा० ॥ ५ ॥ नंदन नवला बंधव
 नंदी वर्द्धनना तमे, नंदन भोजाइयोना देवर
 छो सुकुमाळ ॥ हसशे भोजाइआ कही दीयर
 म्हारा लाडका, हसशे रमशे ने वळी चुंटी
 खणशे गाल, हसशे रमशे ने वळी ठुंसा देशे
 गालरे ॥ हा० ॥ ६ ॥ नंदन नवला चेडा
 राजाना भाणेज छो, नंदन नवली पांचशे
 मामीना भाणेज छो, नंदन मामलीयाना भा-

णेजा सुकुमाळ ॥ हसशे हाथे उच्छाळी क-
 हीने न्हाणा भाणेजा ॥ आंख्यो आंजीने
 वळी टपकुं करशे गालरे ॥ हा० ३। ७ ॥
 नंदन मामा मामी लावशे टोपी आंगलां,
 रतने जडीयां झुलडो मोती कसबी कोर ॥
 निलां पीळां ने वळी रातीं सरवे जातिना,
 पहेरावशे मामी म्हारा नंद कीशोर रे ॥ हा०
 ॥ ८ ॥ नंदन मामा मामी सुखडली बहु
 लावशे, नंदन गजुवे भरशे लाडु मोतीचुर ॥
 नंदन मुखडां जोइने लेशे मामी भामणां
 नंदन मामी कहेशे जीवो सुख भरपुररे ॥
 हा० ॥ ९ ॥ नंदन नवला चेडा मामानी
 साते सती, म्हारी भत्रीजीने व्हेन तमारा
 नंद ॥ ते पण.गुंजे भरवा लांकणसाइ लावशे,
 तुमने जोइ जोइ होशे अधिको परमानंद रे

॥ हा० ॥ १० ॥ रमवा काजे लावशे लाख
 टकानो घुघरो, बळी मूढा मेना पौषटने गं-
 जराज ॥ सारस कोयल हंस तीतर ने बळी
 मोरजी, मामी लावशे रमवा नंद तमारे का-
 जरे ॥ हा० ॥ ११ ॥ छप्पन कुमरी अमरी
 जळ कळशे नवरावीया, नंदन तमने अमने
 केलीघरनी मांह ॥ फूलनी वृष्टी कीधी योजन
 एकने मांडले, बहु चिरंजीवी आशीश दीधी
 तुमने त्यांह रे ॥ हा० ॥ १२ ॥ तमने मेरु
 गिरिपर सुरपतीये नवराविया, निरखी नि-
 रखी हरखी सुकृत लाभ कमाय ॥ मुखडा
 उपर वारी कोटी कोटी चंद्रमा, बळी तनपर
 वारी ग्रहगण समुदायर ॥ हा० ॥ १३ ॥
 नंदन नवला भणवा निशाळे पण मूकशुं ग-
 जपर अंबाडी बेसाडी म्होटे साज ॥ पसली

भरशुं श्रीफळ फोफळ नागरवेलशुं, सुखडली
 लेशुं, निशाळीयाने काजरे ॥ हा० ॥ १४ ॥
 नंदन नवला म्होटा थाशो ने परणावशुं, व-
 हु वर सरस्वी जोडी लावशुं 'राजकुमार ॥
 सरस्वा सरस्वी वेवाइ वेवाणुं पधरावशुं, वर
 बहु पोस्वी लेशुं जोइ जोइने 'देदार रे ॥ हा०
 ॥ १५ ॥ पीयर सासर म्हारा बेहु पख नंद-
 न उजळा, म्हारी कूखे आव्या तात पनोता
 नंद ॥ म्हारे आंगणे वुठया अमृत दुधे मेहु-
 ला, म्हारे आंगणे फळिया सुरतरु सुखना
 कंदरे ॥ हा० ॥ १६ ॥ इणिपेरे गायुं माता
 त्रिशला सुतनुं हालरुं, जे कोइ गाशे लेशे
 पुत्र तणा साम्राज ॥ बीलीमोरा नगरे वर-
 णव्युं वीरनुं हालरुं, जयजय मंगल होजो
 दीपविजय कविरांजरे ॥ हा० ॥ १७ ॥ इति॥

अथ श्री जीव राशिनी सज्ज्ञाय.

हवे राणी पदमावती, जीवराशि खमा-
 वे ॥ जाणपणुं जगते भलुं, एणीवेळाये आवे
 ॥ ते मुज मिच्छामि दुक्कडं ॥ १ ॥ अरिहंत-
 नी साख ॥ जे में जीव विराधिया, चोरांशी
 लाख ॥ ते मुज० ॥ २ ॥ सात लाख पृथ्वी
 तणी सात अपकाय, सात लाख तेउकाय-
 ना साते वळीवाय ॥ ते मुज० ॥ ३ ॥ दश-
 लाख प्रत्येक वनस्पति, चउदे साधारण ॥ बी-
 ति चौरेंद्रिय जीवना, बे बे लाख विचार ॥
 ते मुज० ॥ ४ ॥ देवता तिर्यंच नारकी, चा-
 र चार प्रकाशी ॥ चउद लाख मनुष्यना,
 ए लाख चोराशी ॥ ते मुज० ॥ ५ ॥ इणभवे
 परभवे सेवीयां, जे पाप अढार ॥ त्रिविधे
 त्रिविधे करी परिहरुं, दुर्गतिनां दातार ॥ ते

मुज० ॥ ६ ॥ हिंसा कीधी जीवनी, बाल्या,
 मृषावाद ॥ दोष अदत्तादानना, मैथुन उन-
 माद ॥ ते मुज० ॥ ७ ॥ परिश्रह मेळ्या
 कारमो, कीधो क्रोध विशेष ॥ मान माया
 लोभ में कियां वळी राग ने द्वेष ॥ ते मुज०
 ॥ ८ ॥ कलह करी जीव दुहव्या, दीधां कु-
 डां कलंक ॥ निंदा कीधी पारकी, रति अ-
 रति निशंक ॥ ते मुज० ॥ ९ ॥ चाडी
 कीधी पारकी, कीधो थापण मोसो ॥ कुगुरु
 कुदेव कुधर्मनो, भलो आण्यो भरोंसो ॥ ते-
 मुज० ॥ १० ॥ खाटकीने भवे में किया,
 जीवना बध घात ॥ चडीमार भवे चरकलां,
 मार्यां दिनने रात ॥ ते मुज० ॥ ११ ॥ का-
 जी मुल्लाने भवे, पढी मंत्र कठोर ॥ जीव
 अनेक जम्हे किया, कीधां पाप अघोर ॥ ते

मुज० ॥ १२ ॥ माछीने भवे, माछलां
 झाल्यां जळवास ॥ धीवर भील कोळी भवे,
 मृग पाड्या पास ॥ ते मुज० ॥ १३ ॥ को-
 टवाळने भवे में किया, आकरा कर दंड ॥
 बंधीवान मराविया, कोरडा छडी दंड ॥ ते
 मुज० ॥ १४ ॥ परमाधामीने भवे, दीधां
 नारिकी दुःख ॥ छेदन भेदन वेदना, ताडन
 अति तिग्व ॥ ते मुज० ॥ १५ ॥ कुंभारने
 भवे में किया, नीमाह पचाव्या ॥ तेली भवे
 तल पीलीया, पापे पिंड भराव्या ॥ ते मुज०
 ॥ १६ ॥ हाळी भवे हळ खेडीयां, फोडयां
 पृथ्वीनां पेट ॥ सुड निदान कियां घणां, दीधा
 बळद चपेट ॥ ते मुज० ॥ १७ ॥ माळी
 भवे रोप रोपियां, नानावीथ वृक्ष ॥ मूळ
 पत्र फळ फूलनां, लाग्यां पाप अलक्ष ॥ ते

मुज० ॥ १८ ॥ आदोवाइयाने भवे, भर्या
 अधिका भार ॥ पोठी उंद कीड पढ़या, द-
 या नाणी लगार ॥ ते मुज० ॥ १९ ॥ छीं-
 पाने भवे छेतर्या, कीधां रंगण पास ॥ अग्नि
 आरंभ कीधा घणा, धातुर्वाद अभ्यास ॥ ते
 मुज० ॥ २० ॥ शुरपणे रण जुझतां, मार्या
 माणस वृंद ॥ मदिरा मांस माखण भख्यां,
 खाधां मूळ ने कंद ॥ ते मुज० ॥ २१ ॥
 खाण खणावी धातुनी, पाणी उल्लेच्यां ॥
 आरंभ कीधा अति घणा, पोते पापज सं-
 च्या ॥ ते मुज० ॥ २२ ॥ अंगार कर्म की-
 या वळी, धरमे दवज दीधा ॥ सम खाधा
 बीतरागना, कुडा कोसज कीधा ॥ ते मुज०
 ॥ २३ ॥ विली भवे उंदर गळ्या, गिरोळी
 हत्यारी ॥ मूढ गमारं तणे भवे, में जुं लीख

मारी ॥ ते मुज० ॥ २४ ॥ भाडभुंजा तणे
 भवे, एकेंद्रिय जीव ॥ जार चणा घउं शेकि-
 या, पाडंता रीव ॥ ते मुज० ॥ २५ ॥ खाडण
 पीसण गारना, आरंभ अनेक ॥ रांधण इं-
 धण अग्निनां कीधां पाप उद्वेग ॥ ते मुज०
 ॥ २६ ॥ वीकथा चार कीधी बळी, सेव्या
 पंच प्रमाद ॥ इष्ट वियोग पहांविया, रुदन
 विषवाद ॥ ते मुज० ॥ २७ ॥ साधु अने
 श्रावक तणां, व्रत लेइने भाग्यां ॥ मुळ अने
 उत्तर तणा, मुज दुषण लाग्यां ॥ ते मुज० ॥
 ॥ २८ ॥ साप वींछी सिंह चीतरा, शक-
 रा ने समळी ॥ हिंसक जीव तणे भवे, हिंसा
 कीधी सबळी ॥ ते मुज० ॥ २९ ॥ सुवावडी
 दुषण घणां, बळी गर्भ गळाव्या ॥ जीवाणी
 ढोळ्यां घणां, शीलव्रत भंजाव्यां ॥ ते मुज०

॥ ३० ॥ भव अनंता भमतां थकां कीधो देह
 संबंध, त्रिविधे त्रिविधे करी वोशिरुं, तीण
 शुं प्रतिबंध ॥ ते मुज० ॥ ३१ ॥ भव अ-
 नंत भमतां थकां, कीधा परिग्रह संबंध ॥
 त्रिविधे त्रिविधे करी वोशिरुं, तिणशुं प्रतिबंध
 ॥ ते मुज० ॥ ३२ ॥ भव अनंत भमतां थकां,
 कीधा कुटुंब संबंध ॥ त्रिविधे त्रिविधे करी
 वोशिरुं, तिणशुं प्रतिबंध ॥ ते मुज० ॥ ३३ ॥
 इणिपरे इह भव परभवे, कीधां पाप अखत्र
 ॥ त्रिविधे त्रिविधे करी वोशिरुं, करुं जन्म
 पवित्र ॥ ते मुज० ॥ ३४ ॥ एणि विधे ए
 आराधना, भावे करशे जेह ॥ समय सुंदर
 कहे पापथी, बळी छुटशे तेह ॥ ते मुज० ॥
 ३५ ॥ राग वैराडी जे सुणे, एह त्रीजी ढाळ
 ॥ समय सुंदर कहे पापथी, • छुटे ततकाळ ॥

ते मुज० ॥ ३६ ॥ इति समाप्तम् ॥

॥ अथ श्री महावीरस्वामीतुं
चोढालीयुं ॥ ढाल १ ला. ॥

सिद्धारथ कुळे तुं उपन्या, त्रिशलादे
थारी मात जी ॥ वरशी दान देइ करी, सं-
यम लीधो जगनाथ जी ॥ थें मन मोह्युं म-
हावीरजी ॥ १ ॥ कंचन वरणी छे कायजी
नयन न ध्रापे जी निरखतां, दिठडे आवे
छे दायजी ॥ थें मन० ॥ २ ॥ आप एकिला
संयम आदर्यो, उपन्या चोथो रे ज्ञान जी
॥ उत्कृष्ट तप थें आदर्यो, धरता निर्मळ ध्यान
जी ॥ थें मन० ॥ ३ ॥ उग्र विहार थें आ-
दर्यो, केइ वास रक्षा वनवास जी ॥ केइ

वासा वस्तिये रह्या, न रह्या एक ठामें चो-
 मास जी ॥ थें मन० ॥ ४ ॥ प्रभु, पहलो
 चोमासो थें कियो, अट्टी गाम भोजार जी ॥
 दुजो वाणीज गाम में; पंच चंपा सुखकार
 जी ॥ थें मन० ॥ ५ ॥ पंच पृष्ठ चंपा कर्यो,
 विशाला नगरीमां तीन जी ॥ राजगृहीमां
 चौदे कर्यो, नालंदे पाडे लयलीन जी ॥
 थें मन० ॥ ६ ॥ छ चोमासां मिथिला क-
 र्यो, भद्रिकानगरीमां दोय जी ॥ एक क-
 र्यो रे आलंबिया, सावर्धि नगरी एक होय
 जी ॥ थें मन० ॥ ७ ॥ एक अनारज देश-
 मां, अपापा नगरी एक जाण जी ॥ एक
 कर्यो पावापुरि में, जठे पड़ोत्या निरवाण
 जी ॥ थें मन० ॥ ८ ॥ हस्तीपाल राजा
 हम वीनवे, हुं तुम चरणारो दास जी, एक

शाळी म्हारे सूझती, आप करीने चोमास
 जी ॥ थें मन० ॥ ९ ॥ चाळीश चोमासां
 शहेरमां, दाख्यां देश नगरनां नाम जी ॥
 एक अनारज देशमां, एक चोमासुं वळी गाम
 जी ॥ थें मन० ॥ १० ॥ प्रभु गाम नगर
 पुर विचर्या, भव्य जीवारां भाग्य जी ॥
 मारग बताव्यो मोक्षनो, कियो उपगार अ-
 थाग जी ॥ थें मन० ॥ ११ ॥ साडाबार
 वरसां लगे, उपर आधो रे मास जी ॥ छद-
 मस्थ रह्या प्रभु एटलुं, पछी कर्यो केवळज्ञान
 प्रकाश जी ॥ थें मन ॥ १२ ॥ वर्ष बया-
 ळीश पाळियो, संयम साहस धीर जी ॥
 त्रीश वरस घरमां रह्या, मोक्ष दायक महा-
 वीर जी ॥ थें मन० ॥ १३ ॥ पावापुरिमां
 पधारिया, नर नारी हुआ उल्लास जी ॥

ऋषि रायचंदजी इम वीनवे, हुं आयो प्रभु-
 जीनै पास जी ॥ थें मन० ॥ १४ ॥ संवत
 अठार गुणचालीशमे, नागौर शहर चौमास
 जी ॥ पुज्य जेमलजी प्रसादथी, एक करी
 अरदास जी ॥ थें मन० ॥ १५ ॥ इति. ॥

॥ ढाल २ जी. ॥

शासन नायक वीर जिणंद, तीरथनाथ
 जाणे पुनम चंद ॥ चरणे लागे ज्यारे चो-
 सठ इंद्र, सेवा करे ज्यारी सुर नर वृंद ॥
 थें अबको चोमासो स्वामिजी अठेकरो जी,
 थें पावापुरिसें पग आघो. मति धरो
 जी, अठे करो, 'अठे करो, अठे करो, जी,
 थें चरम चोमासो स्वामिजी 'अठे करो जी

॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ हस्तिपाळ राजा वि-
नवे, करजोड, पूरो प्रभुजी म्हारा मनरा हो
कोड ॥ शीश नमाय ऊभो जोडी हाथ, क-
रुणा सागर वांजो कृपाजी नाथ ॥ थें अ-
बको० ॥ २ ॥ रायनी राणी विनवे राजलोक,
पुण्य जोगे मळ्यो सेवानो संजोग ॥ मन
वांछित सहु मळियां जी काज; थें मया
करी मुज सामुं जुवो जिनराज ॥ थें
अबको० ॥ ३ ॥ श्रावक श्राविका कइ नर
नार, मळी मळी विनति करे वारंवार ॥
पावापूरिमां पधार्या वीतराग, प्रगटी पु-
ण्याइ म्हारां म्होटां जी भाग्य ॥ थें अ-
बको० ॥ ४ ॥ वळि हस्तिपाळ राजा वि-
नवे भूपाल, प्रभु जी थें छो दीन दयाळ
॥ सुझती एक म्हारे म्होटी छे शाळ, हवे

लागी गगनो छे वरषा जी काल ॥ थें अब
 को० ॥ ५ ॥ मानी विनती प्रभु रह्या चो-
 मास, पांवापुरिमां हुथी हुरष उंक्रास ॥
 गौतम गणधर गुरांजीने पास, निशि दिन
 ज्ञाननो करेजी अभ्यास ॥ थें अबको० ॥
 ॥ ६ ॥ साधु अनेक रह्या करजोड, सेवा करे
 सदा होडार्जी होड ॥ चौद हजार चेला रं-
 त्तारी माल, दीक्षा लीधी छोडी माया जं-
 जाल ॥ थें अबको० ॥ ७ ॥ बडि चेली
 चंदनबालाजी जाण, हुइ कुमारि महा सती
 चतुर सुजाण ॥ मोतीनी माला छत्रीश
 हजार ॥ सघळी में बडी साधवी ए शि-
 रदार ॥ थें अबको० ॥ ८ ॥ चारुइ संघ
 सेवा नित्य करे, प्रभुजीने देखी देखी अं-
 खीयां ठरे ॥ नव मल्लिने नव लज्छी जी

राय, ज्यारां दर्शन केरी चित्तमें चाय ॥
 थें अबको० ॥ ९ ॥ संघ सघळा रे हुइ
 मन रंग रळी, पुण्य योगे प्रभुजी नी सेवा
 मळी ॥ ऋषि रायचंदजी विनवे जोडी हाथ,
 थें करुणासागर वाजो कृपाजीनाथ ॥ थें
 अबको० ॥ १० ॥ शहेर नागोरमें कियोजी
 चोमास, प्रभुजी देज्यो मुने मुगतिनो वास
 ॥ हुं सेवक तुमे साहिब स्वाम, महारे अवर
 देवाशुं नहि कोइ काम ॥ थें अबको० ॥ ११ ॥

॥ ढाळ ३ जी. ॥

शासन नायक श्री महावीर, तीरनाथ
 त्रिभुवन धणी ॥ पावापुरिमें कियो चरम
 चोमास, हुइ मोक्षदायकरी महिमा घणी ॥
 गौतमने मेल दियो महावीर, देवशर्माने प्र-

तिबोधका ॥ १ ॥ उत्तराध्ययननां अध्ययन
 छत्रिश, कारतक वदि अमावास्ये कहां ॥
 ऐकशोने वळी दश अध्ययन, सुत्र विपाक
 तणां लह्यां ॥ गौतमने० ॥ २ ॥ पोसा किधा
 श्री वीरजीनी पास, देश अढारना राजीया
 ॥ नव मल्लिने नव लच्छीजी राय, वीरना
 भगता कजीया ॥ गौतमने० ॥ ३ ॥ प्रभुं
 शासनना शिरदार, सर्व संघने संतोपने ॥
 सोळ पहोर लगे देशना दीध, पछी वीर
 बीराज्या मोक्ष में ॥ गौतमने० ॥ ४ ॥ तिन
 वरसने साडा आठ मास, चोथा आराना
 बाकी रह्या ॥ दिन दोय तणो संथार, मौन
 रही मुगते गया ॥ गौतमने० ॥ ५ ॥ इंद्र
 आव्या जी चित्त उदास, देव देवीना सा-
 थमें ॥ जाणे झग मग लग रही ज्योत, अ-

मावश्यानी रात में ॥ गौतमने० ॥ ६ ॥
 मृगति पहोत्या एका एक, सातसे हुवा ज्यारे
 केवळी ॥ चौदसे साधाविया हुइ सिद्ध, हुं
 सहुने बांदु मनरळी ॥ गौतमने० ॥ ७ ॥
 रह्या त्रीश वरस घर मांय, वर्ष बेंताळि सं-
 ग्रम पाळीयो ॥ प्रभु जग तारण जगदीश,
 दया मार्ग अजुवाळीयो ॥ गौतमने० ॥ ८ ॥
 होजी देव देवी ने वळि इंद्र, निर्वाण तणो
 महोच्छव कीयो ॥ अरिहंत नो पडियो वी-
 जोग, सुर नरनो भरियो हैयो ॥ गौतमने०
 ॥ ९ ॥ साधु साधवी करता शोक, श्रावक
 श्राविका पण घणा ॥ भरत क्षेत्रमां पडीयो
 वीजोग, आज पछी अरीहंतूतणो ॥ गौतमने०
 ॥ १० ॥ पछी बेढा सुधर्म स्वामी पाट, चा-
 रुइ संघ चरण सेवता ॥ ज्यारी पाळता

अखंडित ध्यान, सेवा करे देवीने देवता ॥
 ॥ गौतमने० ॥ ११ ॥ मुगते पहोत्या श्री
 महावीर, प्रभु सुख पाभ्या छें ज्ञान्वितां ॥
 ऋषि रायचंदजी कहे एम, महारे अरिहंत
 वचननी आसता ॥ गौतमने० ॥ १२ ॥ इति॥

॥ ढाळ ४ थी. ॥

श्री महावीर पहोत्या निर्वाण, गौतम-
 स्वामीए वातज जाणी ॥ गुरांजी थें मने
 गोडे न राख्यो ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ मु-
 गति जावणरो नाम न दाख्यो ॥ गुरांजी०
 ॥ २ ॥ हुं सघळा पहेला हुवो थारो चेलो,
 इण अवसर आघो किम मेळ्यो ॥ गुरांजी०
 ॥ ३ ॥ प्रभु तुम चरणे महारो चित्त लाग्यो,
 पण थें मुने मेल दियो आगो ॥ गुरांजी०

॥४॥ मुने दरशन आपरो लागतो प्यारो,
 आप पढोत्या निर्वाण मूने मेल दियो न्यारो
 ॥ गुरांजी० ॥ ५ ॥ आपे तो मुजशुं अंतर
 राख्यो, पिण मे महारा मनरो दरद न दा-
 ख्यो ॥ गुरांजी० ॥ ६ ॥ हुं आडो मांडीने
 न ज्ञाळत पळो, पण साहिव काम कियो तुमे
 भळो ॥ गुरांजी० ॥ ७ ॥ हुं तुमने अंतराय
 न देतो, मुगतिमें जग्या वहेंची न लेतो ॥ गु-
 रांजी० ॥ ८ ॥ हुं संकडाइ न करतो कांइ,
 आप साथे हुं मोक्षमें आइ ॥ गुरांजी० ॥ ९ ॥
 अब हुं पुछा करशुं किण आगे, प्रभु महारो
 मन एक थाशुज लागे ॥ गुरांजी० ॥ १० ॥
 महारो सांसो कहो कूण टाळे, आप विना
 पाखंडीना मद कुण गाळे ॥ गुरांजी० ॥ ११ ॥
 हुं तो चौदे पुरव ने चौनाणी, पिण मोहनी

कर्म लपेठयो आणी ॥ गुरांजी० ॥ १२ ॥
 इसो गौतमस्वामीये कियो विलपात, ए मो-
 हनी कर्मनी अचरिज वात ॥ मुरांजी०
 ॥ १३ ॥ हवे मोहनी कर्म दुरे टाळी, गौ-
 तमस्वामीए सूरती संभाळी ॥ वीतराग
 राग द्वेषशुं वीत्या ॥ १४ ॥ ए आंकणी ॥
 महारा चित्तमां आइ गह चींता ॥ वीतराग०
 ॥ १५ ॥ तिणि वेळा निर्मळ ध्यानज ध्या-
 यो, केवळज्ञान गौतमस्वामीए पायो ॥ वी-
 तराग० ॥ १६ ॥ बार वरस रह्या केवळज्ञानी,
 वात ज्याशुं कांइ नव रही छानी ॥ वीतराग०
 ॥ १७ ॥ गौतमे पण कियो मुगतिमे
 वासो, संसारनो सर्व देखे तमासो ॥ वीत-
 राग० ॥ १८० ॥ जेणि राते मुगति गया
 वर्द्धमान, इंद्रभुतीने. उपन्युं केवळज्ञान ॥

बीतराग० ॥ १९ ॥ तिण विनशी ए वाजी
दीवाळी, महोटो दिन ए मंगळ माळी ॥

बीतराग० ॥ २० ॥ रात दिवाळीनो शियळ
यें पाळो, वळि रात्रिभोजन करवो टाळो ॥

बीतराग० ॥ २१ ॥ ऋषि रायचंद कहे सू-
णो हो सुज्ञानी, दयारूप दीवाळी थें लेज्यो
मानी ॥ बीतराग० ॥ २२ ॥ •

॥ कलश. ॥ श्री शासन नायक मुगति
दायक दया मारग अजुवाळियो ॥ श्री गौ-
तमस्वामी, मुगति गामी; कियो चित बल्लभ
चोढाळियो ॥ २३ ॥ संवत अद्वारे गुण-
चाळीशे, नागोर चोमासो निर्मळ मने ॥
पूज्य उमेलजी प्रसादे, संपूर्ण कियो दिवाळी
दिने ॥ २४ ॥ इति समाप्त ॥ •

अथ श्रीलघु साधु वंदनानी सज्ज्ञाय

साधुजीने वंदना नित नित कीजे, प्रह
उगमते सूर रे प्राणी; निच गतिमां ते नवि
जावे, पामे रिद्धि भरपुर रे प्राणी ॥ सा० ॥
१ ॥ मोटा ते पंच महाव्रत पाळे, छकायरा
प्रतिपाळरे प्राणी; भ्रमर भिक्षा मुनि सु-
झती लेवे, दोष बयालीश टालरे प्राणी ॥
सा० ॥ २ ॥ रिद्धि संपदा मुनि कारमी जा-
णे, दीधी संसारने पूंठरे प्राणी; एरे पुरुषा-
री बंदगी करतां, आठे करम जाये तुट रे
प्राणी ॥ सा० ॥ ३ ॥ एक एक मूनिवर
रसना त्यागी, एकेका ज्ञान भंडार रे प्राणी;
एक एक मूनिवर वैयावच वैरागी, एना गू-
णनो नावे पाररे प्राणी ॥ सा० ॥ ४ ॥ गूण
सत्तावीस करीने दापे, ज्ञात्यां परिसा बा-

वीसरे प्राणी; बावन तो अनाचीरण टाले,
 तेने नमावुं मारुं शीशरे प्राणी ॥ सा० ॥ ५ ॥
 आज सध्यान ते संत' मूनिश्वर, भव्य जीव
 बेसे आयरे प्राणी; पर उपकारी मुनि दाम
 न मागे, देवे ते मुगती पोचायरे प्राणी ॥
 सा० ॥ ६ ॥ ए चरणे प्राणी शातारे पावे,
 पावे ते लोल विलासरे प्राणी; जन्म जरा अ-
 ने मरण मिटावे, नावे फरी गर्भावासरे प्रा-
 णी ॥ सा० ॥ ७ ॥ एक वचन ए संतगुरु केरो,
 जो बेसे दीलमांयरे प्राणी; नरक गतिगां
 ते नहि जावे, एम कहे जीनरायरे प्राणी
 ॥ सा० ॥ ८ ॥ प्रभाते उठीने उत्तम प्राणी;
 सूणो साधारो व्याख्यान रे प्राणी; ए
 पुरुषारी सेवा करतां, पावे ते अमर विमान
 रे प्राणी ॥ सा० ॥ ९ ॥ संवत अठार ने वर्ष

अडत्रीसे! बुसी ते गाम चोमास रे प्राणी;
 मुनि आस्करणजी एणीपेरे जंपे, हुंतो उत्तम
 साधारो दास रे प्राणी; साधुजीने वंदणा
 नित नित कीजे ॥ १० ॥ समाप्तम् ॥

अथ श्री साधु वंदना लिख्यते.

नमुं अनंत चोवीशी, ऋषभादिक महा-
 वीर; आर्य क्षेत्रमां घाली घर्मनी सीर ॥ १ ॥
 महा अतुल्य बलिनर, शुरवीर ने धीर;
 तीर्थ प्रवर्त्तावी, पहोत्या भवजल तीर ॥ २ ॥
 श्रीमंधर प्रमुख, जधन्य तीर्थंकर वीश; छे
 अढीद्वीपमां, जयवंता जगदीश ॥ ३ ॥ एक
 शोने शितेर, उत्कृष्टा पदे जगीश, धन्य म-
 होटा प्रभुजी, जेहने नमावुं शीश ॥ ४ ॥ के-
 वली दोय कोडी; उत्कृष्टा नव क्रोड; मुनि

दोय सहस्र कोडी, उत्कृष्ट नव सहस्र
 क्रोड ॥५॥ विचरे विदेहे, महोटा तपस्वी
 घोर, भाषे कंगी बंदु, टाले भवनी खोड ॥
 ॥ ६ ॥ चोवीशे जिनना, सघळा ए गणधार;
 चउदसेने बाबन, ते प्रणमुं सुखकार ॥ ७ ॥
 जिनशासन नायक, धन्य श्री वीर जिणंद;
 गौतमादिक गणधर; वर्त्ताव्यो आणंद ॥
 ८ ॥ श्री रिषभदेवना भरतादिक सो पुत;
 वैराग्य मन आणी, संयम लियो अदभुत ॥
 ९ ॥ केवळ उपराजी, करि करणी करतुत;
 जिनमत दीपावी, सघळा मोक्ष पहुंत ॥१०॥
 श्री भरतेश्वरना, हुवा पटोधर आठ, आ-
 दित्य जशादिक, पळोत्या शिवपुर वाट ॥
 ॥ ११ ॥ श्री जिन अंतरना, हुंवा पाट असं-
 ख्य; मुनि मूक्ति प्पहोत्या; टाली कर्मनो बंक

॥ १२ ॥ धन्य कपिल मुनिवर, नमी नम्र
अणगार; जेणे तत्क्षण त्याग्यो, सहस्र र-
मणी परिवार ॥ १३ ॥ मुनिवर-हरकेशि
चित्त मुनिश्वर सार, शुद्ध संयम पाली, पा-
म्या भवनो पार ॥ १४ ॥ वली इखुकार रा-
जा, घेर कमळावती नारं; भगु ने जसा,
तेहना दोग्य कुमार ॥ १५ ॥ छये छति रिद्धि
छांडीने, लीधो संयम भार; इम अल्पका
लमां, पाम्या मोक्ष द्वार ॥ १६ ॥ वली
संजती राजा, हरण आहिडे जाय; मुनिवर
गद भाली, आण्यो मारग ठाय ॥ १७ ॥
चारित्र लइने, भेटया गुरुना पाय; क्षत्री
राज रुषीश्वर, चर्चा करी चित्त लाय ॥ १८ ॥
वली दशे चक्रवर्ति, राज्य रमणी ऋद्धि
छोड; दशे मुक्ति महोंत्या, कुलने सांभा-

चहोड ॥ १९ ॥ इण अवसर्पिणीमां, आठ
 राम गया मोक्षः बलभद्र मुनिश्वर, गया,
 पंचमे देवलोक ॥ २० ॥ दशार्णभद्र राजा,
 वीर बांध्या धरि मान; पछे इंद्र हटायो,
 दियो छकाय अभेदान ॥ २१ ॥ करकंडु प्र-
 मुख, चारे प्रत्येक बोध; मुनि मुक्ति पहोत्या
 जीत्या कर्म महा जोध ॥ २२ ॥ धर्म्य महोटा
 मुनिवर, मृगापुत्र जगीश; मुनिवर अनार्थी,
 जीत्या रागने रीश ॥ २३ ॥ बली समुद्रपाल
 मुनि, राजिमति रहेनेम; केशीने गौतम, पा-
 म्यां शिवपुर क्षेम ॥ २४ ॥ धन्य विजयघोष
 मुनि, जयघोष बली जाण; श्री गंगाचार्य,
 पहोत्या छे निर्वाण ॥ २५ ॥ श्री उत्तराध्यय-
 नमां, जिनवरे कर्या वखाण; शुद्ध मनसें
 ध्यावो, मनमें धिरज आण ॥ २६ ॥ बली

.खंधक सैन्यासी, राख्यो गौतम स्नेह; महा-
 वीर समीपे, पंच महाव्रत लेह ॥ २७ ॥
 तप कठीण करीने, झोंशी आपणी देह;
 गया अच्युत देवलोक, चवी लेशे भव छेह
 ॥ २८ ॥ बली ऋषभदत्त मुनि, शेठ सुद-
 र्शन सार; शिवराज ऋषीश्वर, धन्य गांगेय-
 अणगार ॥ २९ ॥ शुद्ध संयम पाली, पांम्या
 केवल सार; ए चारे मुनीवर, पहोत्या मोक्ष
 मोझार ॥ ३० ॥ भगवंतनी माता, धन्य धन्यं
 सती देवानंदा; बली सती जयंति, छोडी
 दिया घरफंदा ॥ ३१ ॥ सती मुक्ति पही-
 त्यां, बली ते वीरनी नंद; महा संती सुद-
 र्शना, घणी सतियोना वृंद ॥ ३२ ॥ बली
 कार्तिक शेठे, पडिमा वही शुरवीर; जम्हो
 महोरा उपर, तापस बळीखी खीर ॥ ३३ ॥

पछी चारित्र लीधुं, मंत्री एक संहस्र आठ
 धीर; मरी हुवा शक्रेन्द्र, चवी लेशे भव
 तीर ॥ ३४ ॥ बली राय उदायन, दियो
 भाणेजने राज; पछी चारित्र लइने, सायीं
 आत्म काज ॥ ३५ ॥ गंगदत्तमुनि आणंद,
 तरणतारण जीहज; कुशल मुनि रोहो, दि-
 यो घगावे साज ॥ ३६ ॥ धन्य सुनक्षत्र मु-
 निवर, सर्वानुभूति अणगार; आराधिक
 हुइने, गया देवलोक मोझार ॥ ३७ ॥ चवि-
 मुक्ति जाशे, बलि सिंह मुनीश्वर सार; बी-
 जा पण मुनिवर, भगवतीमां अधिकार ॥
 ॥ ३८ ॥ श्रेणिकना बेटा, महोटा मुनिवर मेघ;
 तजी आठ अंतेउरी, आण्यो मन संवेग ॥
 ॥ ३९ ॥ विरपें व्रत लेइने, बांधीं तपनी तेग;
 गया विजय विमाने; चवि लेशे शिव वेग ॥

४० ॥ धन्य थावर्चा पुत्र, तजी बत्रिसे नार;
 तेनी साथे निकल्या, पुरुष एक हजार ॥ ४१ ॥
 सुकदेव सन्याशी, एक सहस्र शिष्य लार;
 पंचशयशुं सेलक, लिधो संयमभार ॥ ४२ ॥
 सर्व सहस्र अढाड, घणा जीवोने तार; पुंढर-
 गिरि उपर, कियो पादोपगमन संथार
 ॥ ४३ ॥ आराधिक हुइने, किधो खेवो
 पार; हुवा महोटा मुनिवर, नाम लिया निस्तार
 ॥ ४४ ॥ धन्य जिनपाल मुनिवर, दोय धनावा
 साध; गया प्रथम देवलोके, मोक्ष जाशे
 आराध ॥ ४५ ॥ श्री मल्लिनाथना छ मीत्र,
 महाबळ प्रमुख मुनिराय; सर्वे मूक्ति सिधा-
 व्या, महोटी पदवी पाय ॥ ४६ ॥ बलि जि-
 तसत्रुराजा, सुबुद्धि नामे प्रधान; पोते चा-
 रित्र लेइने, पाम्या मोक्ष बिधान ॥ ४७ ॥

धन्य तेतलि मुनिवर, दियो छकाय अभेदा-
 न; पोटिला प्रतिबोध्या, पाभ्या केवलज्ञान
 ॥ ४८ ॥ धन्य पांचे पांडव, तजी द्रौपदी
 नार; स्थिरवरनी पासे, लियो संयम भार ॥
 ४९ ॥ श्री नेमिवंदननो, एहवो अभीग्रह की-
 ध; मास मासखमण तप, शेरुंजय जई सिद्ध
 ॥ ५० ॥ धर्मघोष तणा शिष्य, धर्मरुचि अण-
 गार; किडियोनी करुणा, आणी दया अपार
 ॥ ५१ ॥ कडुवा तुंबानो किधो सघळो
 अहार; सर्वार्थसिद्ध पडोल्या, चवि लेशे भव-
 पार ॥ ५२ ॥ वली पुंडरिक राजा, कुंड-
 रीक डगीयो जाण; पोते चारित्र लेइने,
 न घाली धर्ममां हाण ॥ ५३ ॥ सर्वार्थसीद्ध
 पडोल्या, चवि लेशे निर्वाण; श्री ज्ञातामू-
 त्रमां, जिनवरे कर्यो बरवाण ॥ ५४ ॥ गौत-

मादिक कुमर, सगा अढारे भ्रात; सर्व अं-
 धकं विष्णु सुत, धारणी ज्यारी मात ॥
 ५५ ॥ तजी आठ अंतेउरी, काढी दिक्षानी
 वात; चारित्र लेइने, कीधो मुक्तिनो साथ
 ॥ ५६ ॥ श्री अनेक सेनादिक, छये सहोदर
 भाय; वसुदेवना नंदन, देवकी ज्यारी माय
 ॥ ५७ ॥ भद्दीलपुर नगरी, नाग गांहावई
 जाण; सुलसा घेर वधिया, सांभली नेमिनी
 वाण ॥ ५८ ॥ तजी बत्रीश बत्रीश अंतेउरी,
 निकलीया छट्काय; नल कुवेर समाणा,
 भेट्या श्री नेमिना पाय ॥ ५९ ॥ करी छठ
 छठ पारणां, मनमें वैराग्य लाय; एक मास
 संधारे मुक्ति बीराज्या जाय ॥ ६० ॥ बली
 दारुक सारण, सुमुख दुमुख मुनिराय; बली
 कुमर अनादृष्टि, गया मुक्तिगूढ मांय ॥ ६१ ॥

वसुदेवना नंदन, धन्य धन्य गवासुकुमाल;
 रूपे अति सुंदर, कलावंत बय बाल ॥ ६२ ॥
 श्री नेमि समीपे, छोट्यो मोह जंजाल; भी-
 क्षुनी पडिमा, गया मशाण महाकाल ॥
 ॥६३॥ देखी सोमील कोप्यो, मस्तके बांधी
 पाल; खेरना खीरा, शीर ठविया असराल
 ॥ ६४ ॥ मुनि नजर न खंडी, पेटी मननी
 पाल ॥ परीसह सहीने, मूर्ति गया ततकाल ॥
 ॥ ६५ ॥ धन्य जाली मयाली, उवयालादिक
 साध; सांबने प्रद्युमन, अनीरुद्ध साधु अगाध
 ॥६६॥ बली सचनेमी दृढनेमी, करणी कीर्धी
 बाद; दशे मुनि मुगते पहोल्या, जिनवर वचन
 आराध ॥६७॥ धन्य अर्जुनमाली, कयों कदा-
 ग्रह दूर; वीरपे व्रत लेइने, सत्यवादी हुवा
 शुर ॥६८॥ करी लठ छठ पारणां, क्षमा क-

री भरपुर, छ मासमांही, कर्म कियां चक-
 चुंर ॥ ६९ ॥ कुमार अश्मुते, दीठा गौतम
 स्वाम; सुणी वीरनी वाणी, कीधो उत्तम
 काम ॥ ७० ॥ चारित्र लइने, पहोंत्या शिव-
 पुर ठाम, धूर आदि मकाइ, अंत अलक्ष
 मुनि नाम ॥ ७१ ॥ बळी कृष्णरायनी, अग्र-
 महीषी आळ, पुत्र बहु दोये, संच्या पुण्यना
 ठाठ ॥ ७२ ॥ यादवकुल सतियां, टाळी दुःख
 उचाट, पहोंत्या शिवपुरमें, ए छे सुत्रनो पा-
 ठ ॥ ७३ ॥ श्रेणिकनी राणी, काळियादिक
 दश जाण; दशे पुत्र वियोगे, सांभळी वी-
 रनी वाण ॥ ७४ ॥ चंदनबाळापे, संजम लेइ
 हुवा जाण; तप करी देह झोशी, पहोंत्या
 छे निर्वाण ॥ ७५ ॥ नंदादिक तेरे, श्रेणिक
 नृपनी नार; सघळी चंदनबालापे, लीधो

संजम भार ॥ ७६ ॥ एक मास संधारे, पहो-
 त्या मृत्ति मोक्षार; ए नेवुं जणानो, अंत-
 गडमां अधिकार ॥ ७७ ॥ श्रेणिकना वेटा,
 जालियादिक तेवीस; विरपें व्रत लेइने, पा-
 ल्यो विश्वावीश ॥ ७८ ॥ तप कठन करीने,
 पूरी मन जगीश; देवलोके पहोत्या, मोक्ष
 जाशे तजी रीस ॥ ७९ ॥ काकंदिनो धन्नो,
 तजी बुत्रीसे नार; महावीर समीपे, लीधो
 संजम भार ॥ ८० ॥ करी छठ छठ पारणां,
 आयंबिल उछीत्त अहार; श्री वीरे वखा-
 प्या, धन्य धन्नो अणगार ॥ ८१ ॥ एक मास
 संधारे; सर्वार्थसिद्ध पहोंत; महाविदेह क्षे-
 त्रमां करशे भवनो अंत ॥ ८२ ॥ धन्नानी रीते,
 हुवा नवे संत; श्री अनुत्तरोर्ववाइमां, भांखी
 गया भगवंत ॥ ८३ ॥ सुबाहु प्रमुख, पांच

पांचसैं नार; तजी वीरपें लीधां, पंच महा-
 व्रत सार ॥८४॥ चारित्र लेइने, पाल्यो निर-
 तिचार, देक्लोके पहोंत्यर, सुखविप्राप्के अ-
 धिकार ॥ ८५ ॥ श्रेणिकना पौत्रा, पौमादिक
 हुवा दस; वीरपें व्रत लइने, काढेयो देहनो
 कस ॥ ८६ ॥ संयम आरार्थी, देवलोकमां जइ
 वश; महाविदेह क्षेत्रमां, मोक्ष जाशे लेइ
 जश ॥ ८७ ॥ बलभद्रना नंदन, निषथादिक
 हुवा बार; तजी पचाश; अंतेउरी त्याग दि-
 यो संसार ॥ ८८ ॥ सहु नेमि समिपे, चार
 महाव्रत लीध; सर्वार्थसिद्धि पहोंत्या, होशे
 विदेह शिद्ध ॥ ८९ ॥ धम्नो ने शालिभद्र,
 मुनिश्वरोनी जोड, नारीना बंधन, ततक्षण
 नाख्यां तोड ॥९०॥ घरकुटुंब कबीलो, धन
 कंचननी क्रोड, मास मासखमण तप, टाळशे

भवनी खोड ॥ ९१ ॥ श्रीसुधर्मास्वामीना शि-
 ष्य, धन्य धन्य जंबुस्वाम; तजी आठ अंते-
 उरी, मातपिता धन धाम ॥ ९२ ॥ प्रभवा-
 दिक तारी, पहोंत्या शिवपूर ठाम; सुत्र प्र-
 वर्तावी, जगमां राख्युं नाम ॥ ९३ ॥ धन्य
 ढंढण मुनिवर, कृष्णरायना नंद, शुद्ध अभि-
 ग्रह पालि, टाली दीयो भव फंद ॥ ९४ ॥ बली
 खंधक ऋषिनी, देह उतारी खाल, परीसह
 सहीने, भव फेरा दिया टाल ॥ ९५ ॥ व-
 ली खंधक ऋषिना, हुवा पांचसैं शिष्य,
 घाणीमां पिल्या, मुक्ति गया तजी रीस ॥ ९६ ॥
 संभुतिविजय शिष्य, भद्रबाहु मुनीराय;
 चउद पुरवधारी, चंद्रगुप्त आण्यो ठाय
 ॥ ९७ ॥ बळी आद्रकुमार मुनि, स्थूलीभद्र
 नंदिषेण, अरुणिक अइमुत्तो, मुनिश्वरोनी

श्रेण ॥ ९८ ॥ चोवीसैं जिननां मुनीवर, सं-
 ख्या अठावीस लाख; उपर सहस्र अडता-
 लीस, सुत्रं परंपरा भांख ॥ ९९ ॥ कोइ उ-
 त्तम बांचो, मोढे जयणा राख; उघाडे मुख
 बोल्यां पाप लागे इम भांख ॥ १०० ॥ धन्य
 मरूदेवी माता, ध्यायुं निर्मळ ध्यान; गज-
 होदे पायुं, निर्मळ केवलज्ञान ॥ १०१ ॥
 धन्य आदेश्वरनी पुत्री, ब्रह्मी सुंदरी दोय;
 चारित्र लेइने, मुक्ति गयां सिद्ध होय.
 ॥ १०२ ॥ चोवीसे जिननी, बडी शिष्यणी
 चोवीस; सती मुक्ति पहुँल्यां, पूरी मन ज-
 गीस ॥ १०३ ॥ चोवीसैं जिननी, सर्व साधवी
 सार, अडतालीस लाख ने आठसैं शितेर
 हजार ॥ १०४ ॥ चेडानी पुत्री, राखी धर्म-
 शुं प्रीत; राजिमती विजया, मृगावती सुवि-

नित ॥ १०५ ॥ पद्मावती मयणरेहा, द्रौपदी
 दमयंती सीता; इत्यादिक सतियो, गइ
 जन्मारो जूत ॥ १०६ ॥ चोवीसे जिनना
 साधु साधवी सार; गया मोक्ष देवल्लोके
 हृदये राखो धार ॥ १०७ ॥ इण अढीद्वी-
 पमां, घरडा तपस्वी बाल; शुद्ध पंच महा-
 ब्रह्म धारी; नमो नमो तिण काल ॥ १०८ ॥
 ए जतियो सतियोनां, लीजे नित प्रते नाम;
 शुद्धे मन ध्यावो, एह तरणनो ठाम
 ॥ १०९ ॥ ए जतियो सतियोशुं, राखो उ-
 ज्वल भाव; एम कहे ऋषि जेमलजी, एह
 ज तरणनो दाव ॥ ११० ॥ संवत अढारने,
 वरस सातो शिरदार; गढ झालोरमां एह
 कब्बो अधिकार ॥ १११ ॥ समाप्तम् ॥

॥ अथ वैराग्य उपदेशक दोहा. ॥

दया सुखनी वेळडी, दयां सुखनी खा-
 ण ॥ अनंत जीव मुक्ते गया, दया तणा फल
 जाण ॥ १ ॥ हींसा दुःखनी वेळडी, हींसा
 दुःखनी खाण ॥ अनंत जीव नरके गया,
 हींसा तणा फल जाण ॥ २ ॥ चेतोरे भंबी
 प्राणीया, ए संसार असार ॥ स्थीरता कोई
 दीसे नहीं, धन जोवन परीवार ॥ ३ ॥ धर्म
 करो तमे प्राणीया; धर्म थकी सुख होय ॥
 धर्म करंता जीवने, दुःखीया न दीठा कोय
 ॥४॥ जीव दया पाळी सही, पाळी छे छ काय ॥
 बस्ता घरनो प्राहुणो, मीठां भोजन खाय
 ॥ ५ ॥ जीव दया पाळी नहीं, पाळी नहीं
 छ काय ॥ सूना घरनो प्राहुणो, जेम आव्यो

तेम जाय ॥ ६ ॥ रत्न पडयुं छे बजारमां,
 रह्यो गरद लपटाय ॥ मुख जाणे कांकरो,
 चतुरे लोयो उठाय ॥ ७ ॥ चौटा केरे बजा-
 रमें, लांबा पान खजुर ॥ चढे तो चाखे
 प्रेमरस, पडे तो चकना चुर ॥ ८ ॥ ए शी-
 खामण साची कही, सर्वने हीतकार ॥ कां-
 इक दया करुणा राखजो, तमे सांभळयानुं
 परीमाण ॥ ९ ॥ खरो मारग वीतरागनो,
 सुक्ष्म जेना भेद ॥ शाणा थडने सरदजो; मन-
 मां राखो उमेद ॥ १० ॥ डगाव्या डगजो
 मती, निश्चय राखजो मन ॥ हींसार्थी रहेजो
 वेगळा, कहेवाशो धन धन ॥ ११ ॥ ठील
 न कीजे धर्मनी, तप जप लीजे लुंठ ॥ जेशी
 सीसी काचकी, जाय पलकमें फुट ॥ १२ ॥
 दुक्ष्म आरो पंचमो, निश्चळ राखजो मन ॥

थोढामां नफों घणो, जेम कुंडामांही रतन
 ॥ १३ ॥ साधु चंदन बावना, शीतल जा-
 को अंग ॥ लेहेर उतारे भुजंगकी, देवे ज्ञा-
 नको रंग ॥ १४ ॥ साधु बडे परमारथी,
 मोटो जीनको मन ॥ भर-भर सुष्टी देतहे,
 धर्म रुपीयो धन ॥ १५ ॥ हल्ल करमी जीवने,
 रुचे ए उपदेश ॥ खरो मारग वीतरागनो,
 जेमां कुड नही लवलेश ॥ १६ ॥

॥ सञ्जाय प्रकरण समाप्त ॥



श्री भक्तामर स्तोत्र.

(वसंततिलका वृत्तम्.)

भक्तामरप्रणतमौलिमणि प्रभाणा,
 मृद्योतकं दलितपापतमो वितानम् ॥
 सम्यक् प्रणम्य जिन पादयुगं युगादा,
 बालंबनं भवजलेः पततां जनानाम् ॥ १ ॥
 यः संस्तुतः सकलवाङ्मयतत्त्वबोधा
 दुद्भूतबुद्धिपटुभिः सुरलोकनाथैः ॥
 स्तोत्रैर्जगत्रितयचित्तरुदरैः
 स्तोष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम् ॥ २ ॥
 बुद्ध्या विनापि विबुधार्चितपादपीठ,
 स्तोतुं समुद्यतमतिर्विगतत्रपोऽहम् ॥
 बालं विहाय जल संस्थितमिदुर्बिम्ब,
 मन्यः क इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुम् ॥ ३ ॥

वक्तुं गुणान् गुणसमुद्रं शशाङ्ककांतान् ,
 कस्ते क्षमः सुरगुरुप्रतिमोऽपि बुद्ध्या ॥
 कल्पांतकालपवनोद्धत नक्रचक्रं,
 कोवा तरीतुमलमंबुनिधिं भुजाभ्याम् ॥ ४ ॥
 सोऽहं तथापि तव भक्तिवशान्मुनीश,
 कर्तुं स्तवं विगत शक्तिरपि प्रवृत्तः ॥
 प्रीत्यात्मवीर्यमविचार्य मृगो मृगेंद्रं,
 नाभ्येति किं निजशिशोः परिपालनार्थम् ॥ ५ ॥
 अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहासधाम,
 त्वद्भक्तिरेव मुखरी कुरुते बलान्माम् ॥
 यत्कोकिलः किल मधौ मधुरं विरौति,
 तच्चारुचाम्रकलिकानिकरैकहेतुः ॥ ६ ॥
 त्वत्सं स्तवेन भवसंताति संन्निबद्धं,
 पापं क्षणात्क्षयमुपैति शरीरभाजाम् ॥
 आक्रांतलोकमलि नीलमशेषमाशु,

सूर्याशुभिन्नमिवशार्वरमंधकारम् ॥ ७ ॥

मत्वेति नाथ तव संस्तवनं मयेद,
मारभ्यते तनुधियापि तव प्रभावात् ॥
चेतो हरिष्यतिसतां नलिनीदलेषु,
मुक्ता फलद्युतिमुपैति ननुदर्विदुः ॥ ८ ॥

आस्तां तव स्तवनमस्त समस्तदोषं,
त्वत्संकथापि जगतां दुरितानिहंति ॥
दुरे सहस्रकिरणः कुरुते प्रभैव
पद्माकरेषु जलजानि विकाशभाजि ॥ ९ ॥

नात्यद्भूतं भुवनभूषणभूतनाथ,
भूतैर्गुणैर्भुवि भवंतमभिष्टुवंतः ॥

तुल्याभवन्ति भवतो ननु तेन किं वा,
भूत्याश्रितं, यइह नात्मसमं करोति ॥ १० ॥
दृष्ट्वा भवंतमनिमेष विलोकनीयं,
नान्यत्र तोषमुपयाति जनस्य चक्षुः ॥

पीत्वा पयः शशिकरद्युतिदुग्धसिन्धोः,
 क्षारं जलं जलनिधेरशितुं क इच्छेत् ॥ ११ ॥
 यैः शांतरागं रुचिभिः परमाणुभिस्त्वं,
 निर्मापितस्त्रिभुवनैकललामभूत ॥
 तावन्तएव खलु तेप्यणवः पृथिव्यां,
 यत्ते समानमपरं नहि रूपमस्ति ॥ १२ ॥
 वक्रं क ते सुरनरोगनेत्रहारि,
 निःशेषनिर्झितजगत्रितयोपमानम् ॥
 बिम्बं कलंकमलिनं क निशाकरस्य,
 यद्दासरे भवति पांडुपलाशकल्पम् ॥ १३ ॥
 संपूर्णमंडल शशांक कलाकलाप,
 शुभ्रा गुणास्त्रि भुवनं तव लंघयन्ति ॥
 ये संश्रितास्त्रिजगदीश्वर नाथमेकं,
 कस्तान्निवारयति संचरतो यथेष्टम् ॥ १४ ॥
 चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशांग नाभि-

नीतं मनागति मनो न विकारमार्गम् ॥
 कल्पांतकालमरुता चलिताचलेन,
 किं मंदराद्रिशिखरं चलितं कदाचित् ॥१५॥
 निर्धुमवर्त्तिरपवर्द्धिततैलपूरः,
 कृत्स्नं जगत्रयमिदं प्रकटीकरोषि ॥
 गम्योन जातु मरुतां चलिताचलानां,
 दापोऽपरस्त्वमसि नाथ जगत्प्रकाशः ॥१६॥
 नास्तं कदाचिदुपयासि न राहुगम्यः,
 स्पष्टीकरोषि सहसा युगपज्जगंति ॥
 नांभोधरोदरनिरुद्धमहाप्रभाव,
 सूर्यातिशायिमहिमासि मुनींद्र लोके ॥१७॥
 नित्योदयं दलितमोहमहांधकारं,
 गम्यं न राहुवदनस्य न वारिदानाम् ॥
 विभ्राजते तव मुखाब्जमनल्पकांति,
 विध्योतयज्जगदपूर्वज्ञशांकर्विवम् ॥ १८ ॥

किं शर्वरीषु शशिनाऽहि विवस्वता वा,
 युष्मन्मुखेदुदलितेषु तमस्सु नाथ ॥
 निष्पन्नशालि वनशालिनि जीव लोके,
 कार्यं कियज्जलरैर्जलभार नम्रैः ॥ १९ ॥
 ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशं,
 नैवं तथा हरिहरादिषु नायकेषु ॥
 तेजः स्फुरन्मणिषु याति यथा महत्त्वं,
 नैवंतु काचशकले किरणाकुलेपि ॥ २० ॥
 मन्ये वरं हरिहरादय एव दृष्टा,
 दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति ॥
 किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः,
 वश्चिन्मनोहरति नाथ भवांतरेपि ॥ २१ ॥
 स्त्रीणां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्,
 नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता
 सर्वादिशो दधति भूनि सहस्ररश्मि,

प्राच्येव दिग्जनयति स्फुरदंशुजालम् ॥२२॥
 त्वामामनन्ति मुनयः परमं पुमांस,
 मादित्यवर्णममलं तमसः पुरस्तात् ॥
 त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयन्ति मृत्युं,
 नान्यः शिवः शिवपदस्य मुनीन्द्र पन्थाः ॥२३॥
 त्वामव्ययं विभुमर्चित्यमसंख्यमाद्यं,
 ब्रह्माणमीश्वर मनन्तमनंगकेतुम् ॥
 योगीश्वरं विदितयोगमनेकमेकं,
 ज्ञानंस्वरूपममलं प्रवदन्ति संतः ॥ २४ ॥
 बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चितबुद्धिबोधात्,
 त्वं शंकरोसि भुवनत्रयशंकरत्वात् ॥
 धातासि धीर शिवमार्ग विधेर्विधाना,
 व्यक्तंत्वमेव भगवत्पुरुषोत्तमोऽसि ॥२५॥
 तुभ्यं नमास्त्रिभुवनार्त्तिहरागनाथ,
 तुभ्यं नमः क्षितितलामलभूषणाय ॥

तुभ्यं नमः स्त्रिजगतः परमेश्वराय,
 तुभ्यं नमो जिनभवोदधिशोषणाय ॥ २६ ॥
 को विस्मयोंऽत्र यदि नाम गुणैरुशैषै,
 स्त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश ॥
 दोषैरुपात्तविविधाश्रय जातगर्वैः
 स्वप्नांतरेऽपि न कदाचिदपीक्षितोऽसि ॥ २७ ॥
 उच्चैरशोकतरुसंश्रितमुन्मयूख,
 गाभाति रूपममलं भवतोनितातम् ॥
 स्पष्टोल्लसत्किरणमस्ततमोवितानं,
 बिंब खेरिव पयोधरपार्श्ववर्ति ॥ २८ ॥
 सिंहासने मणिमयुखशिखाविचित्रे,
 विभ्राजते तव वपुः कनकावदातम् ॥
 बिंबं वियद्विलसदंशुलतावितानं,
 तुंगोदयाद्रिशिरसीवसहस्ररश्मेः ॥ २९ ॥
 कुंदावदात चलचामरचारुशोभं,

विभ्राजते तव वपुः कलधौतकांतम् ॥
 उद्यच्छशांकशुचिनिर्जरवारिधार,
 मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौभम् ॥ ३० ॥
 छत्र त्रयं तव विभाति शशांककांत,
 मुच्चैः स्थितं स्थगितभानुकरप्रतापम् ॥
 मुक्ताफलप्रकरजालविवृद्ध शोभं,
 प्रख्यापयत्रिजगतः परमेश्वरत्वम् ॥ ३१ ॥
 गंभीरतारर वपुरितदिग्विभाम,
 स्वैलोक्यलोकशुभसंगमभूतिदक्षः ॥
 सद्धर्मराजजयघोषणघोषकः सन्,
 खे दुंदुभिर्ध्वनति ते यशसः प्रवादी ॥ ३२ ॥
 मंदारसुंदर नमेरुसुपारिजात,
 संतानकादिकुसुमोत्करवृष्टिरुद्धा ॥
 गंधोदविंदुशुभमंदमरुत्प्रपाता,
 दिव्या दिवः पतति ते वज्रसां ततिर्वा ॥ ३३ ॥

शुभत्प्रभावलयभुरिविभा विभोःते,
 लोकत्रयद्युतिमतां ध्युतिमाक्षिपन्ती ॥
 प्रोच्यत् दिवाकरनिरंतरभुरिसंख्या,
 दीप्त्याजयत्यपि निशाभपि सोमसौम्याम् ।३४।
 स्वर्गापवर्गगममार्गविद्मार्गणेषु,
 सद्धर्मतत्त्वकथनैकपटुस्त्रिलोक्या ॥
 दिष्यध्वनिमवति ते विशदार्थसर्व,
 भाषास्वभावपरिणामगुणैःप्रयोज्यः ॥ ३५ ॥
 उन्निद्रहेमनवपंकजपुंजकांति,
 पर्युल्लसन्नखममूख शिखाभिरामौ ॥
 पादो पदानि तव यत्र जिनेन्द्र धत्तः;
 पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयन्ति ॥ ३६ ॥
 इत्थं यथा तव विभुतिरभुज्जिनेन्द्र,
 धर्मोपदेशनविधौ न तथा परस्य ॥
 यादृक्प्रभा दिनकृतः प्रहतोवधकारा,

तादृक्कृतो ग्रहगणस्य विकाशिनोपि ॥ ३७ ॥
 श्रयोतन्मदाविलविलोलकपोलमूल,
 मत्त भ्रमद् भ्रमर नादविवृद्धकोपम् ॥
 ऐरावताभमिभसुद्वत्तमापतन्तं,
 दृष्ट्वाभयं भवतिनो भवदाश्रितानाम् ॥ ३८ ॥
 भिन्नेभकुंभगळदुज्वल शोणिताक्त,
 सुक्ताफलप्रकार भूषित भूमिभागः ॥
 बद्धक्रमः क्रमगतं हरिणाधिपोऽपि,
 नाक्रामति क्रमयुगा चलसंश्रितं ते ॥ ३९ ॥
 कल्पांतकालपवनोद्धतवह्निकल्पं,
 दावानलं ज्यलितमुज्जमुत्फूर्लिंगम् ॥
 विश्वं जिधत्सुमिव संमुखमापतंतं,
 त्वन्नामकीर्त्तनजलं समयत्यशेषम् ॥ ४० ॥
 रक्तक्षणं समदकोकिलकंठनील,
 क्रोधोद्धतं फणिनमुत्क्षणमापतंतम् ॥

आक्रामति क्रमयुगेन निरस्तशंक;
 स्त्वन्नामनागदमनीहृदियस्यपुंसः ॥ ४१ ॥
 वल्गतुरंगगजगर्जितभीमनाद,
 माजौ बलं बलवतामपि भूपतीनाम् ॥
 उद्यद्दिवाकरमयूखशिखापविद्धं,
 त्वत्कीर्तनात्तमइवाशुभिदामुपौति ॥ ४२ ॥
 कुताग्रभिन्नगजशोणित वारिवाह,
 वेगावतारतरणातुरयोधभीमे ॥
 युद्धे जयं विजितदुर्जयजेयपक्षा,
 स्त्वत्पादपंकजवनाश्रयिणो लभन्ते ॥ ४३ ॥
 अभोनिधौ क्षुभितभीषणनक्रचक्र,
 पाठीनपीठभयदोल्बणवाडवाग्नौ ॥
 रंगत्तरंगशिखरस्थितयानपात्रा,
 स्त्रासं विहाय भवतः स्मरणादब्रजन्ति ॥ ४४ ॥
 उद्भूतभीषणजलोदर भारेभुग्नाः,

शोच्यांदशामुपगताश्च्युत जीविताशाः
 त्वत्पादपंकजरजोमृतदिग्धदेहा,
 मर्त्या भवंति मकरध्वंजतुल्यरूपाः ॥ ४५ ॥
 आपादकंठ मुरुशृंखलवेष्टितांगा,
 गाढं बृहन्निगडकोटि निघृष्टजंघाः ॥
 त्वन्नाममंत्रमनिशं मनुजाः स्मरंतः
 सद्यः स्वयं विगतबंधभया भवंति ॥ ४६ ॥
 मत्त द्विपेंद्रमृगराज दवानलाहि,
 संग्राम वारिधिमहोदरबंधनोत्थम् ॥
 तस्याशु नाशमुपयाति भयं भियेव,
 यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते ॥ ४७ ॥
 स्तोत्रस्रजं तव जिनेंद्र गुणैर्निबद्धां,
 भक्त्या मयारुचिरवर्णाविचित्रपुष्पाम् ॥
 धत्ते जनो य इह कंठगतामजस्रं,
 तं मानतुंगमवशा सम्रपैति लक्ष्मीः ॥ ४८ ॥

॥श्री चिन्तामणिं पार्श्वनाथस्तोत्र॥

(शार्दूलछंद.)

किं कर्पूरमयं सुधारसमयं किं
चन्द्रोचिर्मयं । किं लावण्यमयं
महामणिमयं कारुण्यकेलिमयम् ॥
विश्वानन्दमयं महोदयमयं शोभा-
मयं चिन्मयं । शुक्लध्यानमयं वपु-
र्जिनपतेर्भूयाद्भवास्त्रम्बनम् ॥ १ ॥

भावार्थः—श्री जीनेंद्र भगवाननुं शरीर
अहा ! कर्पूर जेवुं श्वेत, अमृत जेवुं मीष्ट, चं-
द्रनी कान्ति जेवुं शीतळ अने प्रकाशीत; सुंदर
मोटा मणी जेवुं तेजस्वी, कारुण्यतानी भुमी-
कारूप, समग्र विश्वमे ओनंदमय, महा उदय-

वाळं, शोभावाळं, सचीत स्वरूप, शुद्ध ध्यानमां
निमग्न, एवा श्री जिनेन्द्र भगवान संसारना
आधार भूय हो. ॥ १ ॥

पाताळं कलयन् धरां धवल-
यन्नाकाशमापूरयन् । दिक्चक्रं क्र-
मयन् सुरासुरनरश्रेणींच विस्मापयन्
ब्रह्माण्डं सुखयन् जलानि जलधेः
फेनहृत्ताह्वोलयन् । श्रीचिन्तामणि
पार्श्वसंज्ञवयशोहंसश्चिरं राजते ॥१॥

भावार्थः—पाताळमां पण प्रवेश करी र-
हेलो, पृथ्वीने उज्ज्वल करतो, आकाशमां सर्व
स्थळे व्याप्त थतो, दिशाओना चक्रने पण उ-
लंधी जतो, देव दानवोने विस्मय पमाडतो,
त्रणे जगतने सुख आपतो; समुद्रमां श्वेत फी-

पृथी शोभायमान जळने ढहोळी नांखतो; एवो
श्री पार्श्वनाथ चिंतामणीनो यशरूपी हंस चीरं-
काल शोभें छे. ॥ २ ॥

पुण्यानां विपणिस्तमोदिनमणिः
कामेज्जकुम्भेशृणिमोक्षे निस्सरणिः
सुरेन्द्रकरिणी ज्योतिःप्रकाशारणिः॥
दाने देवमणिर्नतोत्तमजन श्रेणः
कृपासारिणी । विश्वानन्दसुयाघृणिः
र्जवज्जिदे श्रीपार्श्वचिन्तामणिः ॥३॥

भावार्थः—पुण्याना हाट (भंडार) रूप,
पापरूपी अंधकारमां सूर्यरूप, विषयरूपी हाथीने
बश करवामां अंकुशरूप, मोक्षमां गमन करवा
माटे निसरणीरूप, आत्मज्ञान रूप ज्योतीने प्र-

काश आपवामां अरणीना वृक्ष समान, दान
 देवामां इन्द्र समान, एमनी (श्री पार्श्वनाथनी)
 आगळ जेपन करी रहेली सज्जन पुरुषोनी पं-
 क्तिने कृपानी नदी समान, विश्वमां आनंदरूपी
 अमृतना तरंग समान श्री पार्श्वचिंतामणी
 (भगवान) संसारसमुद्रनो नाश करनार
 आपज छो. ॥ ३ ॥

श्री चिन्तामणि पार्श्वविश्वजनता-
 संजीवनस्त्वं मया । दृष्टस्तात ततः
 श्रियः समज्जवन्नाशक्रमाचक्रिणम् ॥
 मुक्तिं क्रीडति हस्तयोर्बहुविधं
 सिद्धं मनोवाञ्छितं । दुर्दैवं दुरितंच
 दुर्दिनज्जयं कष्टं प्रणष्टं मम ॥ ४ ॥

ભાવાર્થ:—હે તાત ! (હે શ્રી ચિંતામણી પાર્શ્વનાથ !) આશ્વા વિશ્વના જીવનરૂપ, સંઘી-
 દાનંદ શ્રી ચિંતામણી માર્શ્વનાથ જ્યારથી મને
 આપનાં દર્શન થયાં છે, ત્યારથીજ ઇન્દ્ર દેવ
 તથા ચક્રવર્તિ પર્યંતની સમૃદ્ધી મને પ્રાપ્ત થઈ
 છે. મારા હસ્તમાંજ મુક્તિરૂપી દેવી ક્રીડા
 કરી રહી છે, મારી વિવિધ પ્રકારની મનની
 અભિલાષાઓ સિદ્ધ થઈ છે, અને મારું દુર્દેવ,
 મારું પાપ અને મારું દુઃખ તથા મારો દારીદ્ર-
 તાનો ભય સમૂલ નાશ પામ્યો છે. ॥ ૪ ॥

यस्य प्रौढ तमप्रतापतपनः प्रो-
 ह्नामधामा जग-जंघालः कलि-
 काक्षकेलिदलनो मोहान्धविध्वंसकः
 ॥ नित्योद्योतपदं समस्तकमलाके-

स्निग्धं राजते । स श्रोपार्श्वजिनो
जनेहितकृते चिन्तामणिः पातु
माम् ॥ ५ ॥

भावार्थ—हे अतिशय प्रतापवान् सूर्यरूप,
अति उत्कृष्ट जगत् रूपी धामने तथा कळीकाळ-
क्षा महिमाने दहन करनारा, मोहरूपी अंधका-
रनो नाश करनारा, अने जेनुं समस्त प्रकारनी
समृद्धी धारण करनार पद हमेश शोभी रह्युं छे
एवा श्री पार्श्वनाथ भगवान् जगतना जीवोनुं
हीत करनार चिन्तामणी मारुं रक्षण करो. ॥५॥

विश्वव्यापितमो हिनस्ति त-
रणिर्बालोपि कटपाङ्कुरो । दारिद्राणि
गजावलीं हसिशिशुः काष्ठानि बह्वेः

કળ: ॥ પીયૂષસ્ય સ્વોપિ રોગનિવહં
 યદ્વત્તથા તે વિજ્ઞો । મૂર્તિઃ સ્ફૂર્તિ-
 મતી સંતો ત્રિજગતોકષ્ઠાનિ હર્તુ
 ક્ષમા ॥ ૬ ॥

ભાવાર્થ:—સૂર્ય બાલ્યાવસ્થામાં હોવા છતાં
 પણ વિશ્વમાં વ્યાપી રહેલા અંધકારનો નાશ
 કરે છે, કલ્પવૃક્ષનો એકજ અંકુર (ફળગો)
 દારિદ્રતાનો નાશ કરવામાં સમર્થ છે, સિંહનું
 એક નાનું બાલકજ હાથીઓના સમુહનો નાશ
 કરે છે, અગ્નિનો એક સુક્ષ્મ કળ કાષ્ટના જથ્થા-
 ને ભસ્મવત્ કરી નાંખે છે, અમૃતનું એકજ બિંદુ
 રાંગને નિર્વંશ કરે છે; તેજ પ્રમાણે હે વિભો !
 મનુષ્યોની મતિમાં સ્ફુરણા કરનારું તમારું શ-
 રીર ત્રણે જગતનાં દુઃખો હણવાને માટે સમર્થ
 છે. ॥ ૬ ॥

श्रीचिन्तामणिमन्त्रमौक्तियुतं
 ह्रींकारसाराश्रितं । श्रोमहूँनमिऊ-
 णपाशकलित त्रैलोक्यवश्यावहम् ॥
 छेधाभूतविषापहं विषहरं श्रेयःप्रप्ता
 याश्रयं । सोह्वासं वसहाङ्कितं जिन-
 फुलिङ्गा—नन्दनं देहिनाम् ॥ ७ ॥

भावार्थः—ॐ शब्दनी आकृतिवाळो ह्रीं-
 कारथी युक्त श्री मर्हूनमिउणना मंत्रथी बद्ध
 थयेलो त्रणे लोकने वश वर्तावनार, विषयरूपी
 झेरनो नाश करनार, कल्याणकारक, प्रभाव-
 वाळो, व, स, ह, इत्यादि अक्षरोथी युक्त एवा
 मनुष्य मात्रने आनंदरूप श्री चिन्तामणी नामनो
 मंत्र छे. ॥ ७ ॥

ॐ શ્રીકારવરં નમોદ્ધરપરં
 ધ્યાયન્તિ યે યોગિનો-હૃત્પદ્મે વિ-
 નિવેશ્ય પાર્શ્વમધિપં ચિન્તામણિસં-
 શ્લકમ્ ॥ જાણે વામભુજે ચ નાન્નિ
 કરયોર્ઋયો યુજે દક્ષિણે । પશ્ચાદ્દૃષ્ટઃ
 દક્ષેષુતેશિવપદંદ્વિત્રૈર્જવેર્યાન્ત્યઽહો ॥૭

ભાવાર્થ:-હ્રીં શ્રીં ઇત્યાદિ આકારથી યુક્ત
 મંત્રનું જે યોગીઓ હૃદયકમળમાં અધિષ્ઠાતા
 પાર્શ્વનાથ ભગવાનના ચિન્તામણીની સંજ્ઞાવાળો
 જેની પૂર્વમાં નમો મુકેલો છે એવો હ્રીં શ્રીકાર-
 રાદિ ઉત્તમ વર્ણયુક્ત મંત્રને હૃદયકમળમાં ધારણ
 કરીને કપાળને વિષે, ડાબા હાથને વિષે, ના-
 બિમાં અને ઘણે ભાગે જમણા હાથમાં અને ત્યાર

પછી આઠે દલોને વિષે ધ્યાન ઘરે છે તે વે
ત્રણ ભવ પછી મોક્ષ ધામમાં સિદ્ધારે છે. એ શું
આશ્ચર્યજનક નથી ! ॥ ૮ ॥

(સ્વગધરા હંદ.)

નો રોગા નૈવ શોકા ન કલ-
હકલના નારિમારિપ્રચારો-નૈવાધિ
ર્નાસમાધિર્નચ દરદુરિતે દુષ્ટદારિદ્રતા
નો ॥ નો શાકિન્યો ગ્રહા નો ન
હરિકરિગણા વ્યાલવૈતાલજાલા-
જાયન્તે પાર્શ્વચિન્તામણિમતિવશતઃ
પ્રાણિનાં જ્ઞક્તિજ્ઞાજામ્ ॥ ૯ ॥

ભાષાર્થ-જે ભક્તિવાન પ્રાણીઓ શ્રી ચિ-
તામણી પાર્શ્વનાથમાં પોતાની વૃત્તિ જોડે છે,

तेभ्योने रोग, शोक, कलेश, अशान्ति, भय, पाप
दुष्ट दारिद्र्यपुं शत्रुद्वारा उपजती व्याधि, तथा
शाकिनी; भूत, पिशाच विगेरे तथा हाथी तथा
सिंहना समुहो दुःखरूप थइ शंकतां नथी ॥९॥

(शार्दूल छंद.)

गीर्वाणद्रुमधेनुकुम्भमण्यस्त-
स्याङ्गणे रङ्गिणो देवा दानवमानवाः
सविनयं तस्मै हितध्यायिनः ॥ ल-
क्ष्मीस्तस्य वशा वशेव गुणीनां ब्रह्मा-
ण्डसंस्थायिनो । श्रोचिन्तामणिपा-
श्वनाथमनिशंसंस्तौ त्रयोध्यायते १०

भावार्थः—जे प्राणी श्री चिन्तामणी पार्श्व-
नाथनी हमेश स्तुति करेछे तथा ध्यान धरेछे,

તેના આંગણામાં રાગાદિ આનંદ થયા જ કરે છે. તેને કલ્પવૃક્ષ, કામદુર્ગા ધેનુ પારસમણી ઇત્યાદિ અલૌકિક પદાર્થ પ્રાપ્ત થાય છે, દેવદાનવ અને મનુષ્યો સુદ્ધાં વિનયથી તેના હિતનું જ ચિંતવન કર્યા કરે છે. ગુણવાન પુરુષોને આ બ્રહ્માંડમાં પ્રાપ્ત થતી સમસ્ત લક્ષ્મી તેને વશ વર્તે છે. ॥ ૧૦ ॥

(માલીની છંદ.)

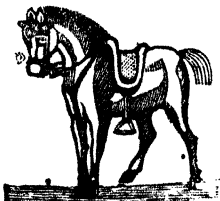
इति जिनपतिपार्श्वः पार्श्वपा-
 श्वाख्ययक्षः प्रदक्षितदुरितौघः प्रीणि-
 तप्राणिसार्थः त्रिभुवनजनवांच्छादा-
 नचिन्तामणिकः । शिवपदतरुबीजं
 बोधिबीजं ददातु ॥ ११ ॥

માવાર્થ:-આ પ્રમાણે જીનપતિ પાર્શ્વનાથ

ભગવાનની પાસે રહેનારો પાર્શ્વ નામનો યક્ષ,
 જેનાં પાપકર્મો નષ્ટ થઈ ગયાં છે, અને તે ભગ-
 વાને જનસમુદાયને સંતુષ્ટ કર્યો છે, અને જે
 ત્રણે ભુવનની વાંચ્છા પુરવામાં ચિંતામણી સમાન
 છે, તે મોક્ષપદ રૂપી વૃક્ષનું बीजरूप સમકીત
 મને અર્પણ કરો !! ॥ ૧૧ ॥

॥ इति श्रीचिन्तामणिपार्ष्वनाथस्तोत्रं समाप्तम् ॥

॥ स्तोत्र प्रकरण समाप्त ॥



प्रदेशी राजाना प्रश्नोत्तर.

प्र०—प्रदेशी राजा केशीगणधरने निवेदन करे हे स्वामीन ! आप कहो छो के जीवने शरीर जुदा छे, अने जेवुं कर्युं होय एवुं भोगवे, तो मारा दादा नास्तिकमती हता, घणी हिसा करता, ते तमारा कहेवा मुजब नर्क जवा जोइए; अने तेम थयुं होत तो नर्कना दुःख जोइ मने सूचना करत के हे पुत्र ! तुं पाप न कर; पाप करवाथी महारा जेवा दुःख भोगववा पडशे; एवी रीते आबीने कहे तो हुं जीव ने शरीर जुदा मानुं.

उ०—केशीगणधर प्रत्युत्तर कहे हे राजन ! तारी सूरिकंताराणी सर्व प्रकारना आभुषण पेहेरी बेठी छे, एवामां कोइ उल्लंठ पुरुष तेनी

साथे खोटी चेष्टा करे, तो तुं शुं करे ? राजा कहे तेने तो ठार मारुं, जेम तुं तेनो विनाश करे ने जवा दे नही, तेम नर्कमांथी परमाधामी आववा दे नही, एटले शी रीते आवे ? ॥१॥

प्र०—राजा कहे आपे कहुं ते सत्य, पण माहरी दादी घणाज धर्मीष्ट हता, दान देता हता ते तमारा कहेवा प्रमाणे देवल्लोके जवा जेइए, ते आवीने कहे के हे पुत्र ! तुं धर्म कर जेथी महारा जेवा देवल्लोकना सुख मळशे : एव्हां आवीने कहे तो हुं जीव जुदो मानुं.

उ०—केशीगणधर बीजो प्रश्न सांभळी कहे छे के तुं नाही थोइ आभुषण पेहेरी देव पुजवा जतो होय, तेवामां तने कोइ विष्टानी कोटडी (संडास) मां बोलावे तो त्यां जाय ? राजा कहे ते वचन मात्र सांभळुं नही. तो अनेक सुखमां लीन थएला देवता आ दुर्गंध

યુક્ત મનુષ્ય લોકમાં આવી શકે ? મનુષ્ય લોકની દુર્ગંધ ૫૦૦ યોજન સુધી ઉછળે છે; તે દુર્ગંધને લીધે આવી શકતા નથી. ॥૨॥

પ્ર૦—પ્રદેશી રાજા કહે સ્વામીન ! કોઈ જુવાન પુરુષ નીરોગી માણસ સર (બાળ) નાચે, તેવુંજ બાળ કોઈ રોગી પુરુષ બાલ અવસ્થાવાળો નાચી શકશે ? અર્થાત નહીં નાચી શકે. તમારા કહેવા પ્રમાણે જીવ તો તેમાં પળ છે, પળ શરીરના બલની સ્વામીથી નાચી શકતો નથી; વાસ્તે શરીર છે તેજ છે, બીજું કંઈ નથી.

૩૦—બલી તેહનો ઉત્તર કેશીગણધર કહે છે. હે રાજન્ ! જિમ કોઈક બાલક સુકુમાલ છે, અથવા કોઈક વૃદ્ધપુરુષ કઠિન છે. હવે તે બિહું જળ સંઘાતે શર નાચે. તિહાં બાલકનો શર (બાળ) કોમલપણા માટે ટૂંકડો પડે. મો-

ટાનો શર કઠિનપણા માટે વેગલો પડે. એતો શરીરનો ગુણ. પણ જીવનો વિશેષ નહિ. જિમ્ કાવડિનો દૃષ્ટાંત. એક કાવડિં (કાવડ) નવા વાંસની હોય તે ઘણો ભાર વહી અને તેહજ કાવડિ જીર્ણ વાંસની થઈ તેવારે ભારને નિરવહી (ઉપાડો) ન શકે, તેમ કાવડિ નવા વાંસ સમાન છે. શરીરની નિર્બલતા સબલતા શરીરનો ગુણ છે. તેણે કરી વેગલો ટૂંકડો બાળ જાય. તે માટે શરીરનો ગુણ છે પણ જીવ તો સદૃશ (સરખા) જાણવા. ॥ ૩ ॥

પ્ર૦—વઢી પ્રદેશીરાજા પૂછે હે સ્વામિન ! તુમ્હે કહું તે પ્રમાણ, તુમ્હારી મતિ આગઢ મહારાથી જવાબ ન થાય પણ એક ચોરને જીવતો તોઢી જોયો પછી શસ્ત્રાદિ ઉપક્રમ વિના શ્વાસરૂંધનાદિકે કરી માર્યો. તે વઢી મૂવા પૂંઠે તોઢી જોયો પણ ટેટલૈજ થયો. અનંત શક્તિ-

वंत जीव शरीरमांहे छे तो ते जीव गया मूठे
 तोलतां ओछो केम न थयो ? ते माटे म्हारुं
 वचन ते साचुं. जीव तेहज शरीर पण
 जुदा नहि.

उ०—चौथा प्रश्ननो उत्तर हवे कहे छे के
 हे राजन् ! जेम कोइक पुरुष डाह्यो कौतुकवंत
 चांबडानो दडो मसक ठालो (खालि) थको
 तोली जोए. तेवारपछी ते मसक वायरा साथे
 भरे, तेवार पछी तोले पण कांइ फेर न पडे.
 तो हे राजन् ! ते अधिक न्यून थाय ? राजा
 कहे, ना स्वामी. तेहनी परे वायुसमान जीव
 जाणवो. मसकसमान शरीर जाणवुं. जेम वायु
 पूर्ण मसक पाणी मांहे तरे. मन गमे भार
 मूकीए तो पण खमे तेणी परे जीवशक्ति जा-
 णवी. एटला माटे जीव शरीर जूजूया (जुदा)
 जाणवा. ॥ ४ ॥

પ્ર૦—બઢી રાજા કહે તમે કહો તે સાચું
પણ જીવ જોવાની બુદ્ધિ એક ચોરને શસ્ત્રો-
પયાત વિના મારી સ્વંડે સ્વંડ કરીને. સમઘાતુ
ભેદી ભેદી જોયો પણ કિહાં જીવનો પ્રદેશ
દીઠો નહિ, તે માટે શરીર તેહજ જીવ પણ
જૂજૂયા (જુદા જુદા) નહિ.

૩૦—એમ સાંભળી બઢી કેશીગણઘર ઉદ-
ત્તર કહે છે. હે રાજા ! જેમ કોઈક નગરને
વિષે ચાર કબાડી પુરુષ કબાડીને અર્થે વનમાં
ગયા. તિહાં તે એક પુરુષને કહેવા લાગ્યા જે
અમે કબાડીને (લાકડા લેવા) જઈએ છીએ.
તું પાછઢથી અરણીનું તથા વાંસનું કાષ્ટ લઈ
એ માંહે અગ્નિ છે તે અગ્નિ પેદા કરી ભોજનપા-
ળીની સામગ્રી કરજે એમ કહીને વનમાંહિ ગયા.
પાછઢ તે અજ્ઞાનો સમજતો નથી તેણે તે કાષ્ટ
સ્વંડોસ્વંડ કરી જોયું પણ અગ્નિ ન દીઠો. મૂંઠો

थई बेसी रह्यो ते साथी (लोको) फरी आ-
 व्या तेणे हील्यो निंद्यो हीणमति तेणे वळतुं
 फरी काष्ट आणी मथीने अग्नि उपाइ (पाडीने)
 जमण कीधुं. सुखी थयां, तेम हे राजन् !
 शरीरमां जीव जाणवो. जेम दूधमांहि घृत,
 जेम कुसुम (फूल) मांहि वास, जेम काष्ट-
 मांहि अग्नि, जेम तलमांहि तेल, पषाणमांहि
 सुवर्ण, तेम शरीरमांहे जीव जाणवो. पण ढहा-
 णथी जणाय. ॥ ५ ॥

प्र०—वळी राजा कहे हे स्वामी ! तुझे
 कहो छो ते प्रमाण. पण जेम घटपटस्तंभादि
 सकलपदार्थ प्रत्यक्ष दीसे छे, तेम जीवपदार्थ
 बोर प्रमाण आमळा प्रमाण मात्र पण जीव
 देखाडो तो हुं प्रत्यक्षपणे मानुं. अन्यथा हुं न
 मानुं. में कहुं ते साजुं.

उ०—ए छठो प्रश्न सांभळी वळी केशी-

ગણધર કહે હે રાજન ! આ વાડી વનચંદ્રમાંહિ
 જોડેને, પત્ર પુષ્પ ફળ વેલી હાલે ચાલે કહે
 રાજા તે જ્ઞાને બલે ? તેવારે રાજા કહે સ્વા-
 મિન્ ! વાયરાને બલે (જોરથી). તેવારે કેશી-
 ગણધર કહે તું વાયરો મુજને હાથે જ્ઞાલી દે-
 સ્વાડે તો હું તુજને જીવ દેસાડું. એમ કહું
 તેવારે રાજા કહે સ્વામિન્ ! વાયરો જ્ઞાલ્યો ન
 જાય. તો ગુરુ કહે જીવ જ્ઞાલ્યો ન જાય.
 જેમ વાયરો હાલવા ચાલવા લક્ષણે જાણીએ,
 તેમ જીવ શરીરને વિષે ગમનાગમનાદિ ક્રિ-
 યાએ જાણીએ અને પ્રત્યક્ષપણે ન દીસે તે તો
 કહું છે કે દશસ્થાનકપ્રત્યે છદ્મસ્થમનુષ્ય સર્વ
 ભાવ ન જાણે ન દેખે, તે જેમ ધર્માસ્તિકાય
 ૧, અધર્માસ્તિકાય ૨, આકાશાસ્તિકાય ૩,
 શરીર વિનાં એકલો જીવ ચૈતન્યલક્ષણ ૪,
 પરમાણુ પુદ્ગલ ૫, શબ્દ ૬, ગંધ ૭, વાયરો ૮,

ए प्राणी जिन (केवळी) थाशे किंवा नहिं
थाए ९, ए प्राणी सर्वदुःखनो अंत करशे किंवा
नहिं करे १०. ए दंश वाना ज्ञानी जाणे पण
छद्मस्थ ते न जाणे ॥ ६ ॥

प्र०—वळी राजा कहे हे स्वामिन् ! तुम्हारे
वचनें म्हें जीवपदार्थ मान्यो पण एटलो संदेह
छे, जे कीडीनो कुंथुवानो कुंजर (हाथी) नो
जीव बराबर छे ते केम घटे ? प्रत्यक्षे घणोज
फेर दीसे छे.

उ०—एम सांभळी केशीगणधर प्रदेशीने
प्रत्युत्तर कहे. हे राजन् ! जेम दीवो कुलडी-
मांहे घालीए तेवारे कुलडीना प्रमाण जेटलो
प्रकाश करे, घडामांहि मूकीए तेवारे घडा
जेटलो प्रकाश करे, ओरडामांहि मूकीए तेवारे
ओरडा जेटलो प्रकाश करे. पटसालमांहि
मूकीए तेवारे पटसाल जेटलो प्रकाश करे.

• जेहवो थानक मले तेहवो प्रकाश करे. तेम दीपक समान जीव जेवुं निर्माणनामकमें शरीर पामे तेदली बलशक्ति प्रकाशे. जेम जेम आवरणनो क्षयोपशम पामे तेम तेम प्रकाश करे. पण जीवपदार्थ ते बराबर जाणवो. ॥७॥

प्र०—ए सात प्रश्न सांभळी प्रदेशीराजाय जीव सह्यो, जीव अने शरीर जुदा मान्यां, अने कहेवा लाग्यो. हे पूज्य ! भली तुह्यारी प्रज्ञा ! म्हें जीव ओलख्यो. पाप—पुण्य—फलनो भोक्ता करी जाण्यो. पण हे स्वामी ! बापदादापर्यागतनो चाल्यो आव्यो धर्म केम मूकाय ? ते माटे नास्तिकमत न मूकुं. जे वृद्धे कीधुं होय ते कीजीए. केमके पोते बावेला झेरना वृक्षने पण छेदाय नहिं.

उ०—एम सांभळी श्रीकेशीगणधर लोह-बाणीयानो दृष्टांत कहे. जेम एकनगरीथी चार

व्यापारी वणिक् परद्वीपे जावा व्यापारने अर्थे
 नीकल्या. आगळ जातां लोहनो आगर
 (खाण) आव्यो तेणे लोह लीधो, वळी केट-
 लीएक भूमि जातां त्रांबानो आगर आव्यो,
 तेवारे लाह नांखी त्रांबु संग्रह्युं. त्हेमां एक
 कहेवा लाग्यो आदर्युं (लीधेलुं) ते न मूकीए,
 एंम कहि लोह न मूक्युं. वळी आगळ जतां
 रूपानो आगर आव्यो, त्रांबु नांखी रूपुं
 लीधुं. रूपुं नांखी सुवर्ण लीधुं, वळी आगळ
 जतां रत्ननो आगर आव्यो. तिहां रत्ननो
 संग्रह कीधो. घणे जणे कह्युं पण लोहवाणीओ
 लोह न मूके, लोहभारवाही दुःखी थयो.
 पाछो फरी पोताने नगरे आव्यो त्यारे बीजा
 सर्वपुरुषो तेहने हसवा लाग्या. निर्धन रह्यो.
 बीजा सर्व सुखी थया. धर्मकर्मना साधनहार
 थया. तेम लोहवाणीयानी पेरे हठवाद करतो

જીવ દુઃખી થાય. વળી કોઈ ભારવાહક છે, તે સાત પેઢીમાંહિ કોઈ કાંઈ સુખીઓ નથી. કુલક્રમાગત દરિદ્ર છે હવે. તેહને રાજા પ્રસન્ન થયો, અને છત્રચામરસહિત રાજ્ય તે ભારવાહકને આપે. તેવારે કુલક્રમાગત દરિદ્રપણું મેલી રાજ્ય લે કિંવા ન લે ? તેવારે પ્રદેશી-રાજા કહે સ્વામી ! તે રાજ્ય લે. ના લીધે તો અજ્ઞાની કહીએ. ત્યારે શ્રીકેશીગણધર કહે, રાજા ! તું પણ તે દૃષ્ટાંત કરે છે. એ અષ્ટ પ્રશ્નના પ્રશ્નોત્તર સાંભળી રાજા પ્રતિબોધ પામ્યો. ॥ ૮ ॥

સૂરિકંતાનું કેરદર્શક ચરિત્ર.

અધમાધમ લંપટ સ્ત્રીઓનાં દાસલા શાસ્ત્રમાં અનેક છે. વીજા નંદરની અધમ સ્ત્રી સૂ-

રિકંતા છે, જેનું વર્ણન “ રાયપસેળી ” સૂ-
ત્રમાં છે. સૂરિકંતા અર્ધકેકયી દેશના રાજા
પરદેશીની પટરાણી હતી. પરદેશી રાજા પૂર્વ
અવસ્થામાં ઘણો અધર્મી, અન્યાયી, જુલ્મી,
ક્રૂર, નાસ્તિક, ધર્મદ્રોહી અને વિષયાસક્ત
હતો. સૂરિકંતાની ઉપર તેનો ઘણો પ્રેમ હતો
કારણ કે તે પટરાણી હતી અને તેનો પુત્ર સૂ-
રિકંતકુમાર યુવરાજ હતો, તેથી ભવિષ્યની તે
રાજમાતા હતી. સૂરિકંતાની ઇચ્છા પ્રમાણે દ-
રેક વસ્તુ રાજા તરફથી તેને મળતી તેથી રા-
જાને તે અતિ પ્રેમભાવ દર્શાવતી. જ્યાંસુધી
રાજાને સદ્ગુરુ કેશી સ્વામીનો સમાગમ ન-
હોતો થયો ત્યાંસુધી તો રાણીના પ્રેમનો પ્રવાહ
તેવો ને તેવો ચાલુ રહ્યો પણ ચિત્તસારથીના
પ્રયત્નથી કેશી સ્વામીનું શ્વેતાંબિકા નગરીમાં
આગમન થયું અને પરદેશી રાજાને મૃગવન ઉ-

ઘાનમાં પ્રસંગે સદગુરુનો સમાગમ થયો, એટ-
 લું જ નહિ પણ કેશી સ્વામીની યુક્તિભરી દ-
 લીલોથી ઝંઘારે પરદેશી રાજાના મનનું સમા-
 ધાન થયું, સ્વર્ગ-નરક, પુનર્જન્મ-પુનર્ભવ,
 પુણ્ય-પાપ, ધર્મ-અધર્મ અને શરીર ભિન્ન
 જીવ છે એવી સ્વાતરી થઈ ત્યારે રાજાએ ના-
 સ્તિકપણાનું મિથ્યા સિદ્ધાંતોને ત્યજી દે
 જૈન ધર્મના સત્ય સિદ્ધાંતો સ્વીકાર્યા; તેની
 સાથે બારવ્રત રૂપ શ્રાવક ધર્મ સ્વીકાર્યો અને
 પોતાના તાવાના સાત હજાર ગામોના ચાર
 વિભાગ પાડી એક ભાગમાંથી દાનશાળા માં-
 ડવાનું નક્કી કર્યું. પરદેશી રાજાની ધાર્મિક
 વૃત્તિ એટલી દૃઢ થઈ કે તેણે સંસારનાં તમામ
 કાર્યો છોડી દીધાં; માત્ર એકાંતની પૌષ્ઠશા-
 લામાં ધર્મ ધ્યાન કરવું એટલું જ કાર્ય તે પો-
 તાનું, સમજ્યો, અને અહેર્નિશ તેજ કાર્યમાં

मशगुल बनी रह्यो. आ बात सूरिकंताने पसंद पड़ी नहि, कारण के तेथी तेनो स्वार्थ सधातो अटक्यो. सूरिकंतानी स्वार्थी वृत्तिमां पूर्वना प्रेमनो अंकुर बळीने दग्ध थइ गयो. प्रेमनी जग्या द्वेषे लीधी. रातदिवस सूरिकंताना मनमां परदेशी राजा उपर अने तेने धर्ममां समजावनार केशी स्वामी उपर द्वेष उभरावा लाग्यो. तेणी एम समजती हती के साधुए राजाना उपर कइ भुरकी नांखी राजाने भरमावी दीधा छे, अने मारा उपरनो प्रेम उतरावी नांख्यो छे.

स्वार्थपरायण सूरिकंता पूर्वनो स्नेह, उपकार, संबंध, ए सर्व भूली जइ प्रभुतुल्य पतिने यमधाममां पहांचाडी देवाना बिचारपर आवी पहोंची. ते बिचार तरत पार पाडवाने पाश रचवा लागी. आ कार्य केवल पोतानी जातथी नहि बनी शके एम जणायाथी सूरि-

कंतकुमारने राज्यसत्ताना लोभमां नांखी तेने पोताना धारेला कार्यमां सामेल राखवानो सूरिकंताए निश्चय कर्यो. एक माणंसने मोकली तेणे कुमारने पोतानी पासे बोलाव्यो. एकांतना ओरडामां तेने लइ जइ नीचे प्रमाणे ते कहेवा लागी.

सुरिकंता—केम कुमार ! तमारी शी इच्छाछे ?

कुमार—माताजी ! हुं तमारो प्रश्न हजु समज्यो नथी. मने खास बोलावी कइ इच्छा विषे पूछो छो ?

सूरिकंता—हुं राज्यनी इच्छा विषे पूछुं छुं, के तमारे राज्यगादीए बेसवुं छे के नहि ?

कुमार—माताजी ! आ बखते आ प्रश्न पूछवानुं शुं प्रयोजन ?

सुरिकंता—प्रयोजन ए के राज्यनुं बधुं काम बगडे छे. राजाजीने धर्मनो छंद लागी

ગયો છે કે કોણ જાણે મતિવિભ્રમ થઈ ગયો છે.
ગમે તેમ હો, તમે જોતા નથી કે રાજ્ય કે
ઘરની બાબતમાં તે જરાયે લક્ષ આપે છે ?

કુમાર—ના, તે તો નથી આપતા; પણ તેનું
હવે શું કરવું ?

સૂરિકંતા—શું કરવું તે વધું હું જણાવીશ
પણ તે પહેલાં એટલી ભલામણ કરું છું કે આ-
પણી આ સ્વાનગી વાત ક્યાંય પણ બહાર પ-
ડવી ન જોડે.

કુમાર—મારા તરફથી બહાર નહિ પડે તે
વિષે સ્વાત્રી રાखો, પણ વાત શું છે તે જણાવો.

સૂરિકંતા—કુમાર ! જુઓ હવે રાજા આ-
પણને આઢરવીલરૂપ છે. એમની હયાતી સુધી
તમને રાજ્યગાદી મળી શકશે નહિ અને ત્યાં
સુધીમાં રાજ્યની સ્થિતિ અસ્તવ્યસ્ત થઈ જાય,
માટે કોઈ ન જાણે તેવી રીતે આપણે ઘંને કોઈ

पण प्रयोगथी झेर आपी, आग लगाडी के श-
स्त्रथी राजाने मारी नांखीए.. पछी तमे छो-
अने हुं छुं. आपणे बंने एकबीजानी मलाहथी
राज चलावीशुं. केम आ मारी वात रुचे छे ?

कुमार—(स्वगत) अधधध !! आ भयं-
कर विचार !! आटलो बधो राज्यसत्ताछे
लोभ !! धूळ पडो ते राज्यवैभवमां के जेने
माटे आवा क्रूर विचारो उत्पन्न थाय छे ! हवे
अहीं बेसवामां के बोलवामां लाभ नथी. व-
धारे पडतुं बोलीश तो मारा माटे पण आवा
विचारो बांधतां मारी माता वार लगाडसे नहि
(प्रकाश) माताजी ! एना माटे हुं विचार्या
बगर हमणां कंड नहि कही शकुं. हमणां मारुं
शरीर अस्वस्थ छे, तेथी जवानी रजा लउं छुं.

एटलुं बोली कुमार उठी चालतो थयो.
सूरिकंता जरा वारतो विचारमां पडी के काम

न थयुं अने वात बहार पडी गइ. कुमार माइ
 विचारमां संमत थयो नहि. अस्तु. में बीजानो
 आश्रय माग्यो, ए ज भूल करी. ए काम मारा
 एकलाथी क्यां बनी शके तेवुं नथी ? एक
 राजाने ते पण खानगी रीते मारवो तेमां बी-
 जानी मददनी शी जरूर हती ? हवे तरत ते
 काम पार पाडुं. विलंब थवाथी क्खते ते वात
 कुमार तरफथी बहार पडी जाय माटे तरत
 गोठवण करुं. आवो निश्चय करी ते दुष्टाए
 परदेशी राजाने पोताने त्यां जमवानुं आमंत्रण
 आप्युं अने रसोइमां, वासणमां, आसनमां, द-
 रेक स्थळे झेर नांखी दीधुं. राजा जमवाने
 आव्या, भोजन कर्युं, तेनी साथे झेरनी असर
 यइ, तेथी अधूरे भोजने राजा उठी गया अने
 पोषधशाळामां गया. सूरिकंताना आ काव-
 त्रानी राजाने खबर पढबा छतां तेनो बांक. न

(१८३)

देखतां समाधि परिणामे संथारो करी राजा
स्वर्गे गया.

(दोहा.)

स्वार्थना सौको सगां, जो जो इण संसार ॥
किण विध विचरे कंथसुं, सूरिकंता नार ॥१॥
कुण बेटा कुण पोतरा, कुण नारी कुण भाय ॥
स्वार्थका सौको सगा, परमारथ मुनिराय ॥२॥

राणीनो कपटरूपी विलाप.

(राग—चोपाई.)

राणी लटो तोडी करे शोगो,
म्हारा व्हाला तणोरे विजोगो ॥
मने अन्न पाणी नवि भावे,
परिवार नहि रे सुहावे ॥ १ ॥
हुं तो चार फेरानी छुं नारी,

कंथा करी चाख्या रे खुधारी ॥

मारो नाम मति कोइ लेजो,
म्हने दस्शिणं देखवा देजो ॥ २ ॥

राणी लज्जा कपट मन धरती,
उमरावोने दूरे करती ॥

राणी आडी परीच करावी,
राणी मांही गई रे चलाई ॥ ३ ॥

राणीए ईसडो अकारज कीधो,
राजाने गळे जइ दुंपो दीधो ॥

राणीए मनमां न आणी मया,
राजानी नहि जाणी रे दया ॥ ४ ॥

मुवानो कारज कीधो,
सूरिकंत कुंवर राज दीधो ॥

एवो अस्थीर पदारथ जाणो,
संसारनो मोह मति आणो ॥ ५ ॥

एम भांख्यो श्री केवळ ज्ञानी,

जीणंशु वात नहि कोइ छानी ॥
 जीणरो कह्यो जे जीव करशे,
 संसार समुद्रने तरशे ॥ ६ ॥

श्री दश वैकालीक सूत्रनुं

१-२-३-४ अध्ययन.

धम्मो मंगल मुक्कटं, अहिंसा संजमो तवो
 ॥ देवावितं नभं संति, जस्स धम्मो सजामणो
 ॥ १ ॥ जहादुमस्स पुप्फेसु, भमरो आवीयइ
 रसं ॥ न य पुप्फं किलामेइ, सोय पिणेइ अप्पयं.
 ॥ २ ॥ एमेए समणा मुत्ता, जे लोए संति सा-
 हुणो ॥ विहंगमा व पुप्फेसु, दाणभत्तेसणेरया
 ॥ ३ ॥ वयं च वीत्ति लब्भामो, नय कोइ उव-
 इम्मइ ॥ अहागडेसु रीयंते, पुप्फेसु भमरा जहा

॥ ૪ ॥ મહુકાર સમા બુદ્ધા, જે ભવંતિ અણિ-
 સ્સિયા ॥ નાણા પિંડરયાદંતા ॥ તેણ બુદ્ધંતિ
 સાહુણો ॥ ૫ ॥ ત્તિવેમિ ॥ ૧ ॥



અધ્યયન વીજું.

કહં નુ કુજ્જા સામણં, જો કામે ન
 નિવારણ ॥ પણ-પણ વિસીયન્તો, સંકપ્પસ્સ
 વસં ગઓ ? ॥ ૧ ॥ વત્થ-ગન્થ-મલંકારં,
 ઇત્થીઓ સયણાણિ ય ॥ અચ્છંદા જે ન ધું-
 જન્તિ, ન સે “ ચાઈ ” ત્તિ બુદ્ધઈ ॥ ૨ ॥
 જે ય કન્તે પિણ ભોણ, લદ્ધે વિપ્પિઠ્ઠિ-કુવ્વઈ ॥
 સાહીણે ચયઈ ભોણ, સે હુ “ ચાઈ ” ત્તિ
 બુદ્ધઈ ॥ ૩ ॥ સમાણ પેદાણ પરિવ્વયન્તો,
 સિયા મણો નિસ્સરઈ બહિદ્ધા ॥ ‘ન સા
 મહં નો વિ અહં પિ તીસે’, ઇચ્છેવ તાઓ
 વિણણજ્જ રાગં ॥ ૪ ॥ આયાવયાહી ! ચય

सोऽगुमल्लं !, कामे कमाही ! कामयं खु-
 दुःखं; ॥ छिन्दाहि दोसं ! विणएज्ज रागं !
 ॥ एवं सुही होहिसि सम्पराए ॥ ५ ॥ प-
 कखन्दे जलियं जोइं, धूम-केउं दुरासयं ॥
 नेच्छन्ति वन्तयं भोत्तुं, कुले जाया अगन्धणे
 ॥ ६ ॥ धिरत्थु ते जसो-कांभी, जो तं जी-
 विय-कारणा ॥ वन्तं इच्छसि आवेउं ! सेयं
 ते मरणं भवे ॥ ७ ॥ अहं च भोग-रायस्स,
 तं च सि अन्ध वण्हणो ॥ मा कुले गन्ध-
 णा होमो, संजमं निहुओ चर ॥ ८ ॥ जइ
 तं काहिसि भावं जा-जा दच्छिसि नारिओ
 ॥ वायाइद्धो व्व हढो, अट्ठियप्पा भविस्ससि
 ॥ ९ ॥ तीसे सो वयणं सोच्चा, संजयाए
 सुभासियं ॥ अंकुसेण जहा नागो, धम्मे स-
 म्पडिवाइओ ॥ १० ॥ एवं करेन्ति सम्बुद्धा,

पण्डिया पवियक्खणा ॥ विणियट्ठन्ति भो-
 गेषु, जहा से पुरिसुत्तमो ॥ ११ ॥ ति-
 वेमि ॥ २० ॥

अध्ययन त्रीजुं.

संजमे सुट्ठियप्पाणं विप्पमुक्काण ताइणं
 ॥ ते सिमेयमणाइणं, निग्गन्थाण महेसिणं
 ॥ १ ॥ उद्देसियं १ कीयगडं २ नियागं ३
 अभिहडाणि ४ य ॥ राइ-भत्ते ५ सिणाणे
 ६ य गन्ध ७ मल्ले ८ य-वीरणे ९ ॥ २ ॥
 सन्निही गिहि-मत्ते य, रायपिण्डे किमिच्छए
 ॥ सम्बाहग दन्त-पहोयणा य, सम्पुच्छण
 देह-पलोयणा य ॥ ३ ॥ अट्ठावए य नाली य
 छतस्स य धारणट्ठाए ॥ ते गिच्छं पाणहा
 पाए, समारम्भं च जेइणो ॥ ४ ॥ सेज्जायर

पिण्डं च, आसन्दी पलियंकए ॥ गिहन्तरं
 निसैज्जा य, गायस्सूव्वट्टणाणि य ॥ ५ ॥
 गिहिणो वेयावडियं, जाय. आजीव.वत्तिया
 ॥ तत्तानिब्वुड-भोइत्तं, आउर-संसरणाणि य
 ॥ ६ ॥ मुलए सिंगवेरे य, उच्छु-खण्डे अ-
 निब्वुडे ॥ कन्दे मूले य सच्चित्ते, फले बीए
 य आमए ॥ ७ ॥ सोवच्चले सिन्धवे लोणे
 रोमा लोणे य आमए ॥ सामुहे पंसु-खारे य,
 काला-लोणे य आमए ॥ ८ ॥ धूवणे ति-
 वमणे य, वत्थी-कम्म विरेयणे ॥ अंज्जणे
 दन्तवणे य, गायाभंग-वीभूसणे ॥ ९ ॥ स-
 व्वमेयमणाइण्णं, निग्गन्थाण महेसिणं ॥ सं-
 जमम्मि य जुत्ताणं, लहुभूय विहारिणं ॥ १० ॥
 पंचासव परिभाया, ति गुत्ता ठसु संजया,
 पंच-निग्गहणा धीरा निग्गन्था उज्जु दंसिणो
 ॥ ११ ॥ आयावयन्ति गिम्हसु, हेमंतेसु अ-

वाउडा ॥ वासासु पडिसंलीणा, संजया, सु-
 समाहिया ॥ १२ ॥ परिसह-रिऊ दन्ता, धुय
 मोहा जिइन्दिया ॥ सव्व-दुख्ख प्पहीणह्वा,
 पक्कमन्ति महेरिणो ॥ १३ ॥ दुक्काराईं करे-
 ता णं, दुस्सहाईं सहेत्तु य ॥ के एत्थ देव-
 लोकेसु, केइ सिघन्ति नीरया ॥ १४ ॥ ख-
 वित्ता पुव्व-कम्माईं, संजमेण तवेण य ॥ सि-
 द्धि-मग्गमणुप्पत्ता, ताइणो परिनिव्वुड ॥ १५ ॥
 त्तिवेमि ॥ ३ ॥

(४)

अजयं चरमाणो उ पाण-भूयाइ हिंसइ ।
 बन्धई पावयं कम्मं, तं से होई कडुयं फलं ॥
 १ ॥ अजयं चिठ्ठमाणो उ पाण-भूयाइ हिंसई
 । बन्धई पावयं कम्मं, तं से होइ कडुयं फलं ॥
 २ ॥ अजयं आसमाणो, उ पाण-भूयाइ हिंसई ।

बन्धइ पावयं कम्मं, तं से होइ कडुयं फलं ॥
 ३ ॥ अजयं सयमाणो उ पाण-भूयाइ हिंसई ।
 बन्धइ पावयं कम्मं, ते से होइ कडुयं फलं ॥
 ४ ॥ अजयं भुज्जमाणो उ पाण-भूयाइ हिंसई ।
 बन्धइ पावयं कम्मं, तं से होइ कडुयं फलं ॥ ५ ॥ अजयं भासमाणो उ पाण-भूयाइ हिंसई ।
 बन्धइ पावयं कम्मं, तं से होइ कडुयं फलं ॥ ६ ॥ कहां चरे ? कहां चिठे
 कहां आसे ? कहां सए ? । कहां भुज्जन्तो भासन्तो, पावं कम्मं न बन्धइ ? ॥ ७ ॥ जयं
 चरे, जयं चिठे, जयं आसे, जयं सए । जयं भुज्जन्तो भासन्तो पावं कम्मं न बन्धइ ॥ ८ ॥
 ॥ सव्व-भूयण-भूयस्स सम्मं भूयाइ पास ओ । पिहिया सवस्स दन्तस्स पावं कम्मं न बन्धइ ९
 पढमं नाणं तओ दया, एवं चिठइ सव्व-संजए । अक्षाणी किं काही किं वा नाहिइ छेय

पावगं ? ॥ १० ॥ सोचा जाणइ कल्लाणं सो-
 चा जाणइ पावगं । उभयं पि जाणइ सोचा
 जं छेयं तं समायरे ॥ ११ ॥ जो जीवे वि न
 याणाइ अजीवे वि न याणइ । जीवाजीवे अ-
 याणन्तो कह सो नाही उ संजमं ? ॥ १२ ॥
 जो जीवेवि वियाणाइ अजीवे वि वियाणइ ।
 जीवाजीवे वियाणन्तो सो हु नाही उ संजमं
 ॥ १३ ॥ जया जीवमजीवे य दो वि एए
 वियाणइ । तया गइं बहुविहं सब्व-जीवाण
 जाणइ ॥ १४ ॥ जया गइं बहुविहं सब्व-जी-
 वाण जाणइ । तया पुणं च पावं च बन्धं
 मोरुखं च जाणइ ॥ १५ ॥ जया पुणं च
 पावं च बन्धं मोरुखं च जाणइ । तया निव्वि-
 न्दए भोए जे दिव्वे जे य माणुसे ॥ १६ ॥
 जया निव्विन्दए भोए जे दिव्वे जे य माणुसे ।
 तया चयइ सम्भोतं सन्निभन्तर-बाहिरं ॥ १७ ॥

जया चयइ सम्भोगं सन्निभन्तर-बाहिर । तथा
मुण्डे भवित्ताणं पव्वइए अणगारियं ॥ १८ ॥

जया मुण्डे भवित्ताणं पव्वइए अणगारियं ।

तथा संवरमुकठं धम्मं फासे अणुत्तरं ॥ १९ ॥

जया संवरमुकठं धम्मं फासे अणुत्तरं । तथा

धुणइ कम्म-रयं अबोहि-कलुसं कडं ॥ २० ॥

जया धुणइ कम्म-रयं अबोहि-कलुसं कडं ।

तथा सव्वत्त-गं नाणं दंसणं चाभिगच्छई

॥ २१ ॥ जया सव्वत्त-गं नाणं दंसणं चाभि-

गच्छई । तथा लोगमलोगं च जिणो जाणइ

केवली ॥ २२ ॥ जया लोगमलोगं च जिणो

जाणइ केवली । तथा जोगे निरुम्भित्ता सेलेसि

पडिवज्जाई ॥ २३ ॥ जया जोगे निरुम्भिता

सेलेसि पडिवज्जाइ । तथा कम्मं खवित्ताणं

सिद्धिं गच्छइ नीरओ ॥ २४ ॥ जया कम्मं

खवित्ताणं सिद्धिं गच्छइ नीरओ । तथा लोग

मन्थय-त्थो सेद्धो भवइ सासओ ॥ २५ ॥
 सुह-सायगस्स समणस्स सायाउलगस्स नि-
 गामसाइस्स । उच्छोलणा-पहोइस्स दुलहा
 सोग्गइ तारिसगस्स ॥ २६ ॥ तवो-गुण-
 पहाणस्स उज्जुमइ खन्ति-संजम-रयस्स ।
 परीसहे जिणन्तस्स सुलहा सोग्गइ तारिसगस्स
 ॥ २७ ॥ (पच्छा वि ते पयाया खिप्पं
 गच्छन्ति अमर-भवणाइं । जेसिं पी उ तवो
 संजमो य खन्ती य बम्भचेरं च ॥) इच्चेयं
 छ-ज्जीव-णियं सम्मदिट्ठी सया जए । दुलहं
 लभित्तु सामण्णं कम्मुणा न विराहेज्जासि । २८ ।
 त्ति वेमि ॥ ४ ॥

श्री महावीर स्तुति.

पुच्छि स्सुणं समणा माहणाय, आगा-
 रिणो या परतिथिया य, से केइ जेगंत हिय

धम्म माहु, अणेलिसं साहु खतिखयाए ॥

१ ॥ कहं च नाणं कहं दंसणं से, सील कहं
नायसुयस्स आसी, जाणा सिणं भिरुखु
जहातहेणं, अहासुयं बुहि जहाणि संतं ॥

२ ॥ खेयन्ने से कुसले महेसी, अणंतनाणी
य अणंत दंसी, जसरिसणो चरुखुपहेठियस्स,

जाणाहि धम्मै चधिइ चपेहा ॥ ३ ॥ उहुं
अहेयं तिरियं दिसासु, तसा य जे थावर

जेह पाणा सेनिच्चेनिच्चेहि समिख पन्ने, दी-

वेव धम्मं समियं उदाहु ॥ ४ ॥ से सव्वदं-

सी अभिभुयनाणी, निराम गंधे धिमं ठिय-

प्पा, अणुत्तरे सव्व जगंसि वीजं, गंधा अ-

तीते अभये अणाउ ॥ ५ ॥ से भुइ पन्नेअ-

णिण अचारी, उहत्तरे धीरे अणंत चरुखु,

अनुत्तरे तपइ सूरिण वा, बइरोयणिदेव तमं-

पभासे ॥ ६ ॥ अणुत्तरे धम्ममिणं जिणार्ण

नेया मुणि कासव आसुपन्ने, इंदेव देवाणं
 महाणु भावे, सह स्सणेतादिविणं विसिठे ॥
 ७॥ से पन्नया अखय सागरेवा, महोंदहि वावि
 अणंत पारे ॥ अणाइलेया अकसाइ भिण्णु,
 सकेवदेवाहिवइ जुइमं ॥ ८ ॥ से वीरिएण प-
 डिपुच्च विरिए, सुदंसणेवा नगसव्व सेठे,
 सुरालएवासि मुदागरे से, विराय एणेगं गु-
 णोववेए ॥ ९ ॥ सयं सहस्साणउ जोयणाणं,
 तिकंडसे पंडग वेजयंते, सेजोयणे नवनवइ
 सहसे, उहुस्सिए हेठं सहस्स मेगं ॥ १० ॥
 पुठे नये चिठइ भूमि वठिए, जंसूरिया अणु
 परियट्ठयंति से हेमवन्ने बहु नंदणे य, जंसी
 रइ वेदयंति महिदा ॥ ११ ॥ से पण्वए सद-
 महप्प गासे, विरायइ कंचण मठवन्ने, अणु-
 त्तरे गिरिसुय पण्वदुगे, गिरिवरेसे जलिएव
 भोमे ॥ १२ ॥ महीए मज्झमि ठिएण मिंदे,

पचायते सूरिण सुद्ध लेसे, एवं सिरिएऊ स
 भूरि वन्ने, मणो रमे जोयइ अचि माली ॥
 १३ ॥ सुदंसणं स्सेव जसो गिरिस्सं, पवुच्चइ
 महओ पव्वयस्स, एतोवमे समणे नायपुत्ते,
 जाइ जसो दंसण नाण सीले ॥ १४ ॥ गि-
 रिवरेवा निसहोय याणं, रूयएव सेठे वल्ल-
 यायताणं; तउवमे से जग भूइ पन्ने, मुचीण
 मझे तमुदाहु पन्ने ॥ १५ ॥ अणुत्तरं धम्म
 मुइ रइत्ता, अणुत्तरं ब्राणवरं झियाइं, सुसुक्क
 सुक्कं अपमंड सुक्कं, सरिंदु वेगं तवदात सुक्कं
 ॥ १६ ॥ अणुत्तरंगं परमं महेसी, असेसक-
 म्मं सुवि सोह इत्ता, सिद्धिं गइ साइ मणंत
 पत्ते, नाणेणं सीलेण य दंसणेणं ॥ १७ ॥
 रूखे सुणाए जह साम लीवा, जंस्सिरइं वेद
 यंति सुवक्का, वणे सुवा नंदण माहु शेठं,
 नाणेणं सीलेणं यभूइ पन्ने ॥ १८ ॥ थणियं

सद्वाण अणुत्तरे उ, चंदोत्तारण महा-
 णुभावे, गंधेसुवा चंदण माहु शेठं, एवं
 मुणीणं अपडिन्नं माहु ॥ १९ ॥ जहा सयंभू-
 उदहीण सेठे, नागे सुवा धरणींद माहु सेठं ॥
 खओद एवा रसवेजयंते, तवोवहाणे मुणि
 वेजयं ते ॥ २० ॥ हंथिसुएरावण माहुणाए,
 सीहो मिथाणं सलिलाण गंगा, पखि सुवा
 गेरु लेवेणुं देवे, निव्वाण वादी निहनाय
 पुत्ते ॥ २१ ॥ जोहे सुणाये जह वीस सेणे,
 पुप्फेसुवा जह अरविंद माहु, खत्तीण सेठे
 जह दंत वक्के, इस्मीण सेठे तह वद्धमाणे
 ॥ २२ ॥ दाणाण सेठं अभय प्पयाणं,
 सच्चेसुवा अणवजं वयंति, तवेसुवा उत्तम
 बंभ चेरं; लोगुत्तमे समणे नायपुत्ते ॥
 २३ ॥ ठितिण सेठा लव सत्तमावा, सभा
 सुइम्माव सभाण सेठा, निव्वाण सेठा जह

सव्व धम्मा, ननायपुत्ता परमथि • नाणी
 ॥ २४ ॥ पुढो वमि धुणइ विगइ गेहीं, न-
 स्संनिहं कुब्बइआ सुपन्ने, तरितुं समुदं च म-
 हाभवोयं अभयंकरे वीर अणंत चरुखु ॥
 २५ ॥ कोहंच माणंच तहेव मायं लोभं च-
 उथं अशथ दोसा, ए आणिवंता अरहा महे-
 सी. नकुवइपाव नकारवेइ ॥ २६ ॥ किरिया
 किरियं वेगइ याणुवायं, अन्ना णियाणं प-
 डियच्चठाणं. से सव्वावायं इतिवेद हता, उव-
 ठीए धम्म सदीहरायं ॥ २७ ॥ सेवारिया
 इथि सराइ भत्तं, उवहाणवं दुख खयठी-
 आये, लोगं विदित्ता आरं पारंच, सव्वं
 पभू वारिय सव्व वारं ॥ २८ ॥ सोच्चाय
 धम्मं अरिहंत भासियं, समाहियं अथपउ
 विसुद्धं, तं सइहंताय जणा अणाउ, इंदेव दे-
 वाहि आगमिस्संति ॥ २९ ॥ तिबेमि ॥

॥ श्री प्रस्तावीक गाथाओ प्रारंभ ॥

पंच महव्यय सुव्यय मुलं, समणामणा
 इलसाहु सुचिणं ॥ वेर वीरामण पजवसाणं,
 सब्ब समुद्धमहोदही तिथ्यं ॥ १ ॥ तिथ्यं
 करेहिं सुदैसिय मग्गं ॥ नरग तिरीय विव
 जीयं गग्गं ॥ सब्ब पवित्त सुनिम्मिय सारं
 ॥ सिद्धि विमाणं अबं गूयदारं ॥ २ ॥ देव-
 नरींद नम सियपूइयं ॥ सब्बजगूत्तम मंगलं
 मग्गं ॥ दुधरिसं गुण नायकमेकं ॥ मोख
 पहस्स वडिसग भुयं ॥ ३ ॥ देव दाणव गं-
 धवा, जख रखस कीन्नरा ॥ बंभयारी नमं-
 संती, दुकरं जे करिंती ते ॥ ४ ॥ एसधम्म
 धुवे णीयए ॥ मासए जीणदेसिए ॥ सिद्धा
 सिद्धंति चाणेणं ॥ सिद्धिस्संति तहावरे,
 तिवेमी ॥ ५ ॥ अरिहंत सिद्ध पवयणं ॥

गुरुथेर, बहु सुए तवस्सीसु ॥ वछलयाय-
 तेसि, अभिखनणो वउगेय ॥ ६ ॥ दंसण
 विणव आवरस एय, सीलवेय निरुइयाए ॥
 खणलव तवचीगाए, वेयावच्चे शमाहिए
 ॥ ७ ॥ अपुव नाणगहणे, सुयभत्ति पव-
 यणे पभावणया ॥ एएहिंकारणेहिं, तिथय-
 रतं लहइ ज्जीवो ॥ ८ ॥ जीणवयणे अणुरतां
 जीणवयणं जे करंती भावेण ॥ अमला असं-
 कीलिटा, ते हुंतिपरीत्त संसारी ॥ ९ ॥
 एवंखु नाणिणोसारं, जंनीहसइ कींचणं ॥
 अहिंसा संजम च्चेव, एतावतं वियाणीया ॥
 १० ॥ जाइंचवुढीच इज्जपासं, भूतेहिं जाणे
 पडिलेइवायं ॥ तम्हा तिवीज्जो परमंति-
 णचा, सम्मत दंसी णकरेइ पावं ॥ ११ ॥
 उमुच्च पासइह मच्चीएहीं, आरंभजीवी उभ-
 याजु पस्सी ॥ कामेसुं गीद्धाणी चयंकरंति,

संमिच्चमाणा पुणरेति गम्भं ॥ १२ ॥ सवणं
 नाणेय वीन्नाणे, पच्चख्खाणेय संजमे ॥ अ-
 णहनए तवे चेव, वोदाणे अकिरीया सिद्धी
 ॥ १३ ॥ सारं दंसणनाणं, सारंताव निमम
 संजम सीलं ॥ सारं जीणवर वम्मं; सारं
 संलेहणा मरणं ॥ १४ ॥ वल्लाण कोडि ज-
 ण्णी, दुरंत दुरियारीबग्गणी ठवणी ॥ सं-
 सार जलहितरणी, ए गंच होइ जीव दया
 ॥ १५ ॥ आरंभे नत्थि दया, महीला संगे-
 णनासए बंभं संकाए सम्मत्त नासइ,* पव्वजा
 अत्थगहणेणं ॥ १६ ॥ मज्जं विसय कसा;
 या, निदा विकहाय पंचमी भणिया ॥ ए ए
 पंच पमाया, जीवा पडंति संसारे ॥ १७ ॥
 लभ्भंति वीमला भोए, लभ्भंति सूर संपया ॥
 लभ्भंति पुत्त मितंच, एगोधम्मो न लभ्भइ
 ॥ १८ ॥ एगो-हं नत्थिमे कोइ, नाह-मन्त

स्स कस्सइ ॥ एवं अदीणमणसो, अप्पाण-
मणुसासइ ॥ १९ ॥ ए गोमे सासओ अप्पा,
नाणंदंसण संजुओ ॥ सेसामे बाहीराभावा,
सव्वे सजोग लख्खणा ॥ २० ॥ नवी सु-
ही देवता देवलोए, नवी मूही पुढवी पई
राया ॥ नवि सुही सेहं सेणावइणं एगंतु
सूही मुणि वीयरानी ॥ २१ ॥

। अध्ययन संग्रह समाप्त ।

पंच परमेशी वंदना.

॥ श्री अरीहंत देवने. (सवैया एकत्रीशा) ॥

नमं श्री अरिहंत, करमाको कीयो अंत,
हुवासो केवळ पंथ, करुणा भंडारी है;
अतिसे चोतीसधार, पैंतीस वाणी उचार,
समजावे तरनार, पर उपागारी है;

शरीर सुंदर आकार, सुरजसो झलकार,
 गुण है अनंत सार, दोष परिहारी है;
 केतहै तिलोकीरीख, मन, वच, काय करी;
 लली लली वारंवार, वंदना हमारी है.

श्री सिद्ध भगवंतने.

सकल करम टाळ, वशकर लीयो काल,
 नुगतिसे रह्या माल, आतमाका तारी है;
 देखत सकल भाव, हुवा है जगतराव;
 सदाहि क्षायिक भाव, भय अविकारी है;
 अचल अठल रूप, आवे नहि भवकुप,
 अनुप सरूप उप, औसी रिध धारी है;
 केतहै तिलोकीरीख, बतावो ए वास प्रभु,
 सदाहि उगत सूर, वंदना हमारी है.

श्री आचार्यजीने.

गुण है छतीश पुर, धारत धरम उर,
 मारत करम क्रूर, सुमति विचारी है;

शुद्ध सो आचार्यत, सुंदर है रूपकंत,
 भणिया सबी सिद्धांत, वांचणी सु प्यारी है;
 अधिक मधुर वेण, कोइ नहि लोपे केण,
 सकल जीवोका सेण, कीरत अपारी है;
 केत है तिलोक रीख, हितकारी देत शिख,
 ऐसे आचारज ताकु, बंदणा हमारी है,

श्री उपाध्यायजीने.

पढत अगीआरे अंग, कर्मासु करे जंग,
 पाखंडीको मान भंग, करण हुशीआरी है;
 चउदे पूर्वधर, जाणत आगम सार,
 भवियोके सुखकार, भ्रमणा निवारी है;
 पढावे भविक जण, थिर कर देत मन,
 तप करी तावे तन, ममता निवारी है;
 केत है तिलोकरीख, ज्ञान भानु पर तिख;
 ऐसे उपाध्याय ताकु, बंदणा हमारी है,

श्री साधुजीने,

आदरी संजम भार, करणी करे अपार,
 सुमति गुपतिधार विकथा निवारी है;
 जयणा करे छकाय, सावद न बोले वाय,
 बुझाइ कषाय लाय, किरिया भंडारी है;
 ज्ञान भणे आठे जाम, लेवे भगवंत नाम,
 धर्मको करे काम, ममताके मारी है;
 केत है तिलोकरीख, कर्मा को टाळे विख,
 ऐसा मुनिराज ताकु, बंदणा हमारी है.

श्री गुरु देवने.

जैसे कपडाको थान, दरजी बेतत आण,
 खंड खंड करे जाण, देत सो सुधारी है;
 काटके ज्युं सुग्रधार, हेमक कसे सुनार,
 माटीके को जो कुंभकर, पात्र करे त्त्यारी है,
 धरती के कीरसाण, लोह के लुहार जाण,

सील वाट सील/आण, घाट घडे भारी है;
 केत है तिलोकरीख, सुधारे ज्युं.गुरु.शीष,
 गुरु उपकारी, नित लीजे, बलिहारी है.
 गुरु मित्र गुरुमात, गुरु सगा गुरुतात,
 गुरु भूप गुरु भ्रात, गुरु हितकारी है;
 गुरु रवि गुरु चंद्र, गुरूपति गुरु इंद्र.
 गुरु देव दे आणंद, गुरु पद भारी है;
 गुरु दिठत ज्ञान ध्यान, गुरु देत दान मान;
 गुरु देत मोक्ष थान, सदा उपकारी है;
 केत है तिलोकरीख, भली भली दीनी शिख,
 पल पल गुरुजीके, वंदणा हमारी है.

श्री चोवीस तीर्थकरनी स्तुति.

रीखव अजीत ज्ञाननाथ, संभव अभिनंदना;
 सुमती पदम सुपार्श्व, चंदा प्रभु वंदना. १
 सुबुद्धी शीतल श्रीयेश, के वासुपुज्य ध्याइए;

विमल अनंत धर्मनाथ, शान्ति गुण गाइए. २
 कुंधु अरं च मल्लीनाथ, मुनीसूत्रत नीर्मळा,
 नेमी अरीष्ट नेमीनाथ, पार्श्व महावीर भला. ३
 ए चोवीशीना नाम, के नित्य प्रत्ये भजो;
 हिंसा जुठ अदत्त, नैथुन परिग्रह तजो. ४
 ए चोवीशीना नाम, के नित्य प्रत्ये ध्याइए;
 जन्म मरण दुख दुर, मुक्ति पद पाइए. ५
 वीशे वांदु वेरमाण, अगीयारे वांदु गणधरा;
 वे करजोडी नमुं शीश, के साचा जीनेश्वरा. ६
 कवीश्वर कहे करजोड, सूणो रे भवी प्राणीया;
 कर्महरण ए उपाय, के जगमें जाणीया. ७
 साचो ते श्री जैन धर्म, व्यसन व्यशमें बस्यो;
 चाल्यो कृकर्मनी चाल, चोर्याशीमां भटकीयो. ८
 भम्यो अनंतो काळ, के धर्म विना कुगतिमां;
 प्रभुजी करजो मुज उपर मेहर, के मेलजो मुक्तिमां

॥ चौवीस तिर्थकरना नाम. ॥

- १ श्रीरुषभदेव स्वामी. १३ वीमलनाथ स्वामी
- २ अजीतनाथ स्वामी. १४ अनंतनाथ स्वामी.
- ३ संभवनाथ स्वामी. १५ धर्मनाथ स्वामी.
- ४ अभीनंदन स्वामी. १६ शांतीनाथ स्वामी.
- ५ सुमतीनाथ स्वामी. १७ कुंथुनाथ स्वामी.
- ६ पद्म प्रभु स्वामी. १८ अरनाथ स्वामी.
- ७ सुपार्श्वनाथ स्वामी. १९ मलीनाथ स्वामी.
- ८ चंद्रप्रभु स्वामी. २० मुनीसुव्रत स्वामी.
- ९ सुवीधीनाथ स्वामी. २१ नमीनाथ स्वामी.
- १० शीतलनाथ स्वामी. २२ नेमीनाथ स्वामी.
- ११ श्रेयांसनाथ स्वामी. २३ पार्श्वनाथ स्वामी.
- १२ वासुपुज्य स्वामी. २४ महावीर स्वामी.



દરરોજ ધારવાના ૧૪ નિયમ.

સચિત્ત દ્રવ્ય વિગય તાળી, તંબોલ વથ્થ કુસુમેસુ ॥
વાહન સયણ વિલેવણ, બંધ દિસી ન્હાણ ભત્તેસુ ॥

(પૃથ્વી, અપ્, તેજઃ, વાયુ વનસ્પતિ, વ્રત, એ છકાયની રક્ષાઃ તથા અસિ, મસિ ને કૃષિ એ રીતે કુલ ૨૩ વાવતના નિયમ કરવા.)

સચિત્ત—માટી, પાળી, ફળ, કાષ્ટ, પત્ર, બીજ, તથા જે કાંઈ લીલી વસ્તુ છેદ્યાને બે ઘડી થઈ ન હોય તેનું વજન ધારવું.

દ્રવ્ય—સચિત્ત અને અચિત્ત વસ્તુ વાપરવી હોય તેની ગણત્રી કરવી.

વિગઈ—દુધ, દહીં, તેલ, ઘી, ગોઝ તથા જે કઢાઈમાં તઢાય એ છ વિગયની ગણત્રી કરવી.

વાળી—જોડા, મોજાં વગેરેનું પ્રમાણ કરવું.

(१११)

तंबोळ-पान, सोपारी, इलायची, चुरण,
लवींग आदिनुं प्रमाण करवुं.

वथथ-वस्त्र रेशमी, सुतराऊ, शण तथा
उनना वि. नुं प्रमाण करवुं.

कुसुमेसु-फुल, छोंकणी, अत्तर वगेरे
सुंघवानी चीजनुं प्रमाण करवुं.

वाहन-चरतां, फरतां के तरतां वाहनौ
जेवां के, गाडी, आगबोट वगेरेनुं प्रमाण करवुं.

सयण-बीछानुं, पाट पाटला, खुरशी
विगेरेनो नियम.

विलेवण-सुखड, चंदन वगेरे विलेपननुं प्रमाण.

बंभ-ब्रह्मचर्यनो नियम करवो.

दिसी-छ दिशाए जवाना गाडनुं प्रमाण.

न्हाण-बधे शरीरे न्हावानो नियम.

भस्मेसु-जमवानी वस्तुओनुं प्रमाण.

पृथ्वीकाय-माटी, मीठुं, खडी, रमचो
खारो वगेरेनुं प्रमाण.

अपकाय-टाढं तथा उना पाणीनुं प्रमाण.

तेउकाय-दीवा, चुला, च्यारी सगडीओ
वगेरेनुं प्रमाण.

ताउकाय-पंखा, धमणो, हींचका वगे-
रेनुं प्रमाण.

वनस्पतिकाय-शाकभाजी वगेरेनुं प्रमाण.

असि-धार, अणी ने धवाको एटले त-
खार, भालो के तोप अने बंदुक, छरी वगेरे
शस्त्रानुं प्रमाण.

मसि-स्याही, खडीया, कलम, रंगवानुं
पाणी वगेरेनी गणत्री.

कृषि-खेती, टांकां, भोंयरां, कुवा, तळाव
वाव्य, वगेरेनुं प्रमाण.

॥ श्रावकना ३ त्रण मनोर्थ विषे ॥

दोहा-आरंभ परिग्रह तजी करी, ब्यारे
थउं व्रतधारं ॥ अंत समथ आलोर्यणा, करुं
संधारो सार ॥ १ ॥

(१) पहिला मनोरथमें-श्रमणो पासक
(श्रावकजी) ऐसा चितवेके कब में, १४ प्रका-
रका बाह्य और ९ प्रकारका अभ्यंतर, परि-
ग्रहसें अथवा आरंभ समारंभसें निवर्तुंगा यह
आरंभ परिग्रह, काम, क्रोध, मद, मोह, लोभ,
विषय, कषायका बढानेवाला, दुर्गतिका दाता
मोह मत्सर राग द्वेषका मूल, धर्म ज्ञान क्रिया
क्षमा दया सत्य संतोष सम्यक्त्व संयम तप
ब्रह्मचर्य और सुमतिना नास करनेवाला, अठारे
पापका बढानेवाला, अनंत संसारमें परीभ्र-
मण करानेवाला, अक्षुब्ध, अनित्य अशाम्बता

असरण अतरण, निग्रंथ मुनियोंका निंदनीक,
ऐसे अपवीत्र आरंभ परीग्रहता में जब त्याग
करूंगा, सो दिन मेरा परम कल्याणका होवे-
गा. ॥ १ ॥

(२) दूसरा मनोरथमें—श्रावकजी ऐसा
चितवेके कब में द्रव्ये भावे मुंड हो के दस प्र-
कारका यति धर्म, नव वाड विशुद्ध ब्रह्मचर्य,
पंच महाव्रत, पांच सुमत्ति, तिन गुप्ती, सतरे
प्रकारे संयम, बारह प्रकारे तप, छकायका द-
याल, अप्रतिबंध विहारी, सर्व संग रहित, वित-
राग देवकी आज्ञानुसार चलनेवाला होउंगा.
जिस दिन निग्रंथ (साधू) का मार्ग अंगी-
कार करूंगा, वो दिन मेरा धन्य परम कल्या-
णका होवेगा. ॥ २ ॥

(३) तीसरा मनोरथमें—श्रावकजी ऐसा
चितवेके किस वखत् में सर्व पाणस्थानक, आ-

लोई, निंदी, निःशल्य, होकर सर्व जीवोंसे
 खमत खामणा कर, त्रिविध २ अठरा पापकों
 त्याग जिस शरीरकों मैंने अति प्रेमसे पोषण
 कीयो है, ऐसों शरीरसें ममत्व त्यागं छेले
 (आखरी) श्वासोश्वास तक बोंसिराके, चा-
 रही आहारकों त्यागके, तीन आराधना, चार
 सरणा सहित आयुष्य पूर्ण करूंगा संलेषणाके
 पांच अतिचार टालके, पंडित मरणसें मरूंगा
 सो दिन मेरा धन्य परम कल्याणका होवेगा.

यद ३ मनोरथ विचारता हुवा (चित-
 वन करता हुवा) प्राणी महा निर्जरा उपरा-
 जन करे, संसार परत करे, मोक्षके सन्मुख
 होवे, अनुक्रमें सर्व दुःखसें मुक्त होवे, अनंत
 अक्षय सुखकी प्राप्ती होवे. ऐसे जानकर श्रा-
 वक श्रावीकाओंको उचित है के, नित्य हमेश

यह ३ तीन मनोरथका विचार (चिंतवन) करता रहै. ॥

दोहा—तीन मनोरथ एकद्वारा, जोध्यावे नित्यप्रन ॥ सक्तिसार वरते सहु, तो पावे शिव सुख धन ॥ १ ॥

(शास्त्री लीपिमां छापेलां)

उतराध्ययनसूत्र, दशवैकालिकसूत्र, आचारंगसूत्र, बृहतकल्पसूत्र, भावाथ सहित. तेमज सिद्धांत सागर (छत्रीस थोकडा) सम-कितसार जेठमलजी माहाराजकृत, नरचंद्र जैन ज्योतीष, वैराग्यशतक भाषांतर, विगेरे पुस्तको अम्पारे त्यां मळशे. जैन बुकसेलर.

त्रीभोवनदास रुगनाथदास शाह.

नित्य निमय प्रकरण समाप्त.

